राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

वार्षिक रिपोर्ट
1974-75

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली-110016

विषय-सूची

परिशिष्ट

कृतज्ञता–ज्ञापन

परिषद् शिक्षा तथा समाज-कल्याण के केन्द्रीय मंत्री द्वारा परिषद् के कार्यों में गहरी रुचि लेने के लिए अत्यन्त कृतज्ञ है। परिषद् शिक्षा तथा समाज-कल्याण-मन्त्रालय के सभी कर्मचारियों को उनके द्वारा प्रतिवेदन वर्ष में समय-समय पर दी गयी सुविधाओं के लिए भी आभारी है। परिषद् उन सभी महानुभावों की कृतज्ञ है जो उसकी समितियों में रह कर अपना बहुमूल्य समय उसके कार्यों के लिए देते रहे हैं और अन्य कई प्रकार से भी परिषद् की सहायता करते रहे हैं। परिषद् उन सभी संगठनों और विशेषकर राज्य-शिक्षा-विभागों के प्रति भी कृतज्ञ है, जिन्होंने उसके कार्यकलापों को चालू रखने में सहयोग दिया है। परिषद् यूनेस्को, यूनीसेफ, यू० एन० डी० पी० और ब्रिटिश कौंसिल की भी कृतज्ञ है, जिन्होंने विभिन्न रूपों में सहायता प्रदान की है।

1

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
विकास और भूमिका

1.1 ऐतिहासिक विकास

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा० शै० अ० प्र० प० अथवा एन० सी० ई० आर० टी०) को वर्तमान रूप भारत में शिक्षा के ऐतिहासिक विकास के परिणामस्वरूप प्राप्त हुआ है। चूंकि इसकी स्थापना अपरिहार्य थी, इसलिए इसका संगठन और इसकी कार्यविधि राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप हुई है।

राष्ट्रीय स्तर पर निम्नलिखित संस्थानों की स्थापना की गई थी—

1. केन्द्रीय शिक्षा संस्थान (1947)।
2. केन्द्रीय पाठ्यपुस्तक अनुसंधान ब्यूरो (1954)।
3. केन्द्रीय शैक्षिक एवं व्यावसायिक मार्गदर्शन ब्यूरो (1954)।
4. माध्यमिक शिक्षा विस्तार कार्यक्रम निदेशालय (1959)।
   (मूल रूप में इसकी स्थापना 1955 में अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् के नाम से हुई थी)।
5. राष्ट्रीय बुनियादी शिक्षा संस्थान (1956)।
6. राष्ट्रीय शिक्षा आधार केन्द्र (1956)।
7. राष्ट्रीय श्रव्य-दृश्य शिक्षा संस्थान (1959)।

1960 ई० में इन संस्थानों के कार्यों की समीक्षा की गयी। फलस्वरूप यह पाया गया कि ये संस्थान इक्के-दुक्के होकर छिटपुट काम कर रहे थे, जिससे कि इनके कार्यों में कोई समन्वय न था। ये संस्थान कोई प्रभाव नहीं उत्पन्न कर पा रहे थे क्योंकि इनका आकार और अधीनस्थ कार्यालय होने का स्वरूप इनकी कार्यविधि में बाधा डाल रहा था। अतएव, यह तय किया गया कि इन सभी संस्थानों को एक ही छत्र के नीचे लाकर उन्हें पर्याप्त स्वायत्तता प्रदान कर दी जाय। इस प्रकार से 1 सितम्बर, 1961 को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का जन्म हुआ। केन्द्रीय शिक्षा संस्थान को छोड़ कर बाकी सभी संस्थानों को राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (रा० शि० सं० अथवा एन० आई० ई०) के विभागों के रूप में ले लिया गया। आगे चल कर इस संस्थान के अन्तर्गत और भी कई विभाग लिए गए।

यद्यपि केन्द्रीय शिक्षा संस्थान का अस्तित्व अध्यापकों के प्रशिक्षण महाविद्यालय के रूप में बना रहा, फिर भी राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों की स्थापना की। ये चारों क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में खोले गए ताकि इनके माध्यम से गुणी अध्यापक उपलब्ध कराए जा सकें। इन अध्यापकों की जरूरत विशेषकर बहुद्देशीय स्कूलों को थी। इन अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए एक नई पद्धति अपनायी गई थी जिसमें विषय वस्तु की योग्यता और प्रशिक्षण का कौशल समाकलित किया गया था। भोपाल के क्षे० शि० म० के अलावा शेष सभी क्षे० शि० म० 1963-64 से काम करने लगे। एक वर्ष बाद भोपाल का क्षे० शि० म० भी चालू हो गया।

जनवरी 1968 में भारत सरकार ने डॉक्टर बी० डी० नाग चौधरी की अध्यक्षता में एक दस-सदस्यीय समीक्षा समिति नियुक्त की। इस समिति को रा० शै० अ० प्र० प० के क्रिया कलापों की प्रगति की समीक्षा करनी थी, विशेषकर शैक्षिक अनुसंधान एवं विकास तथा अन्य मामलों के सन्दर्भ में। इन सदस्यों ने अनेक सिफारिशें कीं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की वर्तमान संरचना और कार्यविधि इन्हीं सिफारिशों पर आधारित है।

लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि समीक्षा समिति के आने के पूर्व राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् गति हीन होकर रह गई थी। नई जरूरतों के मुताबिक इसने अपने आपको सदैव ढाला है और उसी के मुताबिक नए-नए संस्थानों अथवा एककों को जन्म दिया है। संक्षेप में कहें, राष्ट्रीय परिषद् जन्म से आज तक सदैव ही, एक सक्रिय संस्था रही है। नई आवश्यकताओं अथवा आकांक्षाओं के प्रकाश में यह निरन्तर बढ़ती और बदलती रही है, स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक सुधार लाने की जिम्मेवारी संभालते हुए इसने अद्वितीय भूमिका निभाई है और इस प्रकार से इसने आज शीर्ष स्थान को प्राप्त कर लिया है। शिक्षा मंत्रालय का एक भाग न होते हुए भी इसने उसके व्यावसायिक अथवा तकनीकी पक्ष के रूप में काम किया है और कर रही है।

1.2 महत्त्व एवं उद्देश्य

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन अधिनियम (सन् 1860 का अधिनियम XXI) जो साहित्यिक, वैज्ञानिक और धर्मादा संस्थाओं के पंजीकरण के लिए होता है, के अन्तर्गत पंजीकृत एक संस्था है।

संस्था जिन उद्देश्यों के निमित्त बनाई गई है, वे संस्था के विवरण पत्र में गिनाए गए हैं और इस प्रकार हैं :—

1. शिक्षा के सभी क्षेत्रों में अनुसंधान करना अथवा करवाने के लिए सहायता, बढ़ावा और समन्वय प्रदान करना।

2. सेवा-पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण का, खासतौर से उच्च स्तर पर, आयोजन करना।

3. राज्य सरकारों एवं अन्य सम्बद्ध अधिकरणों के सहयोग से।

   (i) शैक्षिक अनुसंधान में लगे हुए देश के संस्थानों के लिए विस्तार सेवाओं का, अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण का और स्कूलों के लिए विस्तार सेवाओं का आयोजन करना।

   (ii) देश की शैक्षिक संस्थाओं में सुधरी हुई विधियों को फैलाना।

   (iii) शैक्षिक कार्यक्रमों का मूल्यांकन करना अथवा शैक्षिक मामलों में अध्ययन, अन्वेषण और सर्वेक्षण करना या करवाना।

4. भारत सरकार के मुख्यालय में एक राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की स्थापना करके उसे चलाना ताकि अनुसंधान का विकास हो सके, शैक्षिक प्रशासकों एवं शिक्षा से सम्बद्ध उच्च वर्ग के अधिकारियों तथा अध्यापक-प्रशिक्षकों को सेवा-पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण मिल सके और विस्तार सेवाओं का प्रबन्ध हो सके।

5. सामान्यतः अनुसंधान के विकास, प्रशिक्षण और विस्तार सेवाओं के लिए तथा विशेषकर बहुद्देशीय माध्यमिक शिक्षा की उन्नति के लिए, देश के विभिन्न भागों में क्षेत्रीय महाविद्यालयों को स्थापित करना और चलाना।

6. संस्था के उद्देश्यों-जैसे उद्देश्यों वाली संस्थाओं को पूर्णतः या आंशिक रूप से अपने में मिला लेना या उस संस्था को परिषद् की शासी निकाय की इच्छानुसार मदद करना।

7. देश के किसी भी भाग में अपने उद्देश्यों को प्राप्त कराने वाली अन्य संस्थाओं की स्थापना एवं परिचालना करना।

8. शैक्षिक अनुसंधान, प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रम से सम्बद्ध विचारों एवं सूचनाओं के निकासी-गृह के रूप में काम करना।

9. शिक्षा से सम्बद्ध मामलों में भारत सरकार, राज्य सरकारों और अन्य शैक्षिक संगठनों या संस्थाओं को सलाह प्रदान करना।

10. अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सहायता प्रदान करने वाली पुस्तकों, पत्रिकाओं और अन्य साहित्य के प्रकाशन का काम हाथ में लेना।

11. परिषद् के प्रयोजन के लिए अपेक्षित अथवा सुविधाजनक किसी भी चल अथवा अचल सम्पत्ति को उपहार, खरीद अथवा पट्टे पर प्राप्त करना। परिषद् के प्रयोजन के लिए किसी भी इमारत का निर्माण करवाना अथवा देख-रेख करना।

12. भारत सरकार के अथवा दूसरों के रुक्का, हुँडी, चैक अथवा अन्य प्रकार के विनिमेय दस्तावेजों को प्राप्त करना, हस्तांतरित करना, स्वीकार करना, मंजूर करना, बट्टा काटना अथवा उनका सौदा करना ।
13. परिषद् की निधियों को ऐसे ऋणपत्रों में लगाना या ऐसी विधि से जमा कराना जैसा कि शासी निकाय समय-समय पर तय करे और ऐसे निवेशों को जब-तब बेचना या हस्तांतरित करना ।
14. परिषद् की सभी या किसी भी सम्पत्ति को बेचना, हस्तांतरित करना, पट्टे पर देना अथवा किसी भी प्रकार से सौदा करना ।
15. शैक्षिक अनुसंधान को बढ़ावा देने, शैक्षिक कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने, शैक्षिक संस्थाओं को विस्तार सेवाओं की सुविधा प्रदान करने के अपने प्राथमिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए जिन बातों को भी परिषद् आवश्यक, प्रेरक या प्रासंगिक समझे, उन्हें करना ।

1.3 संरचना

इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए परिषद् की संरचना जिस प्रकार से का गई है वह सारिणी I में दिखाई गई है। मोटे तौर पर परिषद् के दो पक्ष या खण्ड हैं—(क) सचिवालय जो समन्वय और परिचर्या की व्यवस्था करता है और (ख) विविध संघटक या अंगीभूत जो स्कूल शिक्षा के विविध पक्षों में सुधार लाने के काम करते हैं ।

संघटकों या अंगीभूतों में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की स्थिति सबसे प्रतिष्ठा-परक है । इसकी स्थापना अनुसंधान के विकास, शैक्षिक प्रशासकों, अध्यापक-प्रशिक्षकों और शिक्षा से सम्बद्ध अन्य उच्च अधिकारियों के प्रशिक्षण एवं विस्तार सेवाओं की व्यवस्था के लिए हुई है । देश के स्कूलों की शिक्षा की गुणवत्ता के सुधार के लिए काम करने वाला यह एक प्रमुख संस्थान है । इसके अन्तर्गत अनेक विभाग हैं जिन्हें सारिणी I में शैक्षणिक विभाग, सेवा या उत्पादन विभाग और एकक के रूप में विभाजित किया गया है ।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के अन्तर्गत अंगीभूतों का जो विभाजन किया गया है, उसके अनुसार अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर एवं मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय आ जाते हैं । इन चारों का कार्य क्षेत्र अध्यापक-प्रशिक्षण का है—सेवा पूर्व और सेवाकालीन दोनों ही रूपों में । इस क्षेत्र में वे देश के लिए अगुवा बन कर काम करते हैं । उन्हीं की बनाई लीक पर देश के अन्य स्कूल चलते हैं । इन महाविद्यालयों ने अध्यापक-प्रशिक्षण में न केवल एक समाकलित मार्ग बनाया है अपितु कई ऐसे कोर्स भी चालू किए हैं, जो लीक से हट कर हैं ।

सारिणी I

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की संरचना
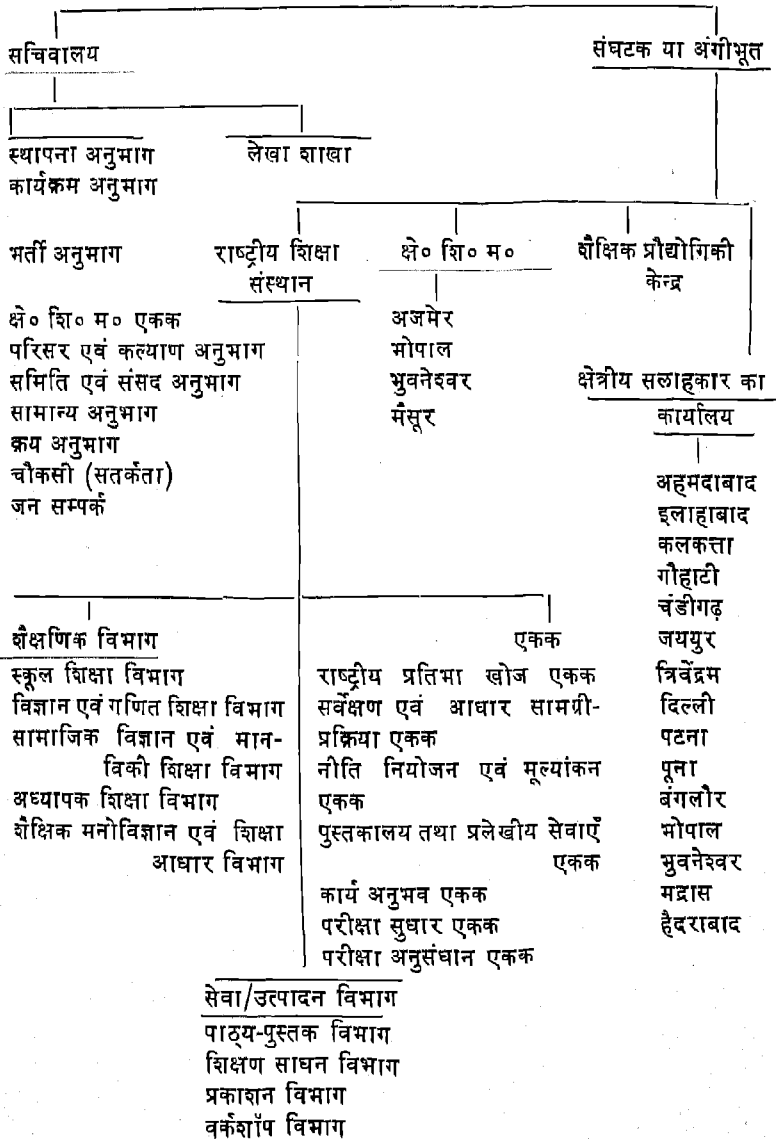
सारिणी II

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की कार्यविधि
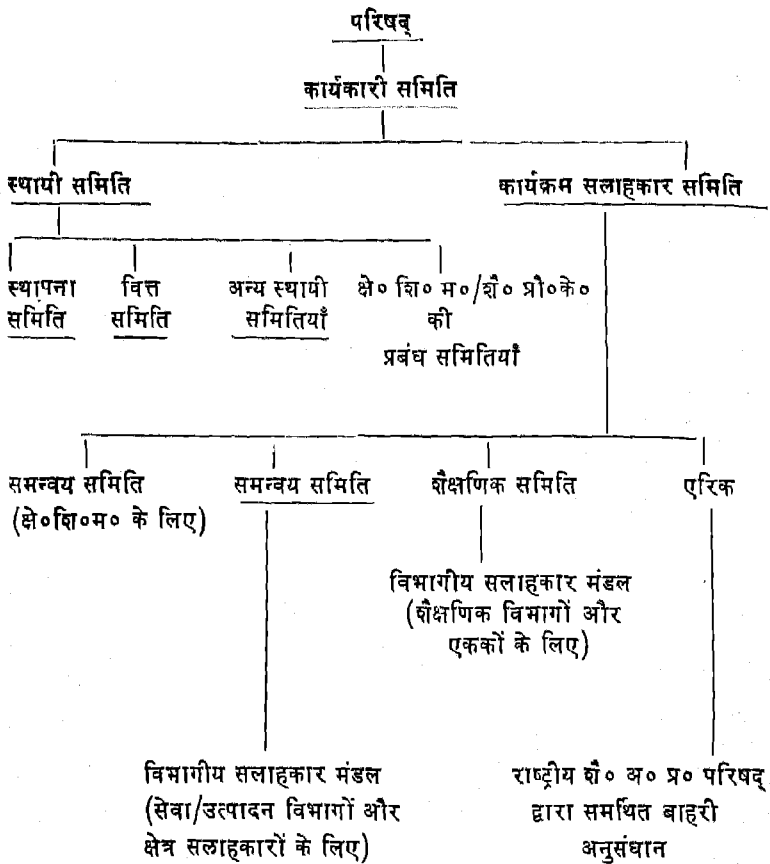
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का सम्भवतः नवीनतम संघटक शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र है। इसको क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय का दरजा मिला हुआ है। यह शैक्षिक प्रौद्योगिकी की सभी शाखाओं-प्रशाखाओं के क्षेत्र में काम कर रहा है। यह 'साइट' (सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलिविजन एक्सपेरीमेण्ट—उपग्रह शैक्षणिक दूरदर्शन प्रयोग) को भी सहयोग प्रदान कर रहा है।

वह संघटक या अंगीभूत जो राष्ट्रीय परिषद् और राज्य शैक्षिक एजेंसियों के बीच मजबूत कड़ी का काम कर रहा है, क्षेत्रीय सलाहकारों का कार्यालय है। ऐसे

कार्यालय फिलहाल पन्द्रह हैं। वे केवल राष्ट्रीय परिषद् के ही कान और आँख नहीं हैं, बल्कि इस प्रकार का जन सम्पर्क वे शिक्षा मंत्रालय के लिए भी करते हैं। वे रा० शै० अ० प्र० प० की नीतियों और कार्यक्रमों का राज्यों में प्रचार और प्रसार करते हैं, साथ ही वहाँ से मूल्यांकन और सुधार के लिए सामग्री भी भेजते हैं।

1.4 कार्यविधि

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की कार्यविधि पूर्णत: जनतन्त्रीय प्रणाली पर आधारित है। परिषद् के लिए निर्णय लेने की जो कार्यप्रणाली है उसके अन्तर्गत अनेक समितियाँ आ जाती हैं। इनको सारिणी II में दिखाया गया है।

सर्वोच्च निकाय 'परिषद्' है जिसके अध्यक्ष केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री हैं और सभी राज्यों/संघ क्षेत्रों के शिक्षा मन्त्री जिसके सदस्य हैं। इनके अतिरिक्त चार उपकुलपति और बारह अन्य व्यक्ति भी इसके मनोनीत सदस्य होते हैं। इन बारह लोगों में से कम से कम चार सदस्य स्कूल के अध्यापक होते हैं। परिषद् वर्ष में कम से कम एक बार अवश्य अपनी बैठक बुलाती है।

रा० शै० अ० प्र० प० के मामलों का प्रशासन एक छोटी शासी निकाय द्वारा होता है जिसे कार्यकारी समिति कहते हैं। इस में लगभग बारह सदस्य होते हैं जिनमें से तीन संकाय के सदस्यों में से लिए जाते हैं और चार शिक्षाविद् होते हैं (इनमें से दो स्कूल के अध्यापक होते हैं)। परिषद् का अध्यक्ष ही कार्यकारी समिति का भी अध्यक्ष होता है। संस्था के विवरण पत्र में दिए गए नियम के अनुसार, परिषद् के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए इस समिति को बड़े अधिकार मिले हुए हैं। यह समिति सामान्यतया स्थायी समितियों और कार्यक्रम सलाहकार समिति के माध्यम से अपने कार्य करती है। यह वर्ष में कम से कम दो बार अपनी बैठकें करती है।

स्थायी समितियों में से एक महत्त्वपूर्ण समिति स्थापना समिति है। यह कार्यकारी समिति के सम्मुख उन सामान्य सिद्धांतों और विधियों की सिफारिश करती है जिनके आधार पर नियुक्ति, भर्ती, तबादले, पदोन्नति आदि को किया जाता है। इसमें दो ऐसे सदस्यों का प्रावधान भी होता है जो चुने जाते हैं। इन दो में से एक शैक्षणिक प्रतिनिधि होता है, दूसरा इतर शैक्षणिक प्रतिनिधि। वर्ष में इस समिति की सामान्यतया चार बैठकें होती हैं।

दूसरी स्थायी समिति को वित्त समिति कहते हैं। यह कार्यकारी समिति को बजट अनुमान और अतिरिक्त व्यय के प्रस्तावों जैसे सभी वित्तीय मामलों में सलाह देती है।

इसके बाद प्रबन्ध समितियाँ हैं जो कार्यकारी समिति को क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों और शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र के बारे में सलाह देती हैं। इनकी बैठकें

साल में दो बार होती है। इनकी कार्यवाहियों की रिपार्ट भी कार्यक्रम सलाहकार समिति के सम्मुख रखी जाती है।

कार्यकारी समिति कभी-कभी अन्य विविध स्थायी समितियों की नियुक्ति भी कर सकती है। उदाहरण के लिए एक भवन एवं निर्माण समिति है, जो कार्यकारी समिति को इमारतें बनाने जैसे कामों के बारे में सलाह देती है।

स्थायी समितियां प्रशासकीय और वित्तीय मामलों को देखती हैं और अनुसन्धान, प्रशिक्षण तथा विस्तार सेवाओं के बारे में शैक्षणिक निर्णय लेने के लिए परिषद् के पास कार्यक्रम सलाहकार समिति है। इसके अध्यक्ष रा० शै० अ० प्र० प० के निदेशक महोदय होते हैं। कार्यक्रम सलाहकार समिति में रा० शै० अ० प्र० प० के निदेशक के अलावा निम्नलिखित सदस्य और होते हैं—परिषद् के सह निदेशक, विश्वविद्यालयों के पांच प्रोफेसर, राज्य शिक्षा संस्थानों के पाँच निदेशक, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के हर विभाग से दो-दो प्रतिनिधि। यह समिति वर्ष में दो बैठकें करती है। परिषद् के विभिन्न कार्यक्रमों की प्राथमिकता के बारे में यही तय करती है और उन मार्गदर्शी रेखाओं को बनाती है जिन पर परिषद् को कार्य करना है।

शैक्षिक अनुसन्धान और नवाचार समिति डीन (अनुसंधान) की अध्यक्षता में निश्चित अनुसन्धान कार्यक्रम पर विचार कर उसे स्वीकृत करती है। रा० शै० अ० प्र० प० के अंगीभूतों के अनुसंधान कार्यक्रमों के अलावा यह बाहर के अनुसंधान को भी जिसको कि परिषद् की सहायता मिली हुई है, नियुक्त करती है, शुरू कराती है और स्वीकृत करती है। इस समिति में विशेषज्ञ तो होते ही हैं, राष्ट्रीय परिषद् के विभिन्न अंगीभूतों के काफी प्रतिनिधि भी होते हैं।

शैक्षणिक समिति डीन (शैक्षणिक) की अध्यक्षता में शैक्षणिक विभागों और एककों के विकासात्मक और प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर विचार करती है और उनमें समन्वय स्थापित करती है। इस समिति के सदस्य सभी प्रोफेसर, विभागों के अध्यक्ष और हर शैक्षणिक विभाग या एकक के एक-एक चुने हुए प्रतिनिधि होते हैं।

समन्वय समिति, जिसके अध्यक्ष डीन (समन्वय) होते हैं, सेवा और उत्पादन विभागों, और क्षेत्रीय सलाहकारों के सभी अनुसंधानेतर कार्यक्रमों पर विचार करती है और उनमें समन्वय बनाए रखती है। इस समिति में प्रोफेसर व ऊँची श्रेणी के सभी कर्मचारी तथा सेवा और उत्पादन विभागों से एक-एक चुने हुए प्रतिनिधि होते हैं।

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के लिए भी एक समन्वय समिति है। इसके प्रमुख भी डीन (शैक्षणिक) हैं। इसकी स्थापना इसलिए हुई है कि सभी क्षेत्रीय महाविद्यालयों के मध्य और क्षे० शि० म० तथा परिषद् के अन्य विभागों के मध्य सहयोग और समन्वय बना रहे।

कार्यक्रमों पर सबसे पहले राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागीय सलाहकार मण्डल अपनी स्वीकृति प्रदान करते हैं। हर विभाग के लिए अलग-अलग विभागीय सलाहकार मण्डल होते हैं। इस विभागीय सलाहकार मण्डल में सम्बद्ध क्षेत्र के पाँच विशेषज्ञ होते हैं और उस विभाग का हर शैक्षणिक कर्मचारी उसका सदस्य होता है। किसी भी सदस्य द्वारा सोचा गया कोई भी कार्यक्रम सबसे पहले विभागीय सलाहकार मण्डल की मंजूरी पाएगा, तभी वह एरिक/शैक्षणिक समिति/समन्वय समिति के सम्मुख रखा जाएगा। क्षेत्रीय सलाहकारों के लिए भी एक सलाहकार मण्डल है।

1.5 कर्मचारी

इस वर्ष प्रोफेसर रईस अहमद परिषद् के निदेशक बने रहे। उनकी सहायता करने वाले अन्य अधिकारी थे—प्रोफेसर शिव के० मित्र (सह निदेशक) और श्रीमती जे० अंजनी दयानन्द आई० ए० एस० (सचिव)। प्रोफेसर पी० के० राय और प्रोफेसर रामगोपाल मिश्र ने वर्ष के प्रारम्भ में क्रमशः डीन (शैक्षणिक) और डीन (समन्वय) के पद संभाले। परिषद् के कर्मचारियों की कुल संख्या 821 (शैक्षणिक) और 1569 (अशैक्षणिक) है।

इस वर्ष के दौरान खाली पड़ीं उन बहुत-सी जगहों के लिए लोगों की भर्ती की गयी जिनके लिए विज्ञापन निकल चुके थे और जिनके इंटव्यू भी लिए जा चुके थे जैसा कि पैरा 1.6.1 में लिखा मिलेगा।

परिषद् के अनेक अधिकारियों को अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, कर्मशालाओं अथवा बैठकों में सम्मिलित होने के लिए भेजा गया। इसी प्रकार अनेक अधिकारियों को प्रशिक्षण के लिए विदेश भेजा गया। कुछ अधिकारी विदेशों में विशेष कार्यों से भी भेजे गए। परिशिष्ट 'ङ' में विस्तृत सूचना दी गयी है।

परिषद् के 17 कर्मचारियों ने इस वर्ष विभिन्न विश्वविद्यालयों के पीएच० डी० के शोधकर्त्ताओं को गाइड किया। सात कर्मचारियों ने डॉक्टरेट पूरी कर ली। शैक्षणिक कर्मचारियों में से 36 ने पीएच० डी० डिग्री के लिए अपने को नामांकित कराया। कर्मचारियों की अनुसंधान गतिविधियों के बारे में परिशिष्ट 'च' में लिखा मिलेगा।

प्रतिवेदन वर्ष में परिषद् के निम्नलिखित कर्मचारी अपने कार्यकाल में ही दिवंगत हो गए :

(1) श्री एस० एल० अहलूवालिया, क्षेत्र सलाहकार
(2) श्री ए० के० घोष, लेक्चरार
(3) श्री मायाराम काला, कनिष्ठ टेक्नीशियन
(4) श्री बचन लाल, चपरासी
(5) श्री के० पी० सिंह, चौकीदार

1.6 इस वर्ष के दौरान सुधार एवं कल्याण सम्बन्धी परिषद् की गतिविधियों का प्रशासनिक पक्ष

परिषद् के विविध संघटक एककों की कार्यविधि में सुधार लाने के निमित्त, वर्ष के दौरान अनेक प्रशासनिक काम किए गए। उम्मीद की जानी चाहिए कि इनसे विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों में बेहतर समन्वय हो सकेगा और निर्णय लेने में सुभीता रहेगा। ये काम निम्नलिखित हैं :

1.6.1 फरवरी 1974 में कार्यकारी समिति द्वारा किए गए निश्चय के अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान का पुनर्गठन किया गया। इस पुनर्गठन के अनुसार रा० शि० सं० के विभागों को पाँच शैक्षणिक विभागों, चार सेवा/उत्पादन विभागों और पांच एककों में बाँट दिया गया है। विभिन्न शैक्षणिक समितियाँ बनाई गई हैं जिनकी अध्यक्षता के लिए तीन डीन निर्धारित किए गए हैं :

डीन (अनुसंधान)—शैक्षणिक अनुसंधान एवं नवाचार समिति।
डीन (शैक्षणिक)—शैक्षणिक समिति और क्षे० शि० म० की समन्वय समिति।
डीन (समन्वय)—समन्वय समिति।

प्रत्येक विभाग का एक सलाहकार मंडल होगा जो विभाग की शैक्षणिक गतिविधियों के बारे में विचार करेगा और योजनाएँ बनाएगा।

1.6.2 शैक्षणिक कर्मचारियों का वेतनमान 1-1-73 से संशोधित कर दिया गया है। यह संशोधन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुसार किया गया है। अ-शैक्षणिक कर्मचारियों के वेतन-मान भी इसी तरह से संशोधित किए गए हैं। यह संशोधन तीसरे वेतन आयोग की रिपोर्ट के अनुसार किया गया है। 13 व्यावसायिक सहायकों को स्नातकोत्तर अध्यापकों (पी० जी० टी०) का वेतनमान दिया गया। वरिष्ठ और कनिष्ठ फेलोशिप की आय का मान भी संशोधित कर दिया गया है जो अब क्रमश: 600 रुपए और 400 रुपए हो गया है।

1.6.3 बहुत सी नौकरियों के पद खाली पड़े थे। उन्हें इस वर्ष इस प्रकार भर लिया गया है—

प्रिंसिपल—	3
प्रोफेसर—	20
रीडर—	67
लेक्चरार—	94
अन्य तकनीकी कर्मचारी—	29
प्रशासकीय और अ-शैक्षणिक कर्मचारी—	177

इन पदों के भर जाने से विभागों और महाविद्यालयों में काम की गति काफी बढ़ गयी है।

1.6 4 परिषद् की स्थापना समिति में प्रतिनिधित्व के लिए शैक्षणिक एवं अ-शैक्षणिक कर्मचारियों की ओर से एक-एक सदस्य के चुनाव के लिए व्यवस्था कर ली गई है।

1.6.5 क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों को स्वायत्तता प्रदान करने के प्रस्ताव को सैद्धान्तिक रूप में मान लिया गया है।

1.6.6 परिषद् के अ-शैक्षणिक कर्मचारियों के सेवा-कालीन प्रशिक्षण की गहन योजना को बना लिया गया है। विभिन्न स्तरों के कोर्स भी बना लिए गए हैं जिनके अनुसार अनुभाग अधिकारियों, विशेष सहायकों, अधीक्षकों, व्यक्तिगत सहायकों, सहायकों, आशुलिपिकों, उच्च श्रेणी लिपिकों और निम्न श्रेणी लिपिकों के वास्ते प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया भी गया। कर्मचारियों ने इस कार्यक्रम को खूब पसन्द किया इसलिए इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को जारी रखा जाएगा।

1.6.7 परिषद् के कर्मचारियों की आवास समस्या को बहुत कुछ ठीक कर लिया गया है। इसके लिए परिसर स्थित विभिन्न श्रेणी के 137 क्वाटरों को विभिन्न कर्मचारियों को दे दिया गया। परिसर के सामने स्थित एम० एम० टी० सी० के 164 क्वाटरों को किराए पर लेकर भी विभिन्न श्रेणी के कर्मचारियों को दे दिया गया। इससे परिषद् के काफी कर्मचारियों को राहत मिली है।

परिसर में कर्मचारियों के परिवारों के आ बसने से यहाँ केन्द्रीय सरकारी उपभोक्ता सहकारी भण्डार की एक दुकान भी खुल गयी है।

दफ्तर और रिहाइशी मकानों के बीच में बच्चों के लिए एक पार्क भी बना दिया गया है।

एक चिकित्सक की नियुक्ति करके परिसर में रहने वाले कर्मचारियों को चिकित्सा सुविधा भी प्रदान की गयी है। यह चिकित्सा अधिकारी परिसर की डिस्पेंसरी में दफ्तर के वक्त में कर्मचारियों की चिकित्सा सम्बन्धी तकलीफों को देखते सुनते हैं।

भुवनेश्वर के क्षे० शि० म० में सोलह रिहाइशी क्वाटरों का निर्माण पूरा हो गया है। भोपाल के क्षे० शि० म० में विभिन्न श्रेणियों के 33 क्वाटर बना लिए गए हैं। भोपाल में ही दो-कमरे वाले 40 क्वाटरों के निर्माण के लिए आवश्यक धन मध्यप्रदेश आवास एवं विकास परिषद् के पास जमा करा दिया गया है। शीघ्र ही निर्माण कार्य शुरू हो जाएगा।

1.7 भारतीय शिक्षा में परिषद् की भूमिका

भारत की स्कूली शिक्षा में रा० शै० अ० प्र० प० को एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण

भूमिका निभाती है। इसका महत्त्व और संगठन न केवल भारतीय संविधान के अनु-रूप है बल्कि यह भारतीय अर्थव्यवस्था में भी बिल्कुल फिट है। इसके अलावा वर्षों के अनुभव के साथ-साथ इसने अपना महत्त्व और दरजा भी बढ़ा लिया है। आज यह स्कूली शिक्षा के विविध क्षेत्रों में विशिष्टता हासिल कर चुकी है।

वर्तमान संधिकाल में भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय परिषद् की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो उठी है। अभी तक पंचवर्षीय योजनाओं का ध्यान शिक्षा के परिमाणात्मक विस्तार की ओर ही था। अब शिक्षा के गुणात्मक सुधार की ओर ध्यान गया है। यह ठीक ही है। इस गुणात्मक सुधार के दो पक्ष हैं : एक तो प्रशास-कीय-सह-वित्तीय और शिक्षा-शास्त्रीय (जिसमें पाठ्यचर्या नवीनीकरण भी शामिल है) परिवर्तन। दूसरा सुधरी हुई शिक्षण प्रणालियों का विकीर्णन एवं शिक्षण साधनों आदि का उत्पादन। इस दूसरे क्षेत्र में राष्ट्रीय परिषद् जैसी तकनीकी और मजबूत संस्थाओं की आवश्यकता है ताकि काम तेजी और जोशो खरोश के साथ चलता रहे।

गुणात्मक सुधार के लिए शैक्षिक अनुसंधान अपरिहार्य है। यह परिषद् के प्रमुख उद्देश्यों में से है। परिषद् ने इस क्षेत्र में उल्लेखनीय काम किया है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों में किए जाने वाले अनुसन्धान के अलावा भी परिषद् ने बाहर के अनुसन्धान को बढ़ावा दिया है। इसके लिए परिषद् की अनुदान योजनाएँ हैं जो बाहर के शोधकर्त्ताओं को वित्तीय सहायता प्रदान करती हैं। इस क्षेत्र में परि-षद् का महत्त्व इसी से जान लेना चाहिए कि अब परिषद् ने अपने यहाँ और बाहर के शोध अनुसन्धान को बढ़ावा देने के लिए एरिक के माध्यम से एक गहन योजना बनायी है। 1974-75 के दौरान जिन शोध परियोजनाओं को परिषद् ने स्वीकृत किया है और वित्त दिया है, उनकी सूची सारिणी III में दी गयी है। आगे के अनुभागों में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् की अनुसन्धान योजनाओं के बारे में यथा स्थान लिखा गया है।

शैक्षिक विकास के क्षेत्र में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् का विशिष्ट स्थान है। परिषद् ने आदर्श पाठ्य पुस्तकों का निर्माण किया है। मूल प्रत्ययात्मक साहित्य का विकास किया है और विज्ञान किटों का उत्पादन किया है। इस क्षेत्र में परिषद् का योगदान अक्षुण्ण है। वास्तव में नए पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में तो परिषद् ने अभूतपूर्व भूमिका निभाई है।

राष्ट्रीय परिषद् नए परिवर्तनों को अध्यापकों तक प्रशिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रमों द्वारा पहुँचाती है। ये कार्यक्रम किसी भी प्रकार से कम महत्त्व के नहीं हैं। परिषद् के विभिन्न विभागों द्वारा प्रशिक्षण तथा विस्तार और अनुसन्धान तथा विकास के क्षेत्र में किए गए कामों का विवरण आगे के पृष्ठों में यथा स्थान मिलेगा।

स्कूली शिक्षा के सुधार का काम परिषद् स्वयं तो करती ही है, साथ ही वह देश के उन पेशेवर शैक्षिक संगठनों की मदद भी करती है जो स्कूली शिक्षा से संबद्ध कामों को हाथ में लेते हैं। वित्तीय सहायता के इस काम को परिषद् पिछले कई वर्षों से करती आ रही है। 1974-75 के दौरान परिषद् द्वारा विभिन्न पेशेवर संगठनों को प्रदान की गयी वित्तीय सहायता का विवरण सारिणी IV में मिलेगा।

परिषद् अपने विभिन्न विभागों और क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के माध्यम से उन विदेशी व्यक्तियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था करती है जो विभिन्न द्विपक्षी सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अन्तर्गत मन्त्रालय द्वारा अथवा यूनेस्को द्वारा प्रवर्तित होते हैं। समय-समय पर यह अपने अधिकारियों को विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए भेजती भी है। परिषद् की शैक्षिक गतिविधियों को देखने के लिए विदेशी अतिथि एवं शिष्टमण्डल प्रायः ही यहाँ आया करते हैं। इस प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान के विस्तृत विवरण परिशिष्ट 'घ' में मिलेंगे।

सारिणी III

अनुमोदित अनुसन्धान परियोजनाओं के लिए सहायतानुदान

क्रम संख्या	अनुसन्धान परियोजना का नाम	दी गई अनुदान की राशि
1.	बोर्ड और विश्वविद्यालयी परीक्षा की प्रभविष्णुता और उनके सुधार के लिए सुझाव (आई० आई० टी०, खड़गपुर)	1875 रुपए
2.	विश्वविद्यालयी विद्यार्थियों के जॉब ओरिएंटेशन की सहसम्बद्धता की एक जाँच (राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर)	1559·93 रुपए
3.	कक्षा में शिक्षण-योग्यता पर कुछ समाज शास्त्रीय कारकों का प्रभाव (गवर्नमेण्ट ट्रेनिंग कालेज, त्रिचूर)	1175 रुपए
4.	भाषिक गलतियों का निदान और हिन्दी में प्रतिकारी प्रशिक्षण का एक कार्यक्रम (वनस्थली विद्यापीठ शिक्षा महाविद्यालय), (राजस्थान)	9000 रुपए
5.	इण्डियन पब्लिक स्कूल्स—वृद्धि और विकास का एक अध्ययन, विशेषकर उनके द्वारा प्रदत्त नेतृत्व के सन्दर्भ में (लखनऊ विश्वविद्यालय)	5000 रुपए

6. मूल भाषियों की लिखित हिन्दी में उपलब्ध मानक हिंदी से अपसरण'''(रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर) — 5000 रुपए / 9000 रुपए
7. द्रविड भाषाओं के लिए बनी समस्रोतीय भाषा प्रणाली का विस्तार और परीक्षण (केरल विश्वविद्यालय) — 38200 रुपए
8. भाषिक गलतियों का निदान और संस्कृत शिक्षण में प्रतिकारी कार्यक्रम (इंस्टीच्यूट ऑफ हायर स्टडीज एण्ड रिसर्च, जयपुर) — 5000 रुपए
9. पश्चिम बंगाल में प्राथमिक शिक्षा का खर्च (कलकत्ता विश्वविद्यालय) — 29500 रुपए
10. पश्चिम बंगाल के प्राथमिक स्कूलों एवं उनके शिक्षकों की सर्वे रिपोर्ट का मुद्रण (कलकत्ता विश्वविद्यालय) — 1000 रुपए
11. राजस्थान में प्राथमिक स्तर पर सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभविष्णुता का एक अध्ययन (राज्य शिक्षा संस्थान, उदयपुर) — 10000 रुपए
12. कश्मीरी में शैक्षिक शब्द शक्ति (कश्मीर विश्वविद्यालय) — 16000 रुपए
13. नवाचार एवं परिवर्तन तथा उनकी उपयोगिता का एक गहन अध्ययन (कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र) — 4000 रुपए
14. स्कूल पर्यावरण के मनोवैज्ञानिक लक्षण (जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर) — 1000 रुपए
15. प्रोडक्शन एण्ड मेडिएशन डेफिशिएंसी इन चिल्ड्रेन प्री रिकाल (बड़ौदा विश्वविद्यालय) — 1850 रुपए
16. स्टडीज़ ऑफ पैटर्न्स ऑफ पेरेंटल प्रिफेरेंसेज़ इन रिलेशन टु ऐडोलेसेंट (माडेल इंस्टीच्यूट ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, जम्मू) — 7000 रुपए
17. द्वितीय भाषा के रूप में बाङला शिक्षण — 10500 रुपए
18. विज्ञान शिक्षण में अन्वेषण प्रधान अप्रोच का परिचय (विज्ञान शिक्षा केन्द्र, अटारा) — 16850 रुपए
19. ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ एफीकेसी ऑफ वेरियस मेथड्स ऑफ सुपरविजन (राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, अजमेर) — 7000 रुपए

20.	अंतर क्रिया द्वारा सेवापूर्व और सेवाकालीन शिक्षक व्यवहार का विश्लेषण (हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला)	6000 रुपए
21.	नैदानिक परीक्षणों का निर्माण और मानकीकरण (रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर)	8750 रुपए
22.	राजस्थान में वाणिज्य शिक्षण का मूल्यांकन (के० एल० वी० राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा)	877.25 रुपए
23.	नव गणित के पाठ्यक्रम का मूल्यांकन (जादवपुर विश्वविद्यालय, कलकत्ता)	4400 रुपए
	कुल जोड़—	195537.18 रुपए

सारिणी IV

1974-75 के दौरान व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों को दिया गया अनुदान

क्रम संख्या	व्यावसायिक संगठन	रकम
1.	फोरम आफ एजुकेशन, नई दिल्ली	1000 रुपए
2.	वर्ल्ड एजुकेशन फेलोशिप इण्टर नेशनल (इण्डियन सेक्शन), बम्बई	4000 रुपए
3.	केरल प्राइवेट सेकण्डरी स्कूल हेडमास्टर्स एसोसिएशन, त्रिवेंद्रम	1000 रुपए
4.	आल इण्डिया फेडेरेशन आफ एजुकेशनल एसोसिएशन्स, नई दिल्ली	3000 रुपए
5.	वेधला (ऐस्ट्रोनामिकल आब्जर्वेटरी) अहमदाबाद	8000 रुपए
6.	ऐसोसिएशन फार द प्रोमोशन आफ साइंस एजुकेशन, मद्रास	3500 रुपए
7.	इंग्लिश लैंगुएज टीचर्स ऐसोसिएशन आफ इण्डिया, मद्रास	5000 रुपए
8.	इण्डियन ऐसोसिएशन फार प्रिस्कूल एजूकेशन, नई दिल्ली	4000 रुपए

9.	आल इण्डिया साइंस टीचर्स एसोसिएशन, नई दिल्ली	4000 रुपए
10.	ऐसोसिएशन आफ ज्योग्राफी टीचर्स आफ इण्डिया, मद्रास	4000 रुपए
11.	इण्डियन ऐसोसिएशन फार प्रोग्राम्ड लर्निंग, नई दिल्ली (बाम्बे चैप्टर)	4500 रुपए
12.	आल इण्डिया एजुकेशनल एण्ड वोकेशनल गाइडेंस एसोसिएशन नई दिल्ली	900 रुपए
13.	ऐसोसिएशन आफ मैथेमेटिक्स टीचर्स आफ इण्डिया मद्रास	6500 रुपए
14.	बंगीय विज्ञान परिषद्, कलकत्ता	3000 रुपए
15.	इण्डियन नेशनल साइंस ऐकेडेमी, नई दिल्ली	5000 रुपए
16.	नेशनल पेरेण्ट टीचर ऐसोसिएशन आफ इण्डिया, नई दिल्ली	5400 रुपए
17.	ऐसोसिएशन फार इम्प्रूवमेंट आफ मैथेमेटिक्स टीचिंग, कलकत्ता	3000 रुपए
18.	इण्डिया रीडिंग ऐसोसिएशन, नई दिल्ली	2295 रुपए
	कुल जोड़	68095 रुपए

2

1974-75 के महत्त्वपूर्ण कार्य

परिषद् राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों/एककों, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों और क्षेत्रीय सलाहकारों के कार्यालयों जैसे अपने विभिन्न संघटकों के माध्यम से कार्य करती है। इन विभिन्न विभागों की गतिविधियों की रिपोर्ट बाद में दी जाएगी। यहाँ पर तो सम्पूर्ण परिषद् के मुख्य कार्यक्रमों का एक संक्षिप्त विवरण मात्र दे दिया जाएगा।

2.1 परिषद् की सामान्य गतिविधियाँ

2.1.1 स्कूलों की 10+2 शैली के लिए पाठ्यक्रम-विकास

अपनी स्थापना के समय से ही परिषद् का एक बड़ा, निरन्तर गतिशील कार्य-कलाप पाठ्यक्रम-विकास का रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के सम्बद्ध विभागों द्वारा विभिन्न स्कूल-विषयों में बहुत कुछ कार्य किया गया है। चूँकि यह काम अधिकतर स्वतन्त्र रूप से किया जाता रहा, इसलिए इस बात की जरूरत बराबर महसूस की जाती रही कि सम्पूर्ण स्कूल स्तर के लिए एक समन्वित और संयुक्त पाठ्यक्रम तैयार किया जाए। स्कूल शिक्षा के लिए एक 10+2 शैली के कार्यान्वयन के प्रस्ताव के साथ एक विशेषज्ञ समिति बनायी गई ताकि दस-वर्षीय स्कूल के पाठ्यक्रम के लिए एक एप्रोच पेपर तैयार हो सके। इस समिति को स्कूल स्तर के लिए एक समाकलित पाठ्यक्रम तैयार करने और विभिन्न कक्षाओं को पढ़ाने के लिए विषय-वस्तु और पहुँच के निमित्त मार्गदर्शी रेखाएँ निर्धारित करने का काम सौंपा गया। जब यह समिति एप्रोच पेपर बना लेगी तो उसे एक राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत किया जाएगा। उस समिति द्वारा की गयी सिफारिशों के आधार पर इस एप्रोच पेपर को राज्यों में भेजा जाएगा ताकि राज्य उसे अनुकूलित कर सकें। यह एप्रोच पेपर मूल्यों एवं प्रवृत्तियों की जड़ें जमाने, सामाजिक जागरूकता तथा जिम्मेवारी की भावना, अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व, राष्ट्रीय एकता, समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता की भावनाएँ जगाने पर बल देगा। यह भी प्रस्तावित है कि स्कूल शिक्षा के पूरे दस वर्षों भर कार्य अनुभव को शामिल किया जाए। स्कूली पढ़ाई के सभी दस वर्षों में विज्ञान की पाठ्यचर्या समाज की स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की आवश्यकता, जनसंख्या शिक्षण तथा पर्यावरणीय अध्ययन से सम्बन्धित होगी।

परिषद् ने विभिन्न विज्ञान विषयों, गणित और सामाजिक विज्ञानों में कक्षा 9 के लिए पाठ्य-पुस्तकें बना ली हैं। यह काम इसी वर्ष में हुआ है। इन पुस्तकों को सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सेकंडरी एजूकेशन ने नई नवीं कक्षा के वास्ते स्वीकार लिया है। यह नई नवीं कक्षा 10+2 शैली के अन्तर्गत होगी। विभिन्न विषयों के अन्तर्गत कक्षा 10 की पाठ्य पुस्तकें बनाने का काम काफी सन्तोषजनक रीति में हो रहा है।

2.1.2 प्राथमिक शिक्षा का सुधार

प्राथमिक शिक्षा की समस्या को हल करने का प्रयत्न परिषद् कई प्रकार से कर रही है। ये हैं—प्राथमिक शिक्षा के व्यापकीकरण के लिए राज्यों की व्यावसायिक शिक्षण संस्थाओं का सहयोग प्राप्त करना, अनौपचारिक शिक्षा के कार्यक्रमों के विकास के लिए यूनिसेफ के माध्यम से नवाचार वाले पाठ्यक्रमों को बढ़ावा देना जिनके द्वारा उन बच्चों की शैक्षिक जरूरतों को पूरा किया जाएगा जो स्कूल में कुछ ही वर्षों तक रह पाते हैं। केन्द्रीय प्राथमिक पाठ्यक्रम विकास एकक स्थापित किया जा चुका है जो समन्वयन एवं टेक्निकल एजेन्सी के रूप में काम करेगा ताकि पाठ्यक्रम नवीनीकरण की मार्गदर्शी रेखाएँ बनाई जा सकें, राष्ट्रीय सम्मेलन और संगोष्ठियाँ की जा सकें, राज्य स्तर पर राज्य पाठ्यक्रम एककों के माध्यम से शिक्षण सामग्री विकसित की जा सके और प्रयोगों द्वारा प्रोटोटाइपों का निर्माण हो सके। दूसरी योजना जो ली गयी है, समुदाय शिक्षा और प्रतिभागिता में विकासात्मक गतिविधियों की है। समुदाय प्राथमिक केन्द्रों के माध्यम से एक नई शैक्षिक अप्रोच जो समुदाय पर आधारित होगी, जाँची जाएगी। नए प्रकार की शैक्षिक गतिविधियाँ बनायी जा रही हैं ताकि उन लोगों के लिए, जो किसी भी प्रकार की औपचारिक शिक्षा से वंचित रह गए हैं, व्यवहार्य रास्ते निकल सकें। आदिम जाति के बच्चों के लिए अथवा गाँव के या बड़े शहरों के पिछड़े वर्ग के बच्चों के लिए या सुस्त बच्चों के लिए या लड़कियों के लिए परिषद् के पास विशेष कार्यक्रम है। परिषद् को राज्यों की मदद इस बात के लिए मिलने लगी है कि नए पाठ्यक्रम को प्रायोगिक तौर से पाँचवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान उनके यहाँ लागू किया जाए।

2.1.3 शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र

पहले जिस शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र की स्थापना हो चुकी है, उसे अब और सशक्त बना दिया गया है। इस वर्ष के दौरान इसने साइट के कार्यक्रमों में हिस्सा लिया है। साइट के कार्यक्रम छः राज्यों के लिए होते हैं जिनमें 2400 स्कूल आ जाते हैं। इसने विभिन्न वर्ग के कर्मचारियों के निमित्त अनुकूलन कोर्स भी चलाए हैं। इन कर्मचारियों में प्रशासक, पांडुलिपि लेखक और प्राथमिक स्कूल शिक्षक भी शामिल हैं।

2.1.4 शिक्षकों के लिए सेवापूर्व और सेवाकालीन शिक्षा

सभी क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में चार-वर्षीय बी० ए०, बी० एड० और

बी० एस-सी०, बी० एड० तथा एक-वर्षीय बी० एड० व एम० एड० कार्स चलते रहे। मैसूर के क्षे० शि० म० में स्नातकोत्तर कक्षाएँ प्रारम्भ की गईं। जो नए कोर्स शुरू किए गए वे हैं गणित, रसायन विज्ञान और भौतिकी में एम० एस-सी० एड० जो मैसूर विश्वविद्यालय के हैं।

2.1.5 यूनेस्को के साथ सहयोग

बी० एड० के लिए ग्रीष्म संस्थान-सह-पत्राचार पाठ्यक्रम चारों क्षे० शि० म० में दो और वर्षों के लिए अर्थात 1976-77 तक के लिए चलते रहे।

विभिन्न प्रकार के अध्ययनों के लिए यूनेस्को के सहयोग से राष्ट्रीय केन्द्रों में से एक के रूप में परिषद् को मान्यता मिल गयी है। वर्ष के दौरान परिषद् ने निम्न-लिखित तीन अध्ययनों को हाथ में लिया—

1. शैक्षिक नवाचार की राष्ट्रीय सूची और शैक्षिक नवाचार की राष्ट्रीय संगोष्ठी।
2. एशिया में पाठ्यक्रम-विकास की केस स्टडीज़।
3. जनसंख्या शिक्षा पर राष्ट्रीय संदर्भ ग्रंथ सूची।

यूनेस्को के साथ हुए समझौते के अनुसार इन्हें पूरा किया जा चुका है और प्रकाशन के लिए बैंकाक के यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय में भेजा जा चुका है। दो अन्य अध्ययन भी तैयार हो रहे हैं जिनके शीर्षक हैं—"जनसंख्या शिक्षा में सहयोगी विकासात्मक अधिगम एकक तथा जनसंख्या शिक्षा में राष्ट्रीय स्रोत पुस्तक।"

1974-75 के लिए राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों अथवा एककों के बारे में संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है।

2.2 शैक्षणिक विभाग

2.2.1 अध्यापक शिक्षा विभाग

रिपोर्टाधीन अवधि में, अध्यापक-शिक्षा के सुधार के कार्यक्रमों पर विभाग काम करता रहा। इनमें ये बातें शामिल हैं—स्कूल के शिक्षकों की सेवाकालीन शिक्षा के लिए रूपरेखा, बी० एड० स्तर पर दूरदर्शन शिक्षण की कोर्स-रूपरेखा की तैयारी, शिक्षक-शिक्षा के क्षेत्र में जन शक्ति की योजना के अध्ययन, बी० एड०, एम० एड० (प्राथमिक शिक्षा) कोर्सों का विकास, एम० एड० कार्यक्रम का संशोधन, विद्यार्थी-शिक्षण और माध्यमिक स्तर पर मूल्यांकन के सुधार, स्कूल-अध्यापक एवं अध्यापक-शिक्षक के लिए संगोष्ठी-पठन कार्यक्रम आदि। विभाग ने राष्ट्रीय अध्यापक-शिक्षा परिषद् और उसकी विभिन्न स्थायी समितियों को शैक्षणिक तथा लिपिकीय सुविधाएँ भी प्रदान कीं।

अवधि के महत्त्वपूर्ण कार्य

रिपोर्ट की इस अवधि के महत्त्वपूर्ण कार्य दो प्रमुख योजनाओं से सम्बद्ध हैं— राष्ट्रीय अध्यापक-शिक्षा परिषद् और 10+2 की नई स्कूली पद्धति के अन्तर्गत दस-वर्षीय-स्कूल-पाठ्यक्रम।

1. राष्ट्रीय अध्यापक-शिक्षा परिषद् (एन० सी० टी० ई०)

एन० सी० टी० ई० की दूसरी बैठक मार्च 1975 में हुई। इसमें परिषद् ने देश में अध्यापक-शिक्षा की स्थिति के बारे में जायजा लिया। वर्तमान स्थिति की रिपोर्ट उसके कार्यकारी दल ने प्रस्तुत की थी। परिषद् ने महसूस किया कि सभी राज्यों में जल्दी से जल्दी राज्य अध्यापक-शिक्षा मंडल की स्थापना हो जानी चाहिए। यह भी सोचा गया कि इन मंडलों को और भी मजबूत किया जाना चाहिए और राज्यों में अध्यापक-शिक्षा की बेहतरी के लिए माकूल कदम उठाए जाने चाहिए। एन० सी० टी० ई० ने विभिन्न पहलुओं से देखते हुए प्राथमिक अध्यापक-शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया।

2. नया स्कूली पाठ्यक्रम

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने पाठ्यक्रम के लिए एक विशेषज्ञ-समिति बना रखी है। इस समिति ने दस-वर्षीय स्कूली पाठ्यक्रम के लिए एक एप्रोच पेपर का प्रारूप तैयार किया। इस एप्रोच पेपर को एक विस्तृत आधार वाली राष्ट्रीय सभा के सम्मुख रखा जाएगा ताकि वह अगस्त 1975 में उस पर समीक्षात्मक टिप्पणी व विचार विमर्श कर सके। इसके बाद ही उसे देश व्यापी स्तर पर ग्रहण किया जाएगा। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न शैक्षणिक विभागों द्वारा कक्षा नौ और दस के लिए पहले ही आवश्यक शैक्षणिक सामग्री बनायी जा चुकी है जो प्रमुख क्षेत्रों से सम्बन्धित है।

नया पाठ्यक्रम मूल्यों और अभिवृत्तियों को मन में बैठाने पर जोर देगा। यह एक नयी चेतना भी जगाएगा—चेतना सामाजिक जागरूकता की, सामाजिक जिम्मेवारियों की, अपनी सांस्कृतिक विरासत की, राष्ट्रीय एकता की, समाजवाद की और धर्म निरपेक्षता की। सम्पूर्ण दस-वर्षीय स्कूली सत्र में कार्य-अनुभव को शामिल किया जाएगा। विज्ञान नए पाठ्यक्रम का एक अपरिहार्य अंग होगा। इसलिए इसके शिक्षण में समाज व समुदाय की स्वास्थ्य और स्वच्छता-विज्ञान की आवश्यकताओं पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। जनसंख्या शिक्षा और वातावरणीय अध्ययनों को विज्ञान की पढ़ाई के साथ सम्बद्ध किया जाएगा। नए पाठ्यक्रम में रटंत विद्या को त्याग दिया जाएगा और उसकी जगह पर विभिन्न विज्ञानों के काम करने के तरीकों और मूल सिद्धान्तों को समझने पर बल दिया जाएगा। सामान्य शिक्षा का काल दस वर्षों का होगा। इस दौरान सभी छात्रों के लिए एक ही कार्यक्रम चलेगा।

समाप्त हुई या प्रकाशित हुई उल्लेखनीय अध्ययन रिपोर्टें

1969-70, 1970-71 और 1971-72 के प्राथमिक स्तर के अध्यापक-शिक्षा के राष्ट्रीय सर्वेक्षण पूरे कर लिए गए। सर्वेक्षण की रिपोर्ट छप रही है।

विकास के कार्यक्रम

1. माध्यमिक स्तर पर अध्यापक-शिक्षा के मूल्यांकन में सुधार

माध्यमिक स्तर पर अध्यापक-शिक्षा के मूल्यांकन में सुधार लाने की दृष्टि से एक कार्यशाला संगठित की गई थी। यह कार्यशाला अन्नामलाई विश्वविद्यालय में 10 से 15 मार्च 1975 तक हुई थी। इसमें अन्नामलाई, मद्रास, वेंकटेश्वर और आन्ध्र के विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध शिक्षा महाविद्यालयों से छब्बीस अध्यापक-प्रशिक्षकों ने भाग लिया था। इन लोगों ने इस कार्यशाला में बाहरी और भीतरी, दोनों ही प्रकार के थियरी प्रश्न पत्रों के मूल्यांकन के बारे में विचार-विमर्श किया और एक सुधरी हुई प्रणाली को विकसित किया।

2. स्कूली अध्यापकों की सेवाकालीन शिक्षा के लिए एक रूपरेखा बनाने के निमित्त सभा गोष्ठी

यह सभा 16 और 17 दिसम्बर 1974 को जोरहाट के राज्य शिक्षा संस्थान में हुई। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा सेवाकालीन शिक्षा के लिए एक आंतरिक विभागीय समिति 1972 में बनाई गई थी। इस समिति ने सुझाव दिया था कि पाँचवीं पंचवर्षीय योजना के लिए सभी स्कूली शिक्षकों के वास्ते सेवाकालीन प्रशिक्षण के निमित्त रूपरेखाएँ बनाने का काम राज्य सरकारों के सहयोग से ही किया जाना चाहिए। ऐसी रूपरेखाएँ हर राज्य के लिए अलग-अलग बनेंगी। इस सुझाव के अनुसार प्रत्येक राज्य शिक्षा संस्थान ने स्कूली अध्यापकों की विभिन्न श्रेणियों के लिए सेवाकालीन कोर्सों की अपनी-अपनी रूपरेखाएँ इस सभा में प्रस्तुत कीं। ये रूपरेखाएँ आगे चल कर सुधारी गयीं। सुधार का यह कार्य उन सुझावों के आधार पर किया गया जो विभाग ने अपने पेपर द्वारा इस सभा में पेश किए थे। इन सुझावों पर और इस पेपर पर सभा के प्रतिभागियों ने काफी विचार विमर्श भी किया था। इस विचार विमर्श में साधन-व्यक्तियों ने भी भाग लिया था।

3. बी० एड० स्तर पर दूरदर्शन शिक्षण के एक कोर्स का निर्माण और विकास

लगभग बीस विश्वविद्यालयों के शिक्षा अध्ययन मण्डल (बोर्ड्स ऑफ स्टडीज़ इन एजुकेशन) के अध्यक्षों एवं शिक्षा संकायों के डीनों के वास्ते एक संगोष्ठी का आयोजन विभाग ने 17 मार्च से 19 मार्च 1975 तक किया। इस संगोष्ठी में 37 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इन लोगों ने यह सिफारिश की कि उन राज्यों में, जहाँ दूरदर्शन का प्रसारण होता है और उन राज्यों में भी जहाँ दूरदर्शन का प्रसारण

जल्दी ही शुरू होने वाला है, बी० एड० के कार्यक्रम में दूरदर्शन शिक्षण का कोर्स चलाया जाना चाहिए।

अध्यापक शिक्षा के दो कार्यकारी दल—सेवापूर्व शिक्षण के और सेवाकालीन शिक्षण के—दूरदर्शन शिक्षण के लिए विषय वस्तु कोर्स बनाने में लगे और उन्होंने इसे बनाया।

4. संशोधित एम० एड० कार्यक्रम

भोपाल के मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा संस्थान में 8 अक्तूबर से 10 अक्तूबर 1974 तक एक अखिल भारतीय सभा हुई, जिसमें एम० एड० कार्यक्रम को संशोधित किया जाना था। इस सभा में भारतीय विश्वविद्यालयों के पचीस डीन और शिक्षा के प्रोफेसरों ने और डीनों के तीन प्रतिनिधियों ने भाग लिया। एम० एड० कार्यक्रम की परिभाषा के अनुसार उसका लक्ष्य शिक्षा के कर्ताओं (प्रैक्टिशनर्स) का निर्माण है। इस परिभाषा को ध्यान में रखते हुए सम्पूर्ण एम० एड० कोर्सों की समीक्षा की गई और एक संशोधित योजना तैयार की गयी। सभा ने तय किया कि एम० एड० के विद्यार्थी को तीन क्रोड पेपर और दो वैकल्पिक पेपर लेने चाहिए। ऐसा करने का उद्देश्य यह है कि विशेषीकरण सम्भव हो सके और इस विशेषीकरण से एक ऐसा शीर्षक निकल सके जिस पर प्रबन्ध तैयार किया जा सके। यह प्रबन्ध ही छठा पेपर बनेगा।

ऊपर की सभा के क्रम में ही द्वितीय सभा-सह-संगोष्ठी केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली में, 23 और 24 मार्च 1975 को हुई। इन दो संगोष्ठियों में एम० एड० के अधिकांश पेपरों को शुद्ध कर लिया गया।

5. अध्यापक-शिक्षा के लिए जनशक्ति नियोजन पर सभा

अध्यापक-शिक्षा के लिए जनशक्ति नियोजन विषय पर राज्यों के शैक्षिक नियोजन अधिकारियों की एक सभा राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के परिसर में 26 दिसम्बर से 28 दिसम्बर 1974 तक विभाग द्वारा आयोजित की गई। अध्यापक-शिक्षा में जनशक्ति नियोजन विषय पर विभिन्न मार्गदर्शक पेपर तो पढ़े ही गए, साथ ही राज्यों में इसके नियोजन पर काफी विचार-विमर्श भी हुआ। बेहतर नियोजन की आवश्यकता पर बल दिया गया। इसके लिए निम्नलिखित पर अधिक जोर दिया गया—प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण, प्राथमिक कक्षाओं में बहुविध प्रवेश, कार्य-अनभव और व्यवसायीकरण कार्यक्रम, शिक्षा की 10+2+3 प्रणाली, स्कूल शिक्षा का गुणात्मक सुधार, शैक्षिक प्रौद्योगिकी और समाज के पिछड़े हुए या वंचित भागों के बच्चों की विशेष आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा की प्रणालियों के कार्यक्रम।

प्रशिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रम

1. छात्र-शिक्षण पर कार्यशाला-सह्-गोष्ठियाँ

उत्तर प्रदेश के प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रिंसिपलों के लिए तीन कार्यशाला-सह्-गोष्ठियों का आयोजन इलाहाबाद के राज्य शिक्षा संस्थान में किया गया। ये कार्यशाला-सह्-गोष्ठियाँ क्रमश: 3 से 8 जनवरी 1975, 3 से 8 फरवरी 1975 और 17 से 22 फरवरी 1975 के मध्य हुईं। इनमें क्रमश: 48, 43 और 47 प्रिंसिपलों ने भाग लिया। इन गोष्ठियों का प्रमुख उद्देश्य था—प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में छात्र शिक्षण का सुधार करना।

2. गहन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (आई० टी० ई० पी०) उड़ीसा और बंगाल का बर्दवान विश्वविद्यालय (माध्यमिक)

उड़ीसा के शिक्षा महाविद्यालयों के कर्मचारियों एवं प्रिंसिपलों तथा पश्चिम बंगाल के बर्दवान विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के कर्मचारियों के लिए, भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में 23 से 25 जनवरी 1975 तक पहली सभा हुई। इसमें प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम, मूल्यांकन, अभ्यास के लिए अध्यापन आदि विषयों की वर्तमान समस्याओं पर विचार-विमर्श किया।

इसी श्रृंखला में, पाठ्यक्रम में सुधार लाने के वास्ते, उत्कल, सम्बलपुर, बरहमपुर और बर्दवान विश्वविद्यालयों के अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गयी। यह कार्यशाला भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में 31 मार्च से 4 अप्रैल 1975 तक हुई। इस कार्यशाला में स्थानीय परिवेश को ध्यान में रखते हुए बी० एड० का पाठ्यक्रम संशोधित किया गया। इस कार्यशाला में पन्द्रह अध्यापक प्रशिक्षक और भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के वरिष्ठ अध्यापन कर्मचारी शरीक हुए।

3. गहन अध्यापक शिक्षा का कार्यक्रम (आई० टी० ई० पी०) मध्यप्रदेश (प्राथमिक)

मध्यप्रदेश के बुनियादी प्रशिक्षण संस्थानों के प्रिंसिपलों की एक सभा भोपाल के राज्य शिक्षा संस्थान में 12 से 17 जनवरी 1975 तक के लिए बुलाई गई थी। इसमें 34 व्यक्तियों ने भाग लिया जिन्होंने अपने-अपने संस्थान की सब विशेषताएँ और समस्याएँ गिनाते हुए अपनी-अपनी रिपोर्ट पेश की।

4. प्रायोगिक परियोजनाओं के लिए साधन व्यक्तियों के प्रशिक्षण के निमित्त कार्यशालाएँ

दक्षिणी क्षेत्र और पूर्वी क्षेत्र के अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए प्रायोगिक परियोजनाओं के वास्ते साधन-व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने के निमित्त दो कार्यशालाएँ आयोजित की गयीं। ये कार्यशालाएँ केरल विश्वविद्यालय, त्रिवेन्द्रम और राजकीय

बुनियादी प्रशिक्षण संस्थान, इम्फाल, मणिपुर में क्रमशः 23 सितम्बर से 28 सितम्बर 1974 तक और 13 मार्च से 18 मार्च 1975 तक आयोजित की गयीं ।

दक्षिणी क्षेत्र के अट्ठाइस व्यक्तियों ने और पूर्वी क्षेत्र (बिहार, उड़ीसा, असम, पश्चिमी बंगाल, मणिपुर, मेघालय आदि) के सोलह व्यक्तियों ने इसमें अनुकूलन की शिक्षा पाई । अनुकूलन का यह प्रशिक्षण प्रायोगिक परियोजनाओं के बारे में था । इन प्रतिभागियों ने, इन कार्यशालाओं में, कक्षा के अध्यापकों के लिए उपयुक्त विभिन्न परियोजना-रूपों को बनाया और उन पर विचार-विमर्श किया ।

5. अध्ययन-गोष्ठी व्याख्या (सेमीनार रीडिंग्स) कार्यक्रम का राष्ट्रीय अधिवेशन (स्कूल-अध्यापक)

यह राष्ट्रीय अधिवेशन ऐटमिक एनेर्जी केन्द्रीय विद्यालय, बंबई में 8 फरवरी से 10 फरवरी 1975 तक आयोजित किया गया । अधिकतम तीस पुरस्कारों में से केवल इक्कीस पुरस्कार (प्रत्येक 500 रुपए का) माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों को उनके लेखों के लिए जो विभिन्न विषय क्षेत्रों पर थे, प्रदान किए गए । इन तीन दिनों के दौरान चुने हुए लेखों को पढ़ा गया और सुधार करने के लिए उन पर विचार-विमर्श हुआ ।

6. अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए अध्ययन-गोष्ठी व्याख्या कार्यक्रम

अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए अध्ययन-गोष्ठी व्याख्या (सेमीनार रीडिंग्स) कार्यक्रम 1974-75 के दौरान विभाग द्वारा आयोजित किया गया । माध्यमिक स्तर पर छः लेख और प्राथमिक स्तर पर पन्द्रह लेख पुरस्कार के लिए चुने गए । ये पुरस्कार प्रत्येक क्रमशः 750 रुपए और 500 रुपए के थे । पुरस्कार वितरण का राष्ट्रीय अधिवेशन राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान परिसर में बीस मार्च से 22 मार्च 1975 तक हुआ जब कि पुरस्कृत व्यक्तियों को सनद और नगद पुरस्कार प्रदान किए गए ।

2.2.2 स्कूल शिक्षा विभाग

यह विभाग अनौपचारिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण और पाठ्यक्रम-विकास के क्षेत्रों में काम करता रहा है ।

इस अवधि के महत्त्वपूर्ण कार्य

विभाग ने समुदाय शिक्षा, प्रतिभागिता और अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में काम करने की पहल की । प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के उद्देश्य से प्रेरित होकर काम करने के लिए शिक्षक-समुदाय के उत्साह को जगाने के वास्ते इसने अनुकूलन कोर्सों का आयोजन किया, जिससे कि अध्यापकों और अध्यापकों के व्यावसायिक संगठनों के प्रतिनिधियों को लाभ पहुँच सके ।

महत्त्वपूर्ण अध्ययन जो पूरे किए गए या छापे गए

विभिन्न स्कूल-विषयों में छात्रों की उपलब्धि पर पठन के प्रभाव को सुनिश्चित करने वाले अध्ययन के सम्बन्ध में, मार्गदर्शी पठन परीक्षणों को हिन्दी भाषी प्रदेशों के कक्षा एक व दो के 250 बच्चों पर आजमाया गया। अन्तिम पठन-परीक्षणों को कक्षा एक व दो के लगभग तीन हजार बच्चों पर चलाया गया। इस कार्य में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के कर्मचारियों और प्रशिक्षित अन्वेषकों से पर्याप्त सहायता मिली।

विकासात्मक कार्यों की प्रमुख गतिविधियाँ

1. समुदाय शिक्षा, प्रतिभागिता और अनौपचारिक शिक्षा

बहुत से ऐसे समुदाय है जिन्हें पूर्णतः या आंशिक रूप से शिक्षा से वंचित रहना पड़ता है। विशेष कर समाज के कमजोर पक्षों के लोग या पहाड़ों पर रहने वाले लोग या आदिवासी तथा ग्रामीण लोग प्रायः ही शिक्षा नहीं पाते। ऐसे लोगों की शिक्षा सम्बन्धी कम से कम जरूरतों को पूरा करने के लिए जिस नए प्रकार की शैक्षिक गतिविधियों को विकसित करना है, उनकी जाँच पड़ताल के लिए यह क्षेत्र विशेष रूप से लगा हुआ है। इस विशेष आवश्यकता की पूर्ति समुदाय पर आधारित नई शैक्षिक अप्रोच को अपनाने से हो सकती है। इस अप्रोच में अनौपचारिक शिक्षा पर विशेष बल दिया जाएगा जो कि इस आयु वर्ग को समेटेगी—0 से 3, 3+से 6, 6+से 14, 15 से 25 और लड़कियाँ तथा माताएँ। इस पद्धति में स्कूल को समुदाय शिक्षा का केन्द्र बनना पड़ेगा। इससे समुदाय का समग्र विकास होगा, क्योंकि बच्चों तथा वयस्कों दोनों का शिक्षण होगा।

काम शुरू किया जा रहा है। चौदह राज्यों में तीस समुदाय शिक्षा केन्द्र स्थापित किए जाएँगे। इसके लिए शैक्षणिक और प्रशासनिक मार्गदर्शी रेखाएँ बनायी जा रही हैं।

अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में काम शुरू करने के वास्ते एक पुस्तिका में अनौपचारिक शिक्षा का प्रत्ययात्मक-ढाँचा वर्णित किया गया है। काम इन क्षेत्रों में शुरू किया गया है—(1) उत्तरप्रदेश में भुमिआधार, (2) गुजरात में नसवाड़ी, (3) आन्ध्रप्रदेश में चवेला, (4) हिमाचल प्रदेश में कल्पा, (5) उड़ीसा में गुम्मा, (6) बिहार में मुसहरी, और (7) दिल्ली में एक गंदी बस्ती। काम को लागू करने के लिए विभिन्न स्तरों की संचालन समितियाँ बन चुकी हैं। इनमें शिक्षा, समुदाय विकास, कृषि, स्वास्थ्य और कल्याण जैसे विभिन्न विभागों के प्रतिनिधियों को शामिल किया गया है।

कुछ क्षेत्रों के लोगों की शैक्षिक और सामाजिक-आर्थिक दशाओं के बारे में सर्वेक्षण कार्य पूरा किया जा चुका है।

2. पाठ्यक्रम नवीकरण

इस क्षेत्र में कई गतिविधियाँ प्रारम्भ की गयीं, जिनमें महत्त्वपूर्ण निम्न-लिखित हैं :

(क) राज्यों के सहयोग से पाठ्यक्रमों का विकास ।

(ख) प्राथमिक शिक्षा पर यूनिसेफ सहायता प्राप्त परियोजना ।

(ग) पाठ्यक्रम के विकास की कार्यप्रणाली का एक अध्ययन ।

दिल्ली के शिक्षा निदेशक की प्रार्थना पर, 1974-75 के दौरान एक अनुकूलन अधिवेशन आयोजित किया गया। इस अधिवेशन का उद्देश्य 10+2 प्रणाली की स्कूलिंग में पाठ्यक्रम के विस्तृत लक्षणों से उपनिदेशकों और शिक्षा अधिकारियों को परिचित कराना था ।

यूनिसेफ-सहायता-प्राप्त परियोजना के अन्तर्गत एक संगोष्ठी आयोजित की गयी । संगोष्ठी का उद्देश्य 1974-75 के दौरान पेशगी किए जाने वाले कामों को संस्तुत करना था ।

'पाठ्यक्रम के विकास की कार्यप्रणाली के अध्ययन' के अन्तर्गत, राज्यों में पाठ्यक्रम के विकास की कार्यप्रणाली से सम्बद्ध विविध पहलुओं के अध्ययनों और रिपोर्टों को ध्यान से पढ़ा गया । एक कार्यकारी दल जिसमें कुछ राज्यों के शिक्षा विभागों के प्रतिनिधि शामिल हुए थे, फरवरी 1975 में मिला । इस अधिवेशन का उद्देश्य पाठ्यक्रम के विकास की कार्यप्रणाली से सम्बन्धित आधार सामग्री के एकत्र करने के तरीकों को बताना और उन पर विचार-विमर्श करना था ।

3. प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण

(क) अभी हाल तक प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के कार्यक्रम रेखीय माडल पर आधारित हुआ करते थे। इससे यह प्रकट होता था कि स्कूलिंग की सुविधाओं के विस्तार की जरूरत है। अर्थात् सभी बच्चों को स्कूलों मे लाने के लिए एक ही प्रणाली के नए स्कूलों को खोले जाने की जरूरत थी । पिछले पचीस वर्षों के अनुभव से यह निष्कर्ष निकला था कि प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लिए, यह जरूरी है कि विभिन्न प्रकार के ऐसे कार्यक्रमों को चालू किया जाए जो समाज के विभिन्न अंगों की जरूरतों को पूरा कर सकें। प्रवेश की मुख्य समस्या अब पहाड़ी और आदिवासी क्षेत्रों तक तथा शहरों की गन्दी बस्तियों और लड़कियों तक ही सीमित रह गयी है । इसके अनुसार प्रायोगिक तौर पर जो काम शुरू किया गया वह इन इलाकों में था—दिल्ली की एक गन्दी बस्ती, हिमाचल प्रदेश का कल्पा ब्लॉक, बिहार का मुसहरी ब्लॉक, उड़ीसा का गुम्मा ब्लॉक, गुजरात का नसबाड़ी ब्लॉक और आन्ध्रप्रदेश का चवेला ब्लॉक ।

स्थानीय आवश्यकताओं के मूल्यांकन के लिए, इन ब्लॉकों में सर्वेक्षण कार्य या तो किया चुका है या किया जा रहा है। स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप समुदाय

प्रतिभागिता और पाठ्यक्रम विकास के कार्यक्रम तैयार किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों में इस बात पर जोर दिया जा रहा है कि शिक्षा को समुदाय की जरूरतों से सम्बद्ध होना चाहिए।

(ख) विभाग ने दो सहायक पुस्तकों का निर्माण किया है। एक तो प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए है और दूसरी प्राथमिक स्तर पर होने वाली शैक्षिक क्षति के पर्यवेक्षी अधिकारियों के लिए। इन पुस्तकों के आधार पर, विभाग ने बड़ी गहनता से आन्ध्र प्रदेश के तीन ग्रामीण ब्लॉकों में, और गुजरात के तीन ग्रामीण ब्लॉकों में काम किया। इस काम में अध्यापकों और पर्यवेक्षी अधिकारियों का अनुकूलन करना था।

(ग) विभाग ने उत्तरप्रदेश के लोनी ब्लॉक में अवर्गीकृत स्कूल प्रणाली की आजमाइश की। इस आजमाइश के परिणामों से यह पता चला कि प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण को बढ़ाने के लिए अवर्गीकृत स्कूल प्रणाली कितनी प्रभावकारी हो सकती है।

प्रशिक्षण और विस्तार के कार्यक्रम

1. प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों के अनुकूलन के लिए कोर्स

प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए और शिक्षा की कायापलट करने के लिए, विभाग ने अनुकूलन के पाँच कार्यक्रम चलाए। ये कार्यक्रम अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षक संघ के देश के विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधि अध्यापकों के लिए चलाए गए थे। इन अनुकूलन कार्यक्रमों में, प्रवेश के लिए किए जाने वाले संचालनों और प्राथमिक शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के लिए अध्यापकों को अनुकूलित किया गया ताकि वे इस काम की विविध अप्रोचों और शैलियों को समझ सकें। शिक्षा को स्वास्थ्य, कृषि, कल्याण, लघु उद्योगों आदि से संबद्ध कर, एकीकृत शिक्षा पर जोर दिया गया। इन्हीं लाइनों पर निरीक्षण अधिकारियों को भी अनुकूलित करने के विचार से, ताकि वे अध्यापकों को अपने तरीके से प्रेरित कर सकें, एक अनुकूलन कोर्स चलाया गया। यह कोर्स स्कूल-सुधार-कार्यक्रम के अन्तर्गत बिहार के निरीक्षक और पर्यवेक्षी अधिकारियों के लिए चलाया गया था।

विभाग ने अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षक संघ को सहयोग देकर दिल्ली में प्राथमिक शिक्षकों के नेताओं की एक सभा कराई। इसमें लगभग छः सौ लोगों ने भाग लिया। प्रतिभागियों के लिए स्कूल सुधार कार्यक्रमों पर विशेष विचार विमर्श भी आयोजित किए गए।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के लिए कार्यक्रम

1975 में अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष मनाए जाने के उपलक्ष में, उससे सम्बद्ध कार्यक्रमों के अन्तर्गत, नवम्बर 1974 में, अध्यापिकाओं के लिए एक राष्ट्रीय अधिवेशन

बुलाया गया। इसमें 104 अध्यापिकाओं ने भाग लिया। लड़कियों की पढ़ाई से सम्बन्धित समस्याओं पर विचार-विमर्श हुए। इस कोर्स का यह उद्देश्य भी था कि अध्यापिकाओं में नेतृत्व-क्षमता पैदा की जा सके।

इसके अलावा, लड़कियों की पढ़ाई को बढ़ावा देने वाले उपयुक्त कार्यक्रमों को लागू करने के विचार से लड़कियों की पढ़ाई पर कई गोष्ठियाँ एक ही क्रम में की गयीं। इनमें लड़कियों की पढ़ाई पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी और लड़कियों की पढ़ाई पर ही राज्य स्तर की संगोष्ठियाँ शामिल हैं। राज्य सरकारों को राज्य स्तर की गोष्ठियाँ आयोजित करने के लिए अनुदान दिए गए। इन गोष्ठियों में लड़कियों की पढ़ाई से सम्बन्धित समस्याओं एवं कार्यक्रमों पर विभिन्न स्तरों पर विचार विमर्श हुए।

लड़कियों की पढ़ाई पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए, निकासी गृह की गतिविधियाँ शुरू की गयीं। स्त्रियों के संवैधानिक अधिकार, स्त्रियों के लिए कानूनी अधिकार, स्त्रियों का दरजा, स्त्रियों की आर्थिक प्रतिभागिता और स्त्री-शिक्षा की राष्ट्रीय परिषद् का कार्यवृत्त जैसी पठन सामग्री को मिमियोग्राफ करके प्रसारित किया गया।

2.2.3 सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग

इस विभाग का मुख्य कार्यक्षेत्र सदैव इन विषयों में रहा है—पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या और शिक्षण सामग्री का विकास करना, सामाजिक विज्ञान एवं भाषाओं के क्षेत्रों में अध्यापकों के लिए अनुकूलन कार्यक्रम तैयार करना। इसके अलावा यह विभाग जनसंख्या शिक्षा पर एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम भी चलाता रहा है। सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत अब तक विभाग ने इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र और अर्थशास्त्र के क्षेत्रों में कार्य किया है। भाषाओं के अन्तर्गत मातृभाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण, द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण, संस्कृत और द्वितीय भाषा के रूप में बाङ्ला के क्षेत्रों में काम हो रहा है।

इस अवधि के महत्त्वपूर्ण काम

(1) नए पाठ्यक्रम के लिए पाठ्यपुस्तकें

इस वर्ष विभाग मुख्यतः 10+2 प्रणाली के लिए सामाजिक विज्ञानों एवं भाषाओं में नए पाठ्यक्रम और शिक्षण-सामग्री के विकास में मुख्य रूप से व्यस्त रहा है। प्रस्तावना के रूप में विभाग ने शिक्षा मंत्रालय एवं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा स्थापित सामाजिक विज्ञानों एवं भाषाओं की राष्ट्रीय समितियों के साथ सहयोग किया। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को सामाजिक विज्ञानों एवं भाषाओं में पाठ्यचर्या विकसित करने के लिए भी विभाग ने सहयोग दिया।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा बनायी गयी 10+2 प्रणाली के शीघ्र लागू किए जाने के लिए, इस विभाग ने कक्षा नौ और दस के वास्ते इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, और अर्थशास्त्र की पाठ्यचर्याओं को अन्तिम रूप प्रदान करने में बोर्ड की सहायता की। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के निमित्त इस विभाग ने कक्षा नौ की निम्नलिखित चार पाठ्यपुस्तकें भी लिखीं—

(1) 'हिस्ट्री ऑफ मैनकाइंड'
(2) 'मानव जाति का इतिहास'
(3) 'इण्डिया ऑन दि मूव'
(4) 'भारत विकास की ओर'

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के निमित्त कक्षा दस की इतिहास और भूगोल की पाठ्यपुस्तकों के लिखने का काम चालू है।

कक्षा एक से दस तक के लिए सामाजिक विज्ञानों के पाठ्यक्रम के निर्माण के क्षेत्र में विभाग ने कार्य करना शुरू कर दिया है। कक्षा ग्यारह और बारह के लिए समाज-विज्ञान के पाठ्यक्रम को विकसित करने के लिए भी इस विभाग ने मार्गदर्शी रेखाएँ बना ली हैं।

(2) जनसंख्या शिक्षा परियोजना

जनसंख्या शिक्षा के क्षेत्र में यह विभाग एक पाठ्यचर्या का प्रारूप तैयार करने पर काम कर रहा है। जनसंख्या शिक्षा की यह पाठ्यचर्या प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के लिए होगी।

यह विभाग एक राष्ट्रीय संदर्भ ग्रन्थ सूची के निर्माण में भी संलग्न है। साथ ही यूनेस्को द्वारा प्रवर्तित जनसंख्या शिक्षा की स्रोत पुस्तक पर भी यह विभाग काम कर रहा है।

अध्ययन रिपोर्टें जो पूरी हुईं या प्रकाशित हुईं

देवनागरी लिपि के ग्रैफेमिस विश्लेषण पर एक अनुसन्धान परियोजना पूरी हो चुकी है। स्कूलों में जनसंख्या शिक्षा एवं सेक्स शिक्षा के प्रवेश के बारे में भाव सम्बन्धी सर्वेक्षण का काम हाथ में लिया गया है। विभिन्न राज्यों में विविध भाषाओं की पढ़ाई को लेकर हैसियत सम्बन्धी एक अध्ययन पूरा किया जा चुका है।

विकास संबंधी कार्यक्रम

ऊपर गिनाए गए सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्धित कार्यक्रमों के अलावा भाषा सम्बन्धी निम्नलिखित कार्यक्रमों पर भी विभाग ने काम किया।

1. मातृभाषा के रूप में हिन्दी

(क) विभाग ने 'बाल भारती—भाग एक' नाम की एक नई हिन्दी प्राइ-

मर प्रकाशित की। इसे 1975-76 के दौरान कुछ चुने हुए स्कूलों में जाँच के लिए पढ़ाए जाने के वास्ते प्रायोगिक संस्करण के रूप में छापा गया है। इसमें पठन शिक्षण की विविध विधियों के चुने हुए सर्वश्रेष्ठ भागों को सम्मिलित किया गया है।

(ख) 'राष्ट्र भारती' नाम की कक्षा 6 की हिन्दी पाठ्यपुस्तक को संशोधित किया गया है।

(ग) 10+2 प्रणाली के अन्तर्गत कक्षा एक से दस तक के लिए मातृभाषा के रूप में हिंदी पर नयी पाठ्यचर्या विकसित कर ली गई है।

2. दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी

10+2 प्रणाली के अन्तर्गत द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पर पाठ्यचर्या के प्रारूप को विकसित कर लिया गया है। पहली पाठ्यपुस्तक पर किए जाने वाले काम की प्रगति अच्छी है।

3. संस्कृत

(क) 10+2 प्रणाली के अन्तर्गत कक्षा छः से दस तक के लिए संस्कृत की पाठ्यचर्या के प्रारूप को अन्तिम रूप दिया जा चुका है।

(ख) कक्षा छः के लिए संस्कृत की पहली पाठ्यपुस्तक लिखी जा चुकी है और उसको अन्तिम रूप देकर प्रेस में भेजने के लिए तैयार किया जा रहा है। दूसरी पाठ्य पुस्तक का काम अच्छी प्रगति में है।

4. अंग्रेजी

10+2 प्रणाली के अन्तर्गत कक्षा छः से दस तक के लिए अंग्रेजी की पाठ्यचर्या का प्रारूप अन्तिम रूप से बना लिया गया है।

5. बाङ्ला

हिंदी भाषी क्षेत्रों की कक्षा छः के लिए बाङ्ला की पहली पाठ्यपुस्तक अन्तिम रूप पा चुकी है।

अन्य कार्यक्रम

(1) भाषा प्रयोगशाला के कार्यक्रम

भाषा प्रयोगशाला के माध्यम से बाङ्ला पढ़ाने के उद्देश्य से एक सौ बाङ्ला पाठों को अन्तिम रूप दिया जा चुका है। उनको टेप रिकार्ड में अंकित किए जाने की प्रक्रिया जारी है।

(2) आचार शास्त्र और योग

प्रायोगिक तौर पर स्कूलों में योग की पढ़ाई शुरू करने के लिए योग की पाठ्यचर्या का प्रारूप विभाग ने विकसित कर लिया है।

(3) पूरक पठन सामग्री

ऊपर बताए गए पाठ्यपुस्तक उत्पादन के काम के अलावा, विभाग बच्चों के लिए पूरक पठन सामग्री के तैयार करने के काम में भी लगा हुआ है। इस क्षेत्र की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि इस वर्ष यह रही कि अमीर खुसरो के सातवीं-शताब्दी महोत्सव के सिलसिले में विभाग ने अमीर खुसरो पर हिंदी और उर्दू में पूरक पठन की पुस्तकें प्रकाशित कीं।

प्रशिक्षण और विस्तार के कार्यक्रम

(1) इस विभाग ने व्यावहारिक भाषा विज्ञान और भाषा शिक्षण पर एक ग्रीष्मकालीन संस्थान चण्डीगढ़ के राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में आयोजित किया। देश के विभिन्न भागों के लगभग पचास व्यक्तियों ने इसमें भाग लिया।

(2) माध्यमिक शिक्षक प्रशिक्षण स्तर के शिक्षकों के लिए जनसंख्या शिक्षा पर एक ग्रीष्मकालीन संस्थान आयोजित किया गया।

(3) इतिहास में शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए एक अनुकूलन कार्यक्रम का आयोजन कालीकट में, पन्द्रह दिनों के लिए विभाग ने किया। इस अनुकूलन कार्यक्रम में चार दक्षिणी राज्यों और एक संघ शासित क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में काम कर रहे अध्यापक प्रशिक्षकों ने भाग लिया।

(4) महाराष्ट्र में प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण स्तर पर काम कर रहे अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए भी विभाग ने एक अनुकूलन कार्यक्रम आयोजित किया। सप्ताह भर के इस कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों के सम्मुख इस क्षेत्र की नई विचारधारा प्रस्तुत की गयी। इस स्तर के अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए सामाजिक अध्ययन के नए पाठ्यक्रम के निर्माण में उनकी सहायता की गयी।

(5) इस वर्ष के दौरान हिन्दी अध्यापकों के लिए अनुकूलन के दो कार्यक्रम आयोजित किए गए।

(6) रीति अध्यापकों के लिए भाषा प्रयोगशाला के इस्तेमाल पर अनुकूलन के दो कार्यक्रम आयोजित किए गए।

2.2.4 विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग

10+2 प्रणाली की स्कूली शिक्षा के लिए कक्षा नौ और दस के वास्ते भौतिकी, रसायनशास्त्र एवं जीव-विज्ञान की पाठ्यपुस्तकीय सामग्री तैयार करना ही इस विभाग का प्रमुख कार्य रहा है। गणित विषय में कक्षा नौ के लिए पाठ्य सामग्री पहले ही बनायी जा चुकी है। विज्ञान के विषयों में इस बात का ध्यान रखा गया है कि पाठ्य सामग्री क्रियाशील और वातावरण प्रधान हो।

महत्त्वपूर्ण अनुसंधान कार्य जो पूरे हुए या प्रकाशित हुए

यह विभाग एक वैज्ञानिक क्रियात्मकता परीक्षण के विकास की परियोजना में लगा रहा है। यह परियोजना जनवरी 1974 में शुरू की गयी थी और इसका उद्देश्य था—उच्चतर माध्यमिक स्तर पर क्रियात्मक वैज्ञानिक प्रतिभा को खोजने के लिए परीक्षणों का विकास करना। एक परीक्षण बनाया जा चुका है, जिससे भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव-विज्ञान और गणित के क्षेत्रों से विषयवस्तु ली गयी है। मानकीकरण के लिए, समस्त भारत से कक्षा नौ से कक्षा बारह तक के विज्ञान के दो हजार छात्रों के लगभग पचास संदर्भ दलों पर परीक्षण आजमाया गया। इस परीक्षण को अत्यधिक विश्वसनीयता और भविष्यसूचक तर्क संगति वाला पाया गया है (विज्ञान विषयों के लिए, ·0001 स्तर पर उल्लेखनीय)। भविष्य में क्रियात्मक वैज्ञानिक प्रतिभा की पहचान के लिए यह परीक्षण अत्यधिक मूल्यवान साबित होगा, ऐसी आशा है।

विकास की प्रमुख गतिविधियां

रसायनशास्त्र

स्कूली शिक्षा की नई 10+2 प्रणाली के कक्षा नौ और दस के लिए कार्यक्रम और पाठ्यक्रमीय सामग्री के विकास पर ही रसायनशास्त्र के ग्रुप ने अधिकांश समय और परिश्रम लगाया। निम्नलिखित कार्यक्रम उल्लेख करने योग्य हैं :

(1) कक्षा नौ और कक्षा दस के लिए साठ-साठ घण्टों (पीरियडों) के वास्ते पाठ्यचर्या का अंतिम प्रारूप जिसमें थियरी और प्रैक्टिकल दोनों ही शामिल हैं, बना लिया गया और उसे केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने स्वीकार भी कर लिया।

(2) रसायनशास्त्र के नए कोर्स के अनुसार कक्षा नौ और कक्षा दस को पढ़ाने के वास्ते जिस वैज्ञानिक उपकरण और अन्य शिक्षण सामग्री की जरूरत होती है, उसकी सूची बनाने के लिए एक कार्यशाला का आयोजन 23 दिसम्बर से 31 दिसम्बर, 1974 तक किया गया।

(3) कक्षा नौ और कक्षा दस के लिए रसायनशास्त्र के परीक्षण विषयों (टेस्ट आइटम) को तैयार करने के निमित्त फरवरी 1975 में एक मूल्यांकन कार्यशाला आयोजित की गयी। इसमें नमूने के प्रश्न पत्र भी बनाए गए।

भौतिकी

कक्षा नौ और कक्षा दस के लिए भौतिकी की पाठ्य सामग्री बनायी गयी। इन कामों के लिए कार्यशालाएँ चलाई गईं—

(1) पाठ्य-सामग्री को अंतिम रूप देने के लिए,

(2) नई पाठ्यवस्तु से सम्बद्ध प्रयोगशाला-प्रयोगों और गतिविधियों के विवरणों को समझने के लिए, और

(3) इसी के लिए एक प्रश्न बैंक बनाने के वास्ते ।

जीव-विज्ञान

शिक्षा की नई 10+2 प्रणाली के अन्तर्गत कक्षा नौ और कक्षा दस की पाठ्यचर्या बनायी गयी। ग्रुप के लोगों ने इन कक्षाओं के लिए पाठ्य सामग्री बनाई जिसे बाद में मैसूर में अगस्त-सितम्बर 1974 में आयोजित एक कार्यशाला में विकसित करके संशोधित किया गया ।

गणित

शिक्षा की नई 10+2 प्रणाली के अनुसार माध्यमिक कक्षाओं के लिए एक पाठ्य-पुस्तक का प्रथम भाग लिखा गया और बाद में प्रकाशित किया गया । गणित की कक्षा नौ की पाठ्य-पुस्तक का हिन्दी संस्करण भी प्रकाशित किया गया ।

प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रम

इस शीर्षक के अन्तर्गत विभाग ने दो प्रमुख कार्य किए—

(1) ग्रीष्मकालीन विज्ञान संस्थानों का आयोजन, और

(2) बच्चों के लिए विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन ।

ग्रीष्मकालीन संस्थान

विभिन्न राज्यों और संघ क्षेत्रों में, माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों/पूर्व विश्व-विद्यालय कोर्स के शिक्षकों/इण्टर कालेजों के शिक्षकों/पूर्व डिग्री कालेजों के शिक्षकों के लिए विभाग ने अनेक ग्रीष्मकालीन विज्ञान संस्थान आयोजित किए। विवरण सारिणी V में दिया गया है ।

सारिणी V

1974-75 के दौरान विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित ग्रीष्मकालीन संस्थान

प्रकार	संख्या	प्रवेश
ऐक्कि	79	2986
आनुक्रमिक	3	110
विशेष संस्थान	4	102
परियोजना प्रौद्योगिकी	4	171
सामान्य विज्ञान	6	226

बच्चों के लिए राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी

जवाहर लाल नेहरू स्मारक निधि के साथ सहयोग करके, तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली में, 10 से 19 नवम्बर, 1974 तक, बच्चों के लिए एक राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की गयी।

इसी प्रकार की तीन और भी राज्य स्तर की प्रदर्शनियाँ इस प्रकार से आयोजित की गईं—

(1) स्वराज भवन, इलाहाबाद।
(2) जवाहर बाल भवन, हैदराबाद।
(3) जवाहर शिशु भवन, कलकत्ता।

जिला स्तर की चौदह विज्ञान प्रदर्शनियाँ निम्नलिखित स्थानों पर आयोजित की गईं—

(1)	उदयपुर	(राजस्थान)
(2)	गौहाटी	(असम)
(3)	त्रिवेन्द्रम	(केरल)
(4)	मद्रास	(तमिलनाडु)
(5)	कोहिमा	(नागालैंड)
(6)	इलाहाबाद	(उत्तर प्रदेश)
(7)	कर्नाल	(हरियाणा)
(8)	जादवपुर (कलकत्ता)	(पश्चिम बंगाल)
(9)	भोपाल	(मध्यप्रदेश)
(10)	एलुरु	(आन्ध्रप्रदेश)
(11)	चण्डीगढ़	
(12)	भुवनेश्वर	(उड़ीसा)
(13)	बिड़ला औद्योगिक संग्रहालय (कलकत्ता)	(पश्चिम बंगाल)
(14)	राजपिपला	(गुजरात)

विविध गतिविधियाँ

(1) पौषणिक आहार शिक्षा पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी अक्तूबर 1974 म, जादवपुर में आयोजित की गयी। इस क्षेत्र की भविष्य की योजनाएँ बनाने के निमित्त सिफारिशें की गईं और काफी विचार-विमर्श हुए।

(2) स्कूल स्तर पर विज्ञान शिक्षा के सुधार और पुनर्गठन के लिए, यूनिसेफ सहायता प्राप्त परियोजना के अन्तर्गत, विज्ञान के विषयों के शैक्षिक ग्रन्थ/विज्ञान प्रयोगशाला उपकरण/हाथ के औजार/श्रव्य दृश्य साधन, इस देश के 579 मूल शिक्षक-

प्रशिक्षण-संस्थानों को प्रदान किए गए। तीन जहाज भर कर शैक्षिक ग्रंथ प्राप्त किए गए और इस माल को 63 जगहों पर बाँटा गया।

इस परियोजना के अन्तर्गत नार्वे ने 6000 टन छपाई का या आवरण के लिए प्रयुक्त होने वाले कागज का उपहार यूनिसेफ के माध्यम से हमें दिया। अभी तक 3534 टन कागज प्राप्त किया जा चुका है और विभिन्न राज्य सरकारों को बाँटा जा चुका है जिस पर कि वे प्राथमिक और मिडिल कक्षाओं की विज्ञान की पुस्तकें छाप सकें। राज्य सरकारों को जो कागज दिया जाता है, उसके मूल्य की पुस्तकें गरीब और जरूरतमन्द बच्चों को बिना दाम के ही बाँटी जाती हैं।

इस कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण अंग यह रहा है कि देश के स्कूलों और अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों को विज्ञान के किट वितरित किए जाते हैं। विज्ञान के किट को हम एक लघु प्रयोगशाला कह सकते हैं जिसमें मूल औजार, कांच के सामान, रसायन और विज्ञान के बने बनाए कामचलाऊ उपकरण होते हैं। इन उपकरणों से कक्षा में अध्यापक अपने विद्यार्थियों के सम्मुख अपने प्रयोगों को जल्दी से प्रदर्शित कर सकता है जिसकी मदद से विद्यार्थी पाठ्य वस्तु को शीघ्र समझ लेते हैं। अभी तक, विभिन्न राज्यों में मिडिल स्कूल के विज्ञान के 85955 किट और प्राथमिक स्कूलों के विज्ञान के 13302 किट वितरित किए गए हैं। अभी प्राथमिक स्कूलों के लिए 8925 विज्ञान किटों और मिडिल स्कूलों के लिए 23906 विज्ञान किटों की माँग आयी है। इसकी पूर्ति करने का काम किया जा रहा है।

2.2.5 शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग

इस विभाग ने निम्नलिखित गतिविधियाँ कीं—

अनुसंधान

(1) विकासात्मक मानक परियोजना, $5\frac{1}{2}$ से 11 वर्ष

यह परियोजना छः केन्द्रों में चलाई गई। इसका उद्देश्य यह अध्ययन करना था कि बच्चे को स्कूल में मिलने वाली उपलब्धियों के पीछे वातावरण की प्रक्रिया की परिवर्तनशीलता कितना प्रभाव डालती है। केन्द्रों से आने वाली रिपोर्टों की प्रतीक्षा की जा रही है।

(2) सहकारिता परीक्षण विकास

निम्नलिखित दो प्रपत्रों के लिए अंग्रेजी में दो पुस्तकों के लिखने का काम पूरा किया जा चुका है—

(1) 'दि एनसर्ट जेनेरल ऐबिलिटी टेस्ट', और
(2) 'दि एनसर्ट इंटेरेस्ट इन्वेंटरी'।

इनकी समीक्षा अध्यापकों से कराई जाएगी और फिर उनका अनुवाद क्षेत्रीय भाषाओं में किया जाएगा।

(3) रूढ़िवादी अभिवृत्ति परीक्षण की तर्कसंगिता का सी० टी० डी० अध्ययन

यह परियोजना पूरी हो चुकी है और इसकी रिपोर्ट भी लिखी जा चुकी है।

(4) विशिष्ट अथवा अंतरीय अभिवृत्ति परीक्षण माला का और अधिक विकास

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य हिन्दी में ऐसे परीक्षणों की एक माला को उपलब्ध कराना है जिनसे उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में प्रवेश के स्तर पर छात्रों में विकसित हुई योग्यताओं को मापा जा सके। इन परीक्षणों का उपयोग मार्गदर्शन, परामर्श और अनुसंधान के लिए हो सकेगा, ऐसी उम्मीद की जानी चाहिए। माला (बैटरी) के वर्तमान रूप में ग्यारह उप-परीक्षण हैं जो छः पुस्तिकाओं के रूप में हैं—(1) शब्दों का अर्थ, (2) मौखिक तर्क पद्धति, (3) क्रिया विषयक इस्तेमाल, (4) अल्प तर्क-पद्धति, (5) दो आयामों में अन्तराल की कल्पना, (6) तीन आयामों में अन्तराल की कल्पना, (7) संख्याओं की माला, (8) गणित की समस्याएँ, (9) प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक समानताएँ, (10) जोड़, और (11) घटाना।

परीक्षणों को आजमाया गया और विषयों का विश्लेषण किया गया। विषय-विश्लेषण के बाद उनके आधार पर विषयों का चुनाव हुआ और इस चुनाव के बाद चुने गए विषयों के अन्तिम रूपों को तैयार किया गया। अंतिम रूपों को वृहद नमूनों पर चलाया गया ताकि मानक निकालने के लिए आधार सामग्री का संचयन हो सके। मानक प्राप्त कर लिए गए हैं। परीक्षण की विश्वसनीयता के बारे में सूचना संकलित की जा रही है और पुस्तिका का निर्माण हो रहा है।

(5) पहली पीढ़ी के अधिगम कर्त्ताओं पर सहकारी अनुसंधान

इस अध्ययन का उद्देश्य दो प्रकार से है—(क) पहली पीढ़ी के अधिगम-कर्त्ताओं की पृष्ठभूमि, जरूरतों, समस्याओं, कल्पनाओं, अभिवृत्तियों और ज्ञानात्मक विकास की प्रगति और समझ का अध्ययन करना। (ख) छात्र के शैक्षिक एवं व्यावसायिक विकास को प्रभावित करने वाली सांस्कृतिक वंचनाओं के प्रभाव का अध्ययन।

इस अध्ययन की रिपोर्ट तैयार है जिसके आधार पर और आगे का काम किया जाएगा।

(6) उन लड़कों का अध्ययन जिनमें श्रेष्ठ रूढ़िवादी योग्यता है

तीन अध्ययन पूरे हो चुके हैं।

(7) किशोर व्यक्तित्व की सूची

निर्देशों की नियमावली लगभग तैयार है और उम्मीद है कि शीघ्र ही उसे छपने के लिए भेज दिया जाएगा। रिपोर्ट का लेखन भी हो रहा है।

(8) कार्यक्रमित शिक्षण में माध्यम के प्रभाव का एक अध्ययन

अध्ययन के एक भाग के रूप में, एक बहु-माध्यम कार्यक्रमित पाठ, जिसमें

फिल्म स्क्रिप्टें, टेप और छात्र अभ्यास पुस्तिका शामिल हैं, बनाया जा चुका है और एक ग्रुप परिस्थिति में आजमाया भी जा चुका है। कार्यक्रम की कुशलता की जांच के लिए भी अध्ययन को चलाया जा चुका है। इसकी प्रभविष्णुता की तुलनात्मक जाँच के लिए यह भी देखा जा चुका है कि उसी पाठ को बहु-माध्यम कार्यक्रम से चलाने पर कैसा प्रभाव होता है और उसी पाठ को पुस्तक रूप में विकसित कर चलाने पर क्या प्रभाव पड़ता है।

(9) एशियाई शिक्षकों के सामने आने वाली समस्याओं और कक्षा शिक्षण में नवाचार के प्रति उनकी प्रवृत्तियों का सर्वेक्षण

यह परियोजना पूरी हो चुकी है।

प्रशिक्षण और विस्तार के कार्यक्रम

(1) शिशु-विकास पर एक कम समय वाला प्रशिक्षण कोर्स

पूना में 21-1-75 से 4-2-75 तक चलाया गया। इसमें भाग लेने वाले लोग पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थानों के अध्यापक-प्रशिक्षक थे। ये प्रतिभागी महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु और केरल के राज्यों से आए थे।

(2) शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन में डिप्लोमा कोर्स—1974-75

यह विभाग का नियमित कार्य है। हाई स्कूल और हायर सेकेण्डरी स्कूलों के मार्गदर्शक ब्यूरो में काम करने वाले परामर्शदाताओं को और कालेजों तथा विश्वविद्यालयों में काम करने वाले मार्गदर्शन के अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए नौ महीने का यह कोर्स बनाया गया है। इस कोर्स ने 21 व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया, जिनमें से सात काम पर लगा दिए गए। प्रशिक्षणार्थी इन राज्यों से आये थे—दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र, नागालैण्ड और तमिलनाडु।

(3) अध्यापक-व्यवहार-शैली और उसका छात्र की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पर कार्यशाला

तीसरी कार्यशाला मार्च 1975 में कलकत्ता में आयोजित की गयी थी जिसमें उड़ीसा और पश्चिमी बंगाल के 17 व्यक्तियों ने भाग लिया था।

(4) दूसरे स्तर की कक्षा सेटिंग में व्यवहार सुधार पर संगोष्ठी

इस संगोष्ठी का उद्देश्य यह था कि इसमें भाग लेने वाले लोग परिचालन धारणाओं से और व्यवहार संशोधनों एवं चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण अनुभव सिद्ध अनुसंधान से परिचित हो सकें। यह उद्देश्य भी था कि भारतीय परिस्थिति में उपयुक्त व्यवहार संशोधनों के तरीकों को वे विकसित कर सकें। यह संगोष्ठी राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के परिसर (कैम्पस) में फरवरी, मार्च 1975 में हुई थी।

(5) जिला शिक्षा अधिकारियों के लिए मार्गदर्शन पर एक अनुकूलन संगोष्ठी

जनवरी 1975 में हरियाणा के सभी जिला शिक्षा अधिकारियों के लिए गुड़गाँव में तीन-दिनों-वाला एक कार्यक्रम हुआ।

(6) कार्य क्रमित अधिगम में नवाँ आनुक्रमिक कोर्स (दूसरा चरण)

इसका उद्देश्य विभिन्न संस्थाओं के लोगों को प्रशिक्षित करना था। ये संस्थाएँ हैं—शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, रक्षा सेवाएँ तथा कार्य-क्रमित अधिगम की तकनीक बताने वाली अन्य संस्थाएँ। कोर्स का उद्देश्य नेतृत्व शक्ति पैदा करना और कार्यक्रमित सामग्री का विकास करना भी था।

द्वितीय चरण के प्रतिभागियों की संख्या उन्नीस थी और यह सूरत के दक्षिणी गुजरात के विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में हुआ था। मैसूर, दिल्ली, महाराष्ट्र, गुजरात, केरल, उत्तरप्रदेश, पश्चिमी बंगाल, हिमाचल प्रदेश और उड़ीसा के प्रति-निधियों ने इसमें भाग लिया था।

2.3 सेवा/उत्पादन विभाग

2.3.1 पाठ्यपुस्तक विभाग

यह विभाग पाठ्यपुस्तकों के सुधार, विशेषकर उनके मूल्यांकन तथा परीक्षा-सुधार से सम्बद्ध रहा है।

(क) पाठ्यपुस्तकों का सुधार

इस अवधि के महत्त्वपूर्ण कार्य

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, राष्ट्रीय एकता के दृष्टिकोण से अंग्रेजी माध्यम वाले स्कूलों में इस्तेमाल होने वाली पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन का कार्यक्रम पाठ्यपुस्तक विभाग ने अपने हाथ में लिया। पाठ्यपुस्तकों की अन्तिम सूची बनाई गई, विशेषज्ञ मूल्यांकन कर्त्ताओं के नाम इकट्ठे किए गए और पुस्तकों को उनके पास मूल्यांकन के लिए भेजा गया। मूल्यांकन रिपोर्टों की प्रतीक्षा की जा रही है। अन्तिम रूप से समीक्षा के लिए इनको एक विशेषज्ञ समिति के सम्मुख पेश किया जाएगा।

महत्त्वपूर्ण अनुसंधान अध्ययन जो पूरे हुए या छापे गए

विभाग ने निम्नलिखित अध्ययनों अथवा अनुसंधानों को पूरा कर लिया और उनकी रिपोर्टें बना लीं—

1. प्राथमिक कक्षाओं के लिए बाङला, गुजराती, हिन्दी (रा० शै० अ० प्र० प० की), हिन्दी (उ० प्र० की), तेलुगु और उर्दू की मातृभाषा की पाठ्यपुस्तकों का एक तुलनात्मक अध्ययन।

2. शिक्षणात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए, भाषा की पाठ्यपुस्तकों में शामिल की जाने वाली विभिन्न प्रकार की श्रेणियों की विषय-वस्तु का योगदान (द्वितीय चरण)।
3. भारत में राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तकों की स्थिति का एक अध्ययन।
4. विभिन्न राज्यों एवं संघ क्षेत्रों में पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तन के बारे में एक अध्ययन।

विकास की प्रमुख गतिविधियां

निम्नलिखित सामग्री तैयार की गई या मिमियोग्राफ की गई—

1. बाल-साहित्य की सटीक सूची।
2. सामाजिक विज्ञानों एवं विज्ञानों की पाठ्यपुस्तकों के लेखकों एवं समीक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रिपोर्टें।
3. पाठ्यपुस्तकों के सम्पादन पर पुस्तिका।
4. विभिन्न स्कूल विषयों के मूल्यांकन उपकरणों के संशोधित संस्करण।
5. मिडिल स्कूल स्तर के लिए अंग्रेजी में पूरक पठन सामग्री के मूल्यांकन का एक उपकरण।
6. पाठ्यपुस्तकों के क्षेत्र में अनुसंधान के विषयों का सुझाव देने वाली एक सूची।

प्रशिक्षण और विस्तार के कार्यक्रम

विभाग ने प्रशिक्षण और विस्तार के निम्नलिखित कार्यक्रम हाथ में लिए—

1. सामाजिक विज्ञानों की पाठ्यपुस्तकों के लेखकों और मूल्यांककों के लिए अखिल भारतीय प्रशिक्षण कार्यक्रम।
2. विज्ञान और गणित की पाठ्यपुस्तकों के लेखकों और मूल्यांककों के लिए अखिल भारतीय प्रशिक्षण कार्यक्रम।
3. मध्यप्रदेश के मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम के सहयोग से, विभिन्न विषय क्षेत्रों की पाठ्यपुस्तकों के लेखकों के लिए अनुकूलन कार्यशाला।
4. पाठ्यपुस्तकों के सम्पादन पर अखिल भारतीय संगोष्ठी।

अन्य कार्यक्रम

1. 1974-75 के लिए और अगले पाँच वर्षों के लिए भी कागज की जरूरतों के आँकड़े देश की राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तक तैयार करने वाली संस्थाओं से एकत्र किए गए और भारत सरकार के शिक्षा-मन्त्रालय को भेजे गए ताकि जरूरी व्यवस्थाएँ की जा सकें।

2. महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक उत्पादन और पाठ्यक्रम अनुसंधान बोर्ड ने प्रार्थना की थी कि उनकी पाठ्यपुस्तकों पर उत्पादन शुल्क माफ हो जाना चाहिए। इसके लिए आवश्यक कार्यवाही की गई। इस बारे में मंत्रालय के निर्णय को राज्यों अथवा संघ क्षेत्रों की सभी पाठ्यपुस्तक एजेंसियों तक पहुँचाया गया।
3. विभाग ने राष्ट्रीय पाठ्य सामग्री केन्द्र के लिए किताबें प्रदान करना जारी रखा।
4. रामचरित मानस की चतुश्शती मनाने के लिए एक अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई।

(ख) परीक्षा-सुधार

परीक्षा-सुधार के क्षेत्र में, विशेषतः स्कूली एवं वाह्य परीक्षा-प्रणाली में महत्त्वपूर्ण संशोधन दिखाई दे रहा है। कुछ राज्यों में तो यह परिवर्तन स्पष्ट लक्षित हो रहा है और कुछ राज्य इस परिवर्तन का परिवेश तैयार करने में संलग्न हैं। यही नहीं वरन् कुछ ही वर्षों में अनेकों राज्यों में परीक्षा सुधार योजना को कार्यरूप में परिणत करने, योजना बनाने एवं उसका मूल्यांकन करने के लिए एक सुगठित संचालन-प्रणाली भी कार्य करने लगी है।

इस प्रायोजना के विज्ञान सम्मत होने के कारण पड़ौसी देशों ने भी इसमें रुचि प्रदर्शित की हैं, यह वस्तुतः बड़े सन्तोष का विषय है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा राजस्थान में प्रायोगिक प्रायोजना के स्थापन से विकसित परीक्षा प्रतिमान का श्री लंका में भी स्वागत किया गया है। नेपाल ने भी अपने परीक्षा सुधार शाखा के अधिकारियों के राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् में प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् अब एक सहयोगी सुधार योजना का सूत्रपात किया है।

राज्यों के साथ जो विशेष कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए हैं, उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं—

1. असम में परीक्षा सुधार कार्यक्रम

गौहाटी के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, असम ने संशोधित प्रकार के परीक्षा प्रश्न पत्रों को एच० एस० आई० सी० परीक्षा में 1977 से प्रारम्भ करना निश्चित किया है। एवं 1978 से एच० एस० एस० आई० सी० परीक्षा में भी। बोर्ड ने उपर्युक्त परीक्षाओं में सुधार के कार्यक्रम को कार्य रूप में परिणत करने के लिए एक प्रावस्था प्रायोजना भी विकसित कर ली है।

इसी सम्बन्ध में 1974 के अगस्त और नवम्बर के महीनों में दो कार्यशालाएँ संयोजित की गयीं, जिनका उद्देश्य राज्य के मुख्य अधिकारियों को संशोधित प्रणाली

के अंग्रेजी, गणित शास्त्र, समाज शास्त्र एवं सामान्य विज्ञान के प्रश्न-पत्र तैयार करने का प्रशिक्षण देना था ।

2. मणिपुर में परीक्षा सुधार कार्यक्रम

1973-74 में हुई प्रश्न पत्र बनाने वालों की कार्यशाला के परिणामस्वरूप, मणिपुर ने अपनी उच्चतर माध्यमिक परीक्षा में काफी परिवर्तन कर लिए हैं । इस वर्ष का प्रस्ताव है कि हिन्दी, मणिपुरी, अंग्रेजी, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र और अर्थशास्त्र में नमूने की मूल्यांकन सामग्री विकसित की जाए और प्रश्न पत्र बनाने वालों को प्रशिक्षण दिया जाए । इस उद्देश्य से दिसम्बर 1974 में, इम्फाल में एक कार्यशाला आयोजित की गई और संशोधित प्रकार की परीक्षण सामग्री तैयार करने की तकनीक में पचास प्रश्न पत्र बनाने वालों को प्रशिक्षित किया गया ।

3. उड़ीसा में परीक्षा-सुधार कार्यक्रम

उड़ीसा के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं में अपेक्षित सुधार लाने की दृष्टि से एक प्रावस्थिक कार्यक्रम, रिपोर्ट अवधि में चलाया और विकसित किया गया । इस विभाग ने आगे और भी सहायता बोर्ड को प्रदान की । यह सहायता दिसम्बर 1974 में प्रश्न पत्र बनाने वालों की दो कार्यशालाएँ आयोजित करने के रूप में थी । इन कार्यशालाओं का उद्देश्य अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र और सामान्य विज्ञान में संशोधित किस्म की परीक्षण सामग्री तैयार करना और राज्य के मुख्य अधिकारियों को इस दिशा में प्रशिक्षित करना था ।

4. तमिलनाडु में आंतरिक मूल्यांकन का कार्यक्रम

चुने हुए 240 स्कूलों में आंतरिक मूल्यांकन की एक व्यापक स्कीम चलाने के विचार से तमिलनाडु ने एक प्रावस्थिक कार्यक्रम पहले से ही विकसित कर रखा है । यह स्कीम विकसित की गई और 1973-74 के दौरान इस विभाग की सहायता से राज्य के मुख्य अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया । इस वर्ष दो-दो दिनों वाली दो कार्यशालाएँ मदुरै और मद्रास में, मार्च 1975 में आयोजित की गयीं । इन कार्यशालाओं में उन स्कूलों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिनमें आंतरिक मूल्यांकन की एक व्यापक स्कीम चालू है । कार्यशालाओं का उद्देश्य स्कीम की सफलता की समीक्षा करना और जरूरत पड़ने पर सुधारों-संशोधनों को उसमें शामिल करना था ।

(ग) बाल-साहित्य के लिए उन्नीसवीं राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता

उन्नीसवीं राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता में हिन्दी की 13 किताबें और देश की क्षेत्रीय भाषाओं की 10 किताबें सर्वश्रेष्ठ निर्णीत की गयीं । पिछले वर्षों की पुरस्कृत पुस्तकों की कुछ प्रतियां खरीद कर विभिन्न स्कूलों के पुस्तकालयों को प्रदान की गयीं ।

पुरस्कृत पुस्तकों की एक सूची विभिन्न राज्यों के शिक्षा-अधिकारियों के पास भेजी गयीं ताकि वे स्कूलों के पुस्तकालयों के लिए उन्हें खरीद सकें।

बाल-साहित्य के लिए उन्नीसवीं राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता (1974-75) के परिणाम

क्रम संख्या	भाषा	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम
(1)	असमिया	(1) एखन देश अलख मानू (2) मुकुटमाला	बी० के० मेधी
(2)	बाङ्ला	लेनिन	आर० एस० राय
(3)	गुजराती	मोटने हाथ ताली	के० देसाई
(4)	हिन्दी	भारत मेरा देश	ए० बेगार
(5)	हिन्दी	महाराजा रणजीतसिंह	के० बग्गा
(6)	कन्नड	सम्राट अशोक	
(7)	मलयालम	नमुक्कु चुट्टमुल्ला	जी० करनेवार
(8)	मराठी	चम्बलेची मुलें	एस० शिरोलकर
(9)	सिन्धी	झिरमिर	ए० बेदी
(10)	तमिल	नल्ल कैंगल	एस० सुन्दरराजन
(11)	तेलुगु	अकासानी छूदम	ए० वी० एस० रामाराव
(12)	पंजाबी	जंगली जीवन दा संसार	धनवंतसिंह शीतल

2.3.2 शिक्षण साधन विभाग

शिक्षण साधन विभाग का काम है—शिक्षण के लिए सहायक साधनों का उत्पादन करना। यह विभाग शैक्षिक संस्थानों/प्राइवेट फर्मों/व्यक्तियों को शिक्षण साधनों के उत्पादन के लिए प्रोत्साहित करता है। प्रोत्साहन के लिए यह विभाग प्रतियोगिताएँ आयोजित करता है और सफल हुए व्यक्तियों को पुरस्कार प्रदान करता है। शिक्षण के लिए सहायक साधनों को उत्पादित करने और इस्तेमाल करने के वास्ते यह विभाग प्रशिक्षण भी दिलवाता है। फिल्म प्रोजेक्टर, फिल्म स्ट्रिप प्रोजेक्टर, टेप रेकार्डर, एपिडिस्कोप, ओवर हेड प्रोजेक्टर, कैमरों जैसे जटिल श्रव्य दृश्य उपकरणों को इस्तेमाल करने और रख रखाव के लिए भी प्रशिक्षण दिया जाता है। फिल्म और फिल्म स्ट्रिप जैसी शैक्षिक साधन सामग्री को यह विभाग देश भर के शैक्षिक संस्थानों को उधार भी देता है। राज्यों के श्रव्य दृश्य शिक्षा केन्द्रों और राज्य शिक्षा संस्थानों को श्रव्य दृश्य साधनों के विकास के लिए शिक्षण साधन विभाग नेतृत्व भी प्रदान करता है।

प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रम

(1) श्रव्य दृश्य शिक्षा में प्रशिक्षण कोर्स

इस विभाग ने श्रव्य दृश्य शिक्षा के लिए एक छः-सप्ताहीय प्रशिक्षण कोर्स 17 जून से 27 जुलाई 1974 तक चलाया। यह कोर्स भारत भर के शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों/शिक्षा संस्थानों के अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए था। इस कोर्स में भारत भर के बाइस प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

(2) ग्रैफिक साधनों में प्रशिक्षण कोर्स

इस विभाग ने ग्रैफिक साधनों के लिए एक प्रशिक्षण कोर्स 15 नवम्बर से 12 दिसम्बर, 1974 तक चलाया। यह कोर्स अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालयों/राज्य शिक्षा संस्थानों के अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए था। कोर्स इस दृष्टि से आयोजित किया गया था कि एक सामान्य चेतना और सराहना (समझ) कला के मूल आधारों और सजावट के प्रति जाग सके। इस चेतना से ही ग्रैफिक सामग्री का चयन, उपयोगिता एवं तैयारी सम्भव हो सकेगी।

(3) प्रोजेक्ट किए जाने वाले साधनों का एक छः-सप्ताहीय प्रशिक्षण कोर्स

चार फरवरी 1975 से प्रोजेक्ट किए जाने वाले साधनों का एक प्रशिक्षण कोर्स 6 सप्ताहों के लिए विभाग द्वारा चलाया गया। इसमें नौ अध्यापक-प्रशिक्षकों ने भाग लिया।

(4) उदयपुर के राज्य शिक्षा संस्थान में श्रव्य-दृश्य शिक्षा का प्रशिक्षण कोर्स

उदयपुर के राज्य शिक्षा संस्थान के सहयोग से इस विभाग ने श्रव्य-दृश्य शिक्षा का एक प्रशिक्षण कोर्स चलाया। राजस्थान के सत्रह अध्यापक-प्रशिक्षकों ने इस कोर्स में भाग लिया।

फिल्मों का निर्माण

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग के सहयोग से, स्कूल पाठ्यक्रम से सम्बन्धित नीचे लिखी फिल्मों का निर्माण विभाग ने किया—

(1) भौतिकी किट भाग I
(2) भौतिकी किट भाग II
(3) भौतिकी किट भाग III
(4) कोशाणु अध्ययन के उपकरण और तकनीक
(5) अपने जीव विज्ञान किट को जानो भाग I (शरीर विज्ञान)
(6) अपने जीव विज्ञान किट को जानो भाग II (जन्तु विज्ञान)
(7) अपने जीव विज्ञान किट को जानो भाग III (वनस्पति विज्ञान)

समीक्षा अवधि के दौरान विभाग ने राष्ट्रीय एकता से सम्बन्धित एक 16 मिली मीटर की फिल्म का निर्माण किया। फिल्म का नाम है 'साथ-साथ रहना।' इसका एक छोटा संस्करण भी बनाया गया है ताकि उसे देश भर में प्रदर्शित किया जा सके।

देश के बाहर फिल्मों का प्रदर्शन

भौतिकी-शिक्षण के अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन के अन्तर्गत निम्नलिखित चार फिल्मों को एडिनबरा में होने वाली फिल्म प्रदर्शनी में प्रदर्शित करने के लिए चुना गया है—

(1) प्रारम्भिक भौतिकी पढ़ाना
(2) भौतिकी किट भाग I
(3) भौतिकी किट भाग II
(4) भौतिकी किट भाग III

2.3.3 प्रकाशन विभाग

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के सभी प्रकाशनों के सम्पादन, मुद्रण और वितरण का काम प्रकाशन विभाग के जिम्मे है। परिषद् के प्रकाशन निम्नलिखित श्रेणियों में बाँटे जा सकते हैं—

1—कोर्स में निर्धारित और नमूने की पाठ्यपुस्तकें, अभ्यास पुस्तकें, सुलेख पुस्तकें, इन पुस्तकों की अध्यापक दर्शिकाएँ आदि।

2—चौदह से सत्रह वर्ष के आयु वर्ग वालों के लिए पूरक पठन अर्थात् सहायक पुस्तकें।

3—शोध ग्रन्थ और अन्य विकास सम्बन्धी सामग्री जैसे कि शिक्षक के लिए सहायक पुस्तकें, कक्षा अध्यापन की तकनीक अथवा मूल्यांकन पर शैक्षणिक इकाइयाँ, पुस्तिकाएँ अथवा पुस्तकें आदि। शैक्षिक अधिवेशनों, व कार्यशालाओं आदि की रिपोर्टें।

4—परिषद् द्वारा प्रकाशित किए जाने वाले पत्र—

(1) 'जर्नल आफ इण्डियन एजूकेशन'
(2) 'इण्डियन एजूकेशनल रिव्यू'
(3) 'स्कूल साइंस'
(4) 'एनसर्ट न्यूजलेटर'।

ऊपर गिनाए गए कामों के अलावा परिषद् का प्रकाशन विभाग दिल्ली के कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज़ के छात्रों को दो-तीन सप्ताह वाले प्रैक्टिकल ओरिएंटेशन प्रोग्राम भी करवाता है। इसके साथ ही जब-तब अन्य राष्ट्रीयकृत प्रकाशन संस्थानों के व्यावसायिक अधिकारी भी यहाँ आकर अध्ययन करते हैं और नवाचार ग्रहण करते हैं।

प्रकाशन विभाग प्रति वर्ष सौ-दो सौ पुस्तकें (मूल संस्करण और पुनर्मुद्रण दोनों ही) प्रकाशित करता है। विभाग के प्रकाशनों की सालाना बिक्री 35 से 45 लाख रुपयों तक की होती है।

रिपोर्ट की अवधि में विभाग ने 111 पुस्तकें प्रकाशित कीं जिनमें मूल संस्करण के साथ-साथ पुनर्मुद्रण या संशोधित संस्करण भी शामिल हैं। सारिणी *VI* में श्रेणी बद्ध विवरण दिया हुआ है।

सारिणी VI

प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित की गयी सामग्री की विभिन्न श्रेणियाँ

श्रेणी	प्रकाशनों की संख्या
पाठ्य पुस्तकें, अभ्यास पुस्तिकाएँ सुलेख पुस्तिकाएँ और शिक्षक दर्शिकाएँ	84
पूरक पठन की पुस्तकें	4
अनुसंधान ग्रंथ और विकास की अन्य सामग्री	11
पत्र-पत्रिकाएँ	12
जोड़	111

पाठ्यपुस्तकों के सम्बन्ध में विभाग के काम की एक विशेषता यह रही कि प्रथम संस्करण वाली बारह पाठ्य पुस्तकों को, जिनको केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की 10+2 प्रणाली के अन्तर्गत प्रकाशित करना था बहुत ही कम समय में सम्पादित कर मुद्रित कर दिया गया। इसमें प्रति पुस्तक औसत समय साढ़े चार महीने लगा। प्रकाशित हुई पुस्तकों की सूची परिशिष्ट 'ख' में दी गई है।

2.3.4 कारखाना विभाग

कारखाना विभाग ने नई शिक्षा प्रणाली 10+2 के अन्तर्गत कक्षा नौ, दस, ग्यारह और बारह के लिए विज्ञान किटों का बनाना जारी रखा। इस विभाग ने कुछ प्रदर्शों और सचल विज्ञान ट्रेलर प्रयोगशाला का माडल बनाया है। इस बात के लिए प्रयत्न हो रहे हैं कि इस ट्रेलर को असली आकार में बनाया जाए ताकि उसको दूर दराज के गाँवों के अंदरूनी हिस्सों में भी ले जाया जा सके। पारम्परिक उपकरणों के कुछ सस्ते सामान भी बनाए गए। घरेलू मरम्मत के लिए एक कार्य अनुभव औजार किट का निर्माण भी किया गया। रिपोर्टाधीन समय में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के लिए शैक्षिक किटों का भी निर्माण किया गया।

उत्पादन

विज्ञान परियोजना के प्रथम चरण के लिए विभाग ने विज्ञान किटों के उत्पादन का काम हाथ में लिया। यह काम उन राज्यों अथवा संघ क्षेत्रों के लिए किया गया है जो परियोजना में बाद में शामिल हुए हैं। इन किटों के उत्पादन में जो खर्च आएगा वह यूनिसेफ द्वारा विभाग को वापस मिल जाएगा। उत्पादित किए गए किटों की सही संख्या नीचे दी जा रही है—

1. प्राथमिक विज्ञान किट	200
2. भौतिकी किट भाग I	300
3. भौतिकी किट भाग II	250
4. जीव विज्ञान मिश्रित किट	250
5. रसायन विज्ञान मिश्रित किट	250

प्रशिक्षण

(1) रिपोर्ट काल के दौरान विभाग के प्रशिक्षुता कार्यक्रम के अन्तर्गत आठ प्रशिक्षणार्थी थे।

(2) विभाग ने दो-दो तीन-तीन सप्ताहों की अवधि वाले तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। ये जनवरी 1975 में हुए। ये कार्यक्रम विज्ञान किटों के निरीक्षण और गुणवत्ता-नियन्त्रण के लिए विभिन्न राज्यों और संघ क्षेत्रों के साधन व्यक्तियों के लिए हुए थे।

(3) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के कारखाना विभाग को यूनेस्को और यूनिसेफ ने स्कूल विज्ञान साज सामान के क्षेत्र में एक प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में मान्यता प्रदान कर दी।

सेवाएँ

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों को; इस विभाग के ऑटोमोबाइल एकक, एयर कंडीशनिंग और रूम कूलर्स एकक और इलैक्ट्रिकल गैजेट एकक जैसे एककों द्वारा सेवाएँ प्रदान करने का काम जारी रहा। विभाग को एक नया काम मिला है—पूरी परिषद् के लिए फर्नीचर का प्रबन्ध करना, केन्द्रीय खरीद व रख-रखाव रखना। इस जिम्मेदारी को भी विभाग बखूबी निभा रहा है।

2.4 एकक

2.4.1 सर्वेक्षण एवं आधार सामग्री प्रक्रिया एकक

इस एकक का प्रमुख कार्य राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के अन्य विभागों को उनके सर्वेक्षण, अध्ययन और अन्वेषण के कामों में सहयोग प्रदान करना है। आधार सामग्री के संकलन, विश्लेषण और कम्प्यूटर द्वारा आधार सामग्री पर की जाने वाली प्रक्रिया में विभागों की मदद करना भी इस एकक की जिम्मेदारी है। इन कामों के अलावा,

समय समय पर परिषद् और शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय के सुझावों पर यह एकक अध्ययन-अन्वेषण के काम भी करता है ।

महत्वपूर्ण कार्य

समीक्षा के अन्तर्गत अवधि में एकक ने तीसरे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण का काम जारी रखा । इसके लिए एकक ने राज्यों और संघ क्षेत्रों की सहायता उनके हाथ द्वारा तैयार की जाने वाली जिला और राज्य स्तर की सारिणियों के विश्लेषण और अंतिमीकरण के रूप में की । कुछ राज्यों में काम में देर लग रही थी । वहाँ पर एकक के कर्मचारियों ने ब्लॉक सारिणियाँ तक स्वयं बनाकर उन राज्यों की मदद की । हाथ द्वारा प्रक्रिया करके तैयार की जाने वाली सारिणियाँ बीस राज्यों और संघ क्षेत्रों से प्राप्त हुईं । इन सारिणियों को सही और सुसंगत सूचनाओं के लिए जाँच लिया गया है । कुछ महत्त्वपूर्ण सारिणियों का सार निकाल कर उन्हें मिमियोग्राफ कर लिया गया है । इन सारिणियों में निम्नलिखित सूचनाएँ हैं—

ब्लॉकों की संख्या, गाँव, आवास, शहरी क्षेत्र, वर्तमान अनुमानित आबादी, विभिन्न स्कूल स्तरों के स्कूलों की संख्या, विभिन्न स्कूल स्तरों की दृष्टि से विविध जनसंख्या वर्गों के अंतर्गत आवास क्षेत्रों में स्कूल-सुविधा की प्राप्ति, विभिन्न स्कूल स्तरों पर लिंग की दृष्टि से प्रवेश-सूची, इन्हीं स्तरों पर आयु की दृष्टि से प्रवेश-सूची ।

जनगणना संचालन के निदेशक के साथ संलग्न सोलह पंचिंग केन्द्रों में कम्प्यूटर प्रक्रियाओं से सम्बद्ध आधार सामग्री की पंचिंग राज्यों के सभी केन्द्रों में ठीक से चल रही है और गुजरात, मेघालय, राजस्थान, और त्रिपुरा के लिए पंचिंग का काम पूरा हो चुका है । अन्ध्र प्रदेश, और उड़ीसा के लिए पंचिंग का काम लगभग पूरा होने वाला है । कम्प्यूटर प्रक्रियाओं से सम्बन्धित सारिणियों को अन्तिम रूप देकर रजिस्ट्रार जैनेरल के उस कार्यालय को सौंपा जा चुका है, जो इस काम के लिए जिम्मेवार है ।

जिन आठ अनुसूचियों को कम्प्यूटर द्वारा किया जाना है, उनमें से केवल तीन को ही रजिस्ट्रार जैनेरल के कार्यालय द्वारा सम्पन्न होना है । बाकी बची पाँच अनुसूचियों को इस एकक द्वारा किया जाना है । इन का पंचिंग का काम ठीक चल रहा है ।

अन्य कार्यक्रम

मेघालय में शिक्षा के व्यापक सर्वेक्षण का काम शुरू करने के लिए यह एकक मेघालय सरकार को सहयोग दे रहा है । मेघालय में शिक्षा सर्वेक्षण का यह काम उन्हीं लीकों पर होगा जिन पर इस एकक ने पहले मणिपुर में ऐसा व्यापक शिक्षा सर्वेक्षण किया था ।

आधार सामग्री प्रक्रिया

वर्ष 1974-75 के दौरान, निम्नलिखित परियोजनाओं का आधार सामग्री प्रक्रिया का काम इस एकक ने अपने हाथ में लिया—

(1) राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज परीक्षा, 1974 (राष्ट्रीय प्रतिभा खोज एकक)
(2) किशोर व्यक्तित्व सूची परियोजना (शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग)
(3) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की विभिन्न नौकरि के लिए आवेदन करने वालों के बायो-डाटा की कम्प्यूटर प्रक्रिया (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का सचिवालय)
(4) एस० ए० परीक्षा की तर्कसंगति का विश्लेषण (शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग)
(5) डी० एन० पी० आधार सामग्री का विश्लेषण (दिल्ली केन्द्र)
(6) राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज की आधार सामग्री का विश्लेषण, 1975 (राष्ट्रीय प्रतिभा खोज एकक)

2.4.2 राष्ट्रीय प्रतिभा खोज एकक

देश की विज्ञान प्रतिभाओं को पहचान निकालने और उनकी प्रतिभा के पोषण-रक्षण के लिए बनायी गयी राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना को संभालना ही इस एकक का मुख्य कार्य है। राष्ट्र व्यापी स्तर पर होने वाली परीक्षा के आधार पर, बुनियादी विज्ञान (जिसमें गणित और कृषि भी शामिल हैं) में हर साल 350 वजीफे दिए जाते हैं। गणित के लिए दस विशेष छात्रवृत्तियों की व्यवस्था भी है। 1974 में 8804 छात्रों ने यह परीक्षा दी, जिनमें से लगभग 943 प्रत्याशी साक्षात्कार के लिए सफल हुए और 358 प्रत्याशी अन्तिम रूप से छात्रवृत्तियों के लिए चुने गए। वजीफा पाने वाले प्रत्याशियों की संख्या का राज्यानुसार विवरण सारिणी VII में दिया गया है।

एकक द्वारा एक नियमित अनुवर्ती कार्यक्रम छात्रवृत्ति पाने वालों के लिए लिया जाता है। 1974-75 के दौरान अवर-स्नातक-स्तर पर चुने गए छात्रों को उच्च शिक्षा के विभिन्न केन्द्रों के बारह ग्रीष्मकालीन स्कूलों में भेजा गया। एम० एस सी० प्रत्याशियों को विभिन्न राष्ट्रीय विज्ञान प्रयोगशालाओं और उच्च शिक्षा के संस्थानों में भेजा गया। और पी एच० डी० के प्रत्याशियों पर, उनकी अनुसंधान परियोजनाएँ पूरी कराने के लिए, व्यक्तिगत ध्यान दिया गया।

राज्य शिक्षा विभागों के अधिकारियों की पाँच क्षेत्रीय सभाएँ इस वर्ष के दौरान भोपाल, मद्रास, कलकत्ता, पूना और हैदराबाद में हुईं। राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना के अनुवर्ती कार्यक्रम और उसको राज्यों में लागू करने के बारे में सारी बातों पर विस्तार से विचार-विमर्श हुआ।

सारिणी VII

राष्ट्रीय विज्ञान-प्रतिभा-खोज छात्रवृत्तियों के लिए 1974 में चुने गए प्रत्याशियों की संख्या का राज्यानुसार विवरण

क्र० सं०	राज्य/संघ क्षेत्र का नाम	परीक्षाओं में भाग लेने वाले प्रत्याशियों की संख्या	साक्षात्कार के लिए बुलाए गए छात्रों की संख्या	छात्रवृत्तियों के लिए चुने गए प्रत्याशियों की संख्या	
				मूल विज्ञान	गणित
1	2	3	4	5	6
1	असम	56	1	...	...
2	आंध्रप्रदेश	598	54	25	1
3	उड़ीसा	167	12	4	0
4	उत्तर प्रदेश	1531	101	52	1
5	कर्नाटक	386	49	24	...
6	केरल	363	55	18	...
7	गुजरात	125	14	4	...
8	जम्मू व कश्मीर	17	3	1	...
9	तमिलनाडु	759	45	19	...
10	त्रिपुरा	...	...	...	...
11	दिल्ली	1010	319	100	2
12	नागालैण्ड	...	...	...	...
13	पंजाब	214	15	4	...
14	पश्चिमी बंगाल	845	92	41	3
15	बिहार	307	33	7	...
16	मणिपुर	...	...	...	...
17	मध्यप्रदेश	900	30	9	...
18	महाराष्ट्र	517	52	18	...
19	मेघालय	9	...	...	...
20	राजस्थान	702	52	18	...
21	हरियाणा	91	4	2	...
22	हिमाचलप्रदेश	55	3	...	...
23	अन्य संघ क्षेत्रों से	162	9	4	...
	कुल	8804	943	350	8

2.4.3 पुस्तकालय एवं प्रलेखन एकक

परिषद् के नई दिल्ली स्थित परिसर (कैम्पस) में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन० आई० ई०) का काफी बड़ा पुस्तकालय है। यह पुस्तकालय विशेष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों/एककों के अनुसंधान कर्मचारियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इसके उपयोगकर्ताओं में वे लोग भी सम्मिलित हैं जो दूसरे अनुसंधान और शैक्षणिक संगठनों में कार्य करते हैं तथा रा० शै० अ० प्र० प० की कार्यकारी समिति के सदस्य हैं। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान परिसर में सारे वर्ष आयोजित सेमिनारों और कर्मशालाओं आदि में आए राज्यस्तर के प्रतिनिधियों और अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों द्वारा भी पुस्तकालय का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त यह पुस्तकालय बहुत-सी स्थानीय संस्थाओं को अन्तर-पुस्तकालय उधार सुविधाएँ भी प्रदान करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान पुस्तकालय में एक लाख से ऊपर पुस्तकें और लगभग 4500 पत्र-पत्रिकाओं के जिल्द बँधे हुए अंक हैं। इनमें लगभग 338 भारतीय तथा विदेशी-पत्र-पत्रिकाएं हैं जो वार्षिक चन्दा देकर प्राप्त की जाती हैं और लगभग 76 बिना मूल्य के प्राप्त होती हैं।

पुस्तकालय के कार्यक्रमों और सभी योजनाओं के लिए सलाह देने की एक पुस्तकालय सलाहकार समिति है। इस वर्ष के दौरान इसकी एक बैठक हुई।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान पुस्तकालय के लिए उपयुक्त पुस्तकों को छांटने के लिए एक पुस्तकालय उप-समिति है। इस समिति में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों का एक-एक प्रतिनिधि रहता है। प्रतिवेदन वर्ष में इस समिति की चार बैठकें हुईं। प्रतिवेदन वर्ष में 346 नई पुस्तकें पुस्तकालय में बढ़ाई गयीं। इन नई पुस्तकों की एक सूची राष्ट्रीय शिक्षा-संस्थान के सब विभागों में घुमाई गई।

पुस्तकालय खंड की डिजाइन, पुस्तकालय की पूर्ण सामर्थ्य और पुस्तकालय के स्टाफ की आवश्यकताओं व उनके वेतनमानों के संबंध में केशवन समिति की सिफा-रिशों को चरणबद्ध रूप में लागू किया जा रहा है।

भवन निर्माण के प्रथम चरण में 34000 वर्ग फुट फर्श क्षेत्र पर एक काम-चलाऊ इमारत बनाने के लिए कार्रवाई हो चुकी है। इसके लिए अनुमानित खर्च 25 लाख रुपए होगा। इस काम के लिए जो धनराशि स्वीकृत हुई है, उसका एक भाग केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (सी० पी० डबल्यू० डी०) को इस वर्ष के दौरान दिया जा चुका है। उम्मीद है कि इमारत का निर्माण-कार्य अगले वर्ष शुरू हो जाएगा।

2.4.4 नीति नियोजन एवं मूल्यांकन एकक

यह राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की सबसे बाद में जन्मीं इकाइयों में से एक है।

इसकी स्थापना जून 1974 में हुई। सूचनाओं के रख रखाव और प्रचार के अलावा यह एकक परिषद् की विभिन्न योजनाओं की प्रगति का अनुश्रवण भी करता है।

यह एकक परिषद् के दो मुखपत्रों का प्रकाशन भी करता है—'इंडियन एजुकेशनल रिव्यू' तथा 'जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन'। दूसरा वाला पत्र परिषद् के पुराने पत्र 'एन० आई० ई० जर्नल' का ही संशोधित रूप है और इसका प्रथम अंक नए पाठ्यक्रम के बारे में विशेषांक था।

रिपोर्ट काल के दौरान इस एकक ने 'एरिक' के सचिवालय के रूप में भी काम किया। 'एनसर्ट रिसर्च स्कीम्स् 1975' (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की अनुसंधान योजनाएँ, 1975) नाम का एक प्रलेख तैयार करके वितरित किया गया।

एकक ने अतिथि भाषण माला का कार्यक्रम भी शुरू किया जिसके अन्तर्गत प्रतिष्ठित शिक्षाशास्त्रियों और विद्वानों को भाषण देने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

2.4.5 कार्य-अनुभव और शिक्षा का व्यावसायीकरण

वर्ष 1974-75 के दौरान एकक ने अनेक कार्यक्रम सम्पन्न किए जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं—पाठ्यक्रम का विकास, इन कार्यक्रमों को कार्य रूप में परिणत करने के लिए राज्यों की सहायता और राज्यों में प्रमुख संचालक-व्यक्तियों का अनुकूलन। इन कार्यक्रमों का विस्तृत विवरण इस प्रकार है—

1. कार्य-अनुभव के पाठ्यक्रम के प्रारूप का सुधार

शिक्षा की 10+2 प्रणाली के लिए कार्य-अनुभव के पाठ्यक्रमों के माडलों के प्रारूपों को बनाया और विकसित किया गया। यह जरूरी था कि इनको कक्षा के परिवेश के हिसाब से अनुकूलित किया जाता और उनकी आजमाइश की जाती। दो परियोजनाओं को हाथ में लिया गया—एक दिल्ली में और दूसरी दुर्गापुर में। परिस्थितियों के योग्य पाठ्यक्रमों को विकसित किया गया और चुने हुए स्कूलों में कार्यक्रम को चला सकने के लिए अध्यापकों को अनुकूलित किया गया।

2. कार्य-अनुभव के कार्यक्रम को विकसित करने के लिए राज्यों की सहायता करना

कानपुर की नगरपालिका की गुजारिश पर, एकक ने उसकी सहायता की जिससे कि वह अपने स्कूलों के लिए उपयुक्त कार्य-अनुभव कार्यक्रम तैयार कर सके। एकक ने उन स्कूलों को इस प्रकार के कार्यक्रम को अपने यहां चला पाने के लिए निर्देशित भी किया। इस उद्देश्य से एकक के सदस्य मई के प्रथम सप्ताह में कानपुर गए।

3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के कार्य-अनुभव के पाठ्यक्रम को प्रतिपादित करने वाले अप्रोच पेपर को विकसित करना

इस एकक ने कार्यकारी दल की बैठक को संचालित किया। यह कार्यकारी दल राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की पाठ्यक्रम समिति द्वारा गठित किया गया है। इसका उद्देश्य कार्य-अनुभव और शिक्षा के व्यावसायीकरण के लिए पाठ्यक्रम बनाने के वास्ते अप्रोच पेपर विकसित करना है। यह बैठक 17 जून 1974 को राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के परिसर में हुई थी। इस अप्रोच पेपर को ही, 10+2 की शिक्षा प्रणाली के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के पाठ्यक्रम के निमित्त बनने वाले अप्रोच पेपर के प्रारूप का आधार, बनाया गया।

4. बी० एड० के पाठ्यक्रम को संशोधित करने में मध्य प्रदेश को प्रदान की गई सहायता

बी० एड० की पाठ्यचर्या को संशोधित करने के लिए एक सभा जबलपुर के राजकीय शिक्षा महाविद्यालय में 29 जुलाई से 2 अगस्त 1974 तक हुई जिसमें यह तय किया गया कि बी० एड० पाठ्यचर्या के अन्तर्गत 'कार्य-अनुभव की कार्य प्रणाली' नामक पेपर को भी शामिल किया जाए। 'कार्य-अनुभव की कार्यप्रणाली' का कोर्स बनाया गया और उस पर सभा में विचार-विमर्श किया गया।

5. कार्य-अनुभव और शिक्षा के व्यावसायीकरण की धारणा का स्पष्टीकरण और क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के लिए क्रिया-विधि को विकसित करना

एकक ने राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के परिसर में, एक संगोष्ठी का आयोजन 15 और 16 जुलाई, 1974 को किया जिसका विषय था—कार्य-अनुभव और शिक्षा का व्यावसायीकरण। इसमें केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय, केन्द्रीय श्रम मन्त्रालय, केन्द्रीय कृषि मन्त्रालय आदि और विश्वविद्यालयों के शिक्षा विभागों तथा क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। जो परिणाम निकले, संक्षेप में वे इस प्रकार हैं—

(क) कार्य-अनुभव अपने में समाहित करता है : बुद्धिमत्तापूर्ण तरीकों से किया गया, सामाजिक रूप से उपयोगी, उत्पादक, हाथ से किया गया कार्य और रख-रखाव वाले कठिन काम।

(ख) समुदाय में मौजूद सुविज्ञता को भी अच्छी तरह से ढूंढ़ना चाहिए और उसका उपयोग किया जाना चाहिए।

(ग) मूल्यांकन की दृष्टि से कार्य-अनुभव को किसी न किसी प्रकार की मान्यता और प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए।

(घ) पाठ्यक्रम-दर्शिकाओं, शिक्षक-पुस्तिकाओं, स्रोत-पुस्तकों, अभ्यास-पुस्तकों आदि के रूप में शैक्षणिक सामग्रियों को बनाया जाना चाहिए।

(ङ) पूर्ण पर्याप्त सामग्री और प्राकृतिक सुविधाओं को उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

(च) इस कार्यक्रम को सफलता से लागू करने के लिए समुदाय और स्कूल को पहल करनी चाहिए।

(छ) व्यावसायिक शिक्षा को कक्षा ग्यारह और बारह में शुरू करा देना चाहिए। इसमें अभियांत्रिक और अ-अभियांत्रिक दोनों ही प्रकार के विषय आ जाते हैं। व्यावसायिक और सामान्य शिक्षा के कोर्सों में परस्पर परिवर्तनशीलता की गुंजाइश और शिक्षा जारी रखने की व्यवस्था होनी चाहिए। इस कोर्स का उद्देश्य विद्यार्थियों को किसी नौकरी (काम : जॉब) विशेष के लिए तैयार करना होना चाहिए।

6. राज्य के प्रमुख संचालक व्यक्तियों के लिए अनुकूलन के कोर्स

कार्य-अनुभव और शिक्षा के व्यावसायीकरण से सम्बद्ध प्रमुख संचालक व्यक्तियों (की पर्सन्स) के अनुकूलन के लिए चार कार्यक्रम अजमेर, भोपाल, मैसूर और भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में जनवरी और फरवरी 1975 के महीनों में चलाए गए। इनमें क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों से सम्बद्ध राज्यों के अधिकारी सम्मिलित हुए। इन कार्यक्रमों द्वारा क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों की मार्फत राज्यों द्वारा सम्भाषण के अवसर पहली बार मिले। राज्यों में और केन्द्रीय स्तर पर भी कार्य-अनुभव की धारणा और कार्यक्रमों के बारे में विचारों का और दृष्टिकोणों का आदान-प्रदान हुआ। इन विचार-विमर्शों द्वारा संशोधन का ऐसा रूप निकला जो राज्यों से सम्बद्ध क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के लिए विशेष कार्य प्रणाली के बिन्दुओं का निर्माण करते हैं। इनमें ये आते हैं—धारणा के बारे में स्पष्टीकरण, राज्य स्तरों पर काम करने वाले प्रमुख संचालक व्यक्तियों (की पर्सन्स) के अनुकूलन कोर्सों का संचालन, राज्यों को उनके पाठ्यक्रमों तथा शैक्षणिक सामग्रियों के विकास में सहायता पहुँचाना आदि।

3

शिक्षा के क्षेत्रीय महाविद्यालय

3.1 अजमेर का क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय

शिक्षा के क्षेत्र में 1974-75 में भी, अजमेर का क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय निरन्तर प्रगति करता रहा। पढ़ाई के निम्नलिखित कोर्सों में दाखिले किए गए :—

1. बी० एस-सी० (ऑनर्स/पास) बी० एड० दिलाने वाला चार-वर्षीय विज्ञान कोर्स।

2. विज्ञान, कृषि, वाणिज्य और भाषाओं (उर्दू, अंग्रेजी एवं हिन्दी) में एक-वर्षीय बी० एड० कोर्स।

3. एम० एड० (विज्ञान)।

4. बी० एड० दिलाने वाला ग्रीष्म संस्थान-सह-पत्राचार कोर्स।

विभिन्न कार्यक्रमों में प्रवेश सूची और पास होने वाले छात्रों की सूची सारिणी VIII में दी गई है।

नियमित कार्यक्रमों के अलावा, महाविद्यालय ने कई सेवाकालीन कार्यक्रम भी आयोजित किए।

सारिणी VIII

अजमेर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में 1974-75 के दौरान प्रवेश लेने वालों की सूची

क्रम संख्या	कोर्स	भर्ती किए गए छात्रों की संख्या	परीक्षा देने वाले छात्रों की संख्या	मुख्य परीक्षा में पास होने वालों की संख्या	प्रतिशत
1.	फर्स्ट ईयर बी० एस-सी० (ऑनर्स/पास) बी० एड०	61	54	44	81
2.	सैकंड ईयर बी० एस-सी० (ऑनर्स/पास) बी० एड०	33	26	20	77
3.	थर्ड ईयर बी० एस-सी० (ऑनर्स/पास) बी० एड०	28	23	23	100

4. फाइनल ईयर बी०एस-सी० (ऑनर्स पास) बी० एड०	24	24	24	100
5. फाइनल ईयर बी० एस-सी० बी० एड० (पुराना)	8	8	6	75
6. एम० एड०	20	15	15	100
7. बी० एड० (विज्ञान)	148	143	139	90
8. बी० एड० (कृषि)	43	41	37	95
9. बी० एड० (वाणिज्य)	62	58	58	100
10. बी० एड० भाषाएँ (उर्दू)	23	23	23	100
11. बी० एड० भाषाएँ (अंग्रेजी)	48	47	47	100
12. बी० एड० भाषाएँ (हिन्दी)	74	74	73	98

3·2 भोपाल का क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय

समीक्षा की अवधि में हमेशा की तरह, महाविद्यालय अपने कार्यक्रमों में प्रगति करता रहा, यही प्रगति पढ़ाई के कोर्सों और विस्तार की गतिविधियों में भी दिखी। भोपाल विश्वविद्यालय द्वारा ली गई विभिन्न परीक्षाओं में इस महाविद्यालय से परीक्षा में बैठे और पास हुए छात्रों की संख्या सारिणी IX में दी गई है।

सारिणी IX

भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के विभिन्न कोर्सों को उत्तीर्ण करने वालों का प्रतिशत

कोर्स	परीक्षा में बैठने वाले	पास होने वाले	प्रतिशत
एम० एड०	7	6	85·68
एक-वर्षीय बी० एड० (कृषि)	17	14	82·3
" " (वाणिज्य)	33	32	96·36
" " (भाषाएँ)	79	64	81·00
" " (विज्ञान)	82	79	84·00
फोर्थ ईयर बी० एस-सी० बी० एड०	18	14	77·7
" बी० ए० बी० एड०	15	13	86·7

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसन्धान परिषद् द्वारा स्वीकृत अनुसन्धान योजनाओं को स्टाफ के सदस्य सुपरवाइज़ कर रहे हैं। महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं में से प्रमुख कुछ ये हैं—

(1) इफेक्टिव इण्ट्रोडक्शन स्ट्रेंथ इन सुपर कंडक्टर्स (पूरी हुई) (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग)	प्रोफेसर जे० एस० राजपूत
(2) स्टडीज़ इन सुपर कंडक्टिविटी (प्रगति पर) (वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसन्धान परिषद्)	प्रोफेसर जे० एस० राजपूत
(3) स्टडीज़ ऑन द रिकवरी ऑफ सल्फर फ्रॉम आयरन सल्फाइड्स	डाक्टर ए० सी० बनर्जी
(4) बायोकेमिकल ऐस्पेक्ट्स ऑफ फिश प्रोडक्टिविटी ऐंड देयर ऐप्लीकेशन इन एम० पी० (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग)	डाक्टर जी० के० लेहरी
(5) स्टडी ऑफ टोटल इलेक्ट्रॉन कंटेंट ऐंड एल० एस० आई० ऑफ द आयनोस्फीयर (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग)	डाक्टर सन्त प्रकाश

प्रशिक्षण और विस्तार के कार्यक्रम

नियमित कोर्सों के अलावा, महाविद्यालय ने निम्नलिखित सेवाकालीन कार्यक्रम आयोजित किए—

(1) मध्यप्रदेश के बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालयों के लेक्चरारों के लिए ग्रीष्म संस्थान।

(2) मध्यप्रदेश के विज्ञान प्रतिभा खोज योजना के प्रत्याशियों के लिए ग्रीष्म स्कूल।

(3) कक्षा पाँच से दस तक के लिए गुजराती में शिक्षक दर्शिकाओं का मूल्यांकन एवं निर्माण।

(4) कार्य-अनुभव के लिए शिक्षक दर्शिकाओं का निर्माण।

(5) कार्यक्रमित शिक्षण के लिए कार्यशाला।

(6) शिक्षा में सृजनशीलता पर कार्यशाला।

(7) होशंगाबाद विज्ञान परियोजना के अध्यापकों के लिए नवीन गणित पर कार्यशाला।

(8) कक्षा चार के मराठी पाठ्यक्रम के लिए हस्तपुस्तिका का निर्माण।

(9) केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षकों के लिए बोली जाने वाली अंग्रेजी पर कार्यशाला।

(10) कृषिशास्त्र में नवाचार पर एक संगोष्ठी।

(11) कार्य-अनुभव से सम्बन्धित प्रमुख संचालक व्यक्तियों (की पर्सन्स) के लिए एक अनुकूलन कार्यक्रम।

ऊपर गिनाए गए कार्यक्रमों में प्रशिक्षित हुए व्यक्तियों की कुल संख्या 347 थी।

3.3 भुवनेश्वर का क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय

महाविद्यालय मुख्य रूप से और सम्पूर्ण क्रियात्मकता के साथ ऐसे अध्यापकों के निर्माण में लगा रहा जो माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने में कोई कोर कसर नहीं रखते। साथ ही जो शैक्षिक नीतियों और अभ्यासों को संशोधित करने में और लागू करने में सक्रिय भाग लेते हैं। अध्यापकों के इस आदर्श को प्राप्त करने के लिए महाविद्यालय ने शिक्षक शिक्षा के निम्नलिखित कोर्स प्रदान किए—

(क) बी० एस-सी० बी० एड०, बी० ए० बी० एड०, और बी० काम० बी० एड० डिग्री दिलाने वाले एक-वर्षीय कोर्स।

(ख) भौतिकी, रसायन विज्ञान, वनस्पतिशास्त्र, जन्तु विज्ञान और गणित के ऑनर्स की व्यवस्था के साथ, बी० एस-सी० और बी० एड० डिग्री दिलाने वाले चार-वर्षीय एकीकृत कोर्स।

(ग) अंग्रेजी में ऑनर्स की व्यवस्था के साथ, बी० ए० और बी० एड० की डिग्री दिलाने वाले चार-वर्षीय एकीकृत कोर्स।

(घ) एम० एड० डिग्री दिलाने वाला बी० एड० के बाद का एक-वर्षीय कोर्स।

सेवाकालीन कार्यक्रम

ऊपर गिनाए गए कोर्सों के अलावा, महाविद्यालय ने निम्नलिखित सेवाकालीन कोर्सों को भी हाथ में लिया—

(1) बी० एड० डिग्री दिलाने वाला ग्रीष्म स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स

इस कार्यक्रम के लिए निर्धारित पढ़ाई के कोर्स वही हैं जो एक-वर्षीय बी० एड० डिग्री के लिए निर्धारित किए गए हैं। यह कोर्स केवल अप्रशिक्षित स्नातक और आर्ट्स, विज्ञान, वाणिज्य और कृषि के उन स्नातकोत्तर अध्यापकों के लिए खोले गए हैं जो नौकरी में लगे हुए हैं और किसी माध्यमिक विद्यालय में पढ़ाने का कम-से-कम पाँच वर्षों का अनुभव जिनके पास है।

(2) विस्तार कार्यक्रम

इस महाविद्यालय के विस्तार सेवा विभाग ने रिपोर्टकाल के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए :—

(क) इस क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में कार्य-अनुभव पढ़ाने वाले अठारह अध्यापकों के लिए एक छः-दिवसीय कार्यशाला 'कार्य-अनुभव' पर, 25-11-1974 से 30-11-1974 तक इसी महाविद्यालय में आयोजित की गई ।

(ख) 'किसी स्कूल में बागबानी सिखाने के तरीकों' पर एक प्रशिक्षण कार्य-क्रम इसी महाविद्यालय में, छः दिनों के लिए 16-12-1974 से 21-12-1974 तक, आयोजित हुआ । इस क्षेत्र के सोलह कृषि अध्यापकों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को ग्रहण किया ।

(ग) 'अंग्रेजी में मूल्यांकन पद्धतियों' पर हुई एक कार्यशाला में बिहार और पश्चिमी बंगाल के अठारह स्कूल शिक्षकों ने भाग लिया । कार्यशाला इसी महाविद्यालय में 18-12-1974 से 23-12-1974 तक हुई ।

(घ) 'यूनेस्को और यूनिसेफ परियोजना के अन्तर्गत विज्ञान का अध्यापन' विषय पर एक दस-दिवसीय प्रशिक्षण कोर्स अण्डमान और निकोबार द्वीपसमूह के अध्यापकों के लिए पोर्टब्लेयर में इस महाविद्यालय द्वारा आयोजित किया गया था । 23-12-1974 से 1-1-1975 तक होने वाले कोर्स में 30 अध्यापकों ने भाग लिया ।

(ङ) 'राष्ट्रीय एकीकरण' पर असम के जोरहाट स्नातकोत्तर प्रशिक्षण महा-विद्यालय में, इस महाविद्यालय ने 25-12-1974 से 30-12-1974 तक एक संगोष्ठी का आयोजन किया । असम, मणिपुर, त्रिपुरा और अरुणाचल प्रदेश के हाई स्कूलों में सामाजिक अध्ययन पढ़ाने वाले बीस अध्यापकों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया ।

(च) 'प्रायोगिक परियोजनाओं' पर एक छः-दिवसीय कार्यशाला पश्चिमी बंगाल के तेरह शिक्षकों के लिए इस महाविद्यालय ने कलकत्ता के डेविड हेयर ट्रेनिंग कालेज में 23-1-1975 से 28-1-1975 तक संगठित की ।

(छ) 'परिप्रश्न (या अन्वेषण) अप्रोच द्वारा विज्ञान की पढ़ाई' विषय पर एक सेवाकालीन प्रशिक्षण इस महाविद्यालय में 3-2-1975 से 8-2-1975 तक आयोजित किया गया था । उड़ीसा के माध्यमिक स्कूलों के बाइस विज्ञान-अध्यापकों ने इस प्रशिक्षण से लाभ उठाया ।

(ज) 'अंग्रेजी में लिखने की योग्यता सिखाने की पद्धतियाँ' विषय पर महा-विद्यालय ने एक प्रशिक्षण कोर्स 10-2-1975 से 15-2-1975 तक चलाया जिसमें उड़ीसा के हाई स्कूलों के अठारह अध्यापकों ने भाग लिया ।

(झ) 'राष्ट्रीय एकीकरण के लिए शैक्षणिक सामग्री का निर्माण' विषय पर इस महाविद्यालय ने एक कार्यशाला आयोजित की जो 24-2-1975 से 1-3-1975 तक पटना के बिहार राज्य शिक्षा संस्थान में हुई । बिहार,

उड़ीसा और पश्चिमी बंगाल के माध्यमिक स्कूलों के अठारह अध्यापकों ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

(ञ) इतिहास पढ़ाने वाले उड़ीसा के 15 अध्यापकों के लिए 3-3-1975 से 8-3-1975 तक इसी महाविद्यालय में एक छः-दिवसीय 'पुनरअनुकूलन संगोष्ठी' हुई।

(ट) 'विज्ञान और गणित में मूल्यांकन' विषय पर इसी महाविद्यालय ने उड़ीसा के माध्यमिक स्कूलों के 15 अध्यापकों के लिए एक छः-दिवसीय कार्यशाला का संचालन किया जो 17-3-1975 से 22-3-1975 तक हुई।

(ठ) 'प्रायोगिक परियोजनाओं' पर इस महाविद्यालय ने एक कार्यशाला का आयोजन 20-3-1975 से 25-3-1975 तक किया। इस कार्यशाला में उड़ीसा के सोलह स्कूल-शिक्षकों ने भाग लिया।

(3) ग्रीष्मकालीन संस्थान

वर्ष 1974 की गर्मियों में निम्नलिखित ग्रीष्म संस्थान आयोजित किए गए:—

(क) 'जीव विज्ञान में एक आनुक्रमिक ग्रीष्म संस्थान' इस महाविद्यालय में 3-6-1974 से 29-6-1974 तक चलाया गया। देश भर के माध्यमिक स्कूलों के अठारह अध्यापकों ने इस संस्थान में भाग लिया।

(ख) इसी अवधि के दौरान माध्यमिक स्कूलों के विज्ञान-अध्यापकों के लिए 'परियोजना प्रौद्योगिकी में ग्रीष्म संस्थान' भी चलाया गया। असम, बिहार, उड़ीसा और पश्चिमी बंगाल के इकतालीस अध्यापकों ने इस संस्थान में भाग लिया और प्रशिक्षण अवधि में नमूने की 76 परियोजनाएँ बना डालीं।

प्रशिक्षण के अन्य कार्यक्रम

'अध्यापक-प्रशिक्षण' के कार्यक्रमों के अतिरिक्त महाविद्यालय ने निम्नलिखित प्रशिक्षण-कार्यक्रम भी चलाए—

(1) कमर्शियल प्रैक्टिस में एक दो-वर्षीय डिप्लोमा कोर्स

हाई स्कूल पास कर चुके विद्यार्थियों के लिए कमर्शियल प्रैक्टिस में 'व्यावसायिक प्रशिक्षण' देने के उद्देश्य से यह कोर्स चलाया गया है। यह उड़ीसा के राज्य तकनीकी शिक्षा और प्रशिक्षण बोर्ड से जुड़ा हुआ है। इस डिप्लोमा को उत्कल विश्वविद्यालय के वाणिज्य के इंटरमीडिएट के बराबर मान्यता मिली हुई है ताकि डिप्लोमा पाने वाले विश्वविद्यालय के बी० काम० कोर्स में दाखिला ले सकें।

सारिणी X

भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में विभिन्न कोर्सों में प्रवेश लेने वालों की सूची और पास होने वालों का प्रतिशत

क्रम संख्या	कोर्स का नाम	कक्षा	31 जुलाई 1974 की संख्या	विश्वविद्यालय की 1974 की परीक्षा में सफलता का प्रतिशत
1.	एक-वर्षीय बी० एड०	विज्ञान में	147	95·2
		वाणिज्य में	7	100·00
		आर्ट्स में	30	(जुलाई 1974 के बाद शुरू हुआ)
2..	चार-वर्षीय बी० एससी० और बी० एड०	फर्स्ट ईयर	62	88
		सेकंड ईयर	59	100
		थर्ड ईयर	53	69·5
		फोर्थ ईयर	16	100
3.	चार-वर्षीय बी० ए० और बी० एड०	फर्स्ट ईयर	34	100
		सेकंड ईयर	49	100
		थर्ड ईयर	37	100
		फोर्थ ईयर	28	100
4.	एक-वर्षीय एम० एड०		10	100
5.	कमर्शियल प्रैक्टिस में डिप्लोमा	सेकंड ईयर	17	94
6.	एस० एस०/सी० सी०	फर्स्ट ईयर	247	विश्वविद्यालय परीक्षा नहीं
		सेकंड इयर	202	97·5

(2) उन युवाओं के कार्यक्रम जो छात्र नहीं हैं

इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्कूल छोड़ चुके युवाओं को 'कम समय वाला व्यावसायिक प्रशिक्षण' दिला कर उनमें कुछ बुनियादी कुशलता पैदा करना है ताकि वे अपनी रोजी कमा सकें या उच्च प्रशिक्षण के लिए जा सकें। इस योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित कोर्सों को चलाया गया—

(क) मशीनमैन के लिए एक छः-मासीय प्रशिक्षण कोर्स

(ख) वेल्डिंग के लिए एक छः-मासीय प्रशिक्षण कोर्स

विद्यार्थियों की संख्या

31 जुलाई, 1974 को कुल विद्यार्थियों की संख्या 549 थी, जिनमें से 290 विद्यार्थी नए आए थे। इसके अलावा ग्रीष्म स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स में 247 शिक्षकों को फर्स्ट ईयर में भर्ती किया गया और 202 शिक्षकों को सेकंड ईयर में चढ़ाया गया।

महाविद्यालय के परीक्षाफल

सारिणी X में कक्षा-वार प्रवेश सूची को और 1974 की विश्वविद्यालय की परीक्षा में सफलता के प्रतिशत को दिखाया गया है।

3.4. मैसूर का क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय

सेवा पूर्व और ग्रीष्म स्कूल-सह-पत्राचार कोर्सों के अन्तर्गत यह महाविद्यालय अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाता रहा। सारिणी XI में मैसूर विश्वविद्यालय द्वारा ली गई विभिन्न परीक्षाओं में बैठने वाले और पास होने वाले विद्यार्थियों की संख्या दी गई है।

ग्रीष्म स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स

दो सौ उनसठ विद्यार्थियों को कनिष्ठ ग्रीष्मकालीन स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स (जूनियर एस० एस० सी० सी०) में दाखिला दिया गया। दो सौ चौंतीस वरिष्ठ ग्रीष्म स्कूल-सह-पत्राचार कोर्स (सीनियर एस० एस० सी० सी०) के विद्यार्थियों ने अपने पत्राचारके पाठों को और अन्य कामों को पूरा कर लिया है और इस गर्मी में वे अपना कोर्स पूरा कर लेंगे।

सेवाकालीन कार्यक्रम

नियमित शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अलावा महाविद्यालय ने अनुकूलन कोर्सों, कार्यशालाओं और संगोष्ठियों जैसे अनेक सेवाकालीन कार्यक्रमों का आयोजन किया। वर्ष के दौरान इस प्रकार के लगभग चालीस कार्यक्रम किए गए।

सारिणी XI

मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में चल रहे विविध कोर्सों की परीक्षाओं के परिणाम

कोर्स	प्रवेश संख्या	परीक्षा में बैठने वालों की संख्या	पास करने वालों की संख्या
चार वर्षीय कोर्स			
(क) विज्ञान			
(1) बी०एस-सी०एड० (एन एस)	53	46(1)	30(1)
(2) बी०एस-सी०एड० (एन एस)	35	34	22
(3) बी०एस-सी०एड० (ओ एस)	—	(5)	(5)
(4) बी०एस-सी०एड० (ओ एस)	44	43	23
(5) बी०एस-सी०एड० (ओ एस)	50	50(6)	42(4)
(ख) अंग्रेजी			
(1) बी० ए० एड० (एन एस)	32	28(2)	8(1)
(2) बी० ए० एड० (एन एस)	17	15	13
(3) बी० ए० एड० (ओ एस)	—	(1)	(1)
(4) बी० ए० एड० (ओ एस)	16	15(1)	13(1)
(5) बी० ए० एड० (ओ एस)	32	32	29
एक-वर्षीय बी० एड०			
(क) विज्ञान	92	78(5)	66(—)
(ख) गणित	36	31(3)	26(3)
एक-वर्षीय पी० यू० सी०			
(क) कृषि	31	23	8
(ख) वाणिज्य	21	21	15
(ग) प्रौद्योगिकी	22	16	4*

* नोट : इसमें एक ऐसा परिणाम भी है जिसे रोक लिया गया है।

4

शैक्षिक प्रौद्योगिकी का केन्द्र

इस केन्द्र की स्थापना निम्नलिखित कार्यों के लिए हुई है—शिक्षा के माध्यम के प्रभावकारी उत्पादन एवं इस्तेमाल के लिए अनुसन्धान तथा विकास के कार्यों को हाथ में लेना, उपयुक्त प्रौद्योगिकी एवं वितरण की विधियों में विकास, शैक्षिक प्रौद्योगिकी तथा शैक्षिक सामग्री के मूल्यांकन से सम्बद्ध विविध पक्षों के लिए होने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों को पूरा करना। केन्द्र ने 1974-75 के दौरान अनेक कार्यक्रम शुरू किए जिनमें से निम्नलिखित प्रमुख हैं—

उपग्रह शैक्षणिक दूरदर्शन प्रयोग (साइट : सैटेलाइट इंस्ट्रक्शल टेलिविजन एक्सपेरीमेंट)

साइट की तैयारी में भारत सरकार पूरी तरह से लगी हुई है। इस माध्यम से छः राज्यों के 2400 गांवों में शैक्षिक और विकासात्मक उद्देश्यों से दूरदर्शन का उपयोग किया जाएगा। यह अगस्त 1975 में शुरू होगा और एक वर्ष तक चलेगा। शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र साइट के शैक्षणिक प्रसारणों में कई प्रकार से जुड़ा हुआ है और उनके लिए सक्रिय भूमिका निभा रहा है। ये प्रसारण 5 से 12 आयु क्रम वाले बच्चों के लिए होंगे। रिपोर्ट काल में इस बारे में हुई प्रगति का विवरण इस प्रकार है—

(1) साइट के द्वारा शैक्षिक कार्यक्रमिकता के निमित्त प्रशासकों का अनुकूलन

दूरदर्शन वाले छः राज्यों के विकास और शिक्षा विभागों के प्रमुख प्रशासकों के लिए एक अनुकूलन संगोष्ठी की गई। इन प्रशासकों के अलावा इस संगोष्ठी में आई० एस० आर० ओ०, आकाशवाणी, शिक्षा मंत्रालय और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के प्रशासक भी अनुकूलन के उद्देश्य से ही सम्मिलित हुए। यह संगोष्ठी जून 1974 में मैसूर में हुई थी।

(2) अध्यापकों के लिए स्क्रिप्ट-लेखन में अनुकूलन

इस केन्द्र ने दस-दस दिनों वाली दो कार्यशालाएँ हैदराबाद (आंध्रप्रदेश और कर्नाटक समूह के लिए) और कटक (उड़ीसा) में क्रमशः अक्तूबर 1974 और जनवरी 1975 में आयोजित कीं। इनका उद्देश्य अध्यापकों/संचारकों और बाल साहित्य के

लेखकों का शैक्षिक दूरदर्शन के लिए स्क्रिप्ट लिखने के क्षेत्र में अनुकूलन करना था और विशेषज्ञों के नेतृत्व में स्क्रिप्ट तैयार कराना था।

(3) प्राथमिक स्कूल के अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए बहु-माध्यम वाला एक कार्यक्रम

शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र ने प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के प्रभावकारी सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए एक बहु-माध्यम कार्य शुरू किया है जिसमें निम्नलिखित घटक होंगे—

(क) दूरदर्शन-प्रसारण

(ख) रेडियो-प्रसारण

(ग) स्व शैक्षणिक और स्वाध्याय वाली दूसरी मुद्रित सामग्री और प्रयोगात्मक गतिविधियों को लागू करना

(घ) ट्यूटोरियल

केन्द्र द्वारा आयोजित एक चार-दिवसीय कार्यशाला में, जो नई दिल्ली में सात से दस जनवरी 1975 तक हुई, इस प्रश्न पर विचार किया गया कि बहु-माध्यम के प्रत्येक पक्ष के लिए कितना समय रखा जाए। 13 और 14 फरवरी 1975 को हुई एक बैठक में जीव विज्ञान के विषय शीर्षकों की गतिविधियों पर लिखे गए प्रलेखों को पढ़ा समझा गया और विचार-विमर्श से निकले संशोधनों के अनुसार पुनर्लेखन के वास्ते उनके लेखकों के पास भेजा गया। एक दूसरी कार्यशाला का भी आयोजन इस केन्द्र ने 24 फरवरी से 11 मार्च 1975 तक किया जो उस स्व-शैक्षणिक सामग्री पर आधारित थी जो अध्यापकों/शिक्षकों को स्व-शैक्षणिक सामग्री के विभिन्न रूपों से परिचित कराती थी और इस प्रकार की सामग्री के लिखने में उनका अनुकूलन करती थी।

(4) साइट (उपग्रह शैक्षणिक दूरदर्शन प्रयोग) कार्यक्रमों के प्रभाव का मूल्यांकन

'प्राथमिक स्कूल के बच्चों पर उपग्रह शैक्षणिक दूरदर्शन प्रयोग के कार्यक्रम का प्रभाव' का अध्ययन करने के लिए केन्द्र आई० एस० आर० ओ० को निकट सहयोग प्रदान कर रहा है।

इस अध्ययन की रूपरेखा अक्तूबर 1974 में ही बना ली गई थी। आई० एस० आर० ओ० के क्षेत्र-कार्यकर्त्ताओं के लिए पाँच दिनों का एक प्रशिक्षण कोर्स अठारह से बाइस फरवरी 1975 तक चलाया गया। भाषा-विकास में आधार सामग्री के संकलन के लिए उपकरणों के विकास पर पहली बैठक केन्द्र ने 26 और 27 फरवरी 1975 को बुलाई। इस बैठक में जो विस्तृत रूपरेखा उभरी उसके अनुरूप उपकरणों के विकास का काम भाषा विकास के विशेषज्ञों को सौंप दिया गया है। दूसरे परिवर्तनों

के साक्षियों को एकत्र करने के लिए उपयुक्त उपकरणों के निर्माण का कार्य भी हाथ में लिया गया ।

स्कूली शिक्षा के लिए रेडियो

रेडियो अन्य माध्यमों की अपेक्षा कुछ सस्ता मास मीडियम है, फिर भी जितनी प्रभावकारिता से इसका इस्तेमाल होना चाहिए, शिक्षा क्षेत्र में उतनी प्रभावकारिता से नहीं हो रहा है । अपनी स्थापना के बाद केन्द्र ने रेडियो पर एक कार्यकारी दल बिठाया ताकि इस शिक्षा माध्यम को अधिक सरगर्मी से इस्तेमाल करने के लिए सक्रिय कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाई जा सके । इस कार्यकारी दल ने छ. अगस्त, 1974 को होने वाली अपनी पहली बैठक में इस बारे में अनेक सिफारिशें कीं । इसकी सिफारिश थी कि ऐसे प्रबोधक अनुश्रोताओं के दल बनाए जाने चाहिए जो रेडियो पर होने वाले बच्चों के कार्यक्रमों का मूल्यांकन इस उद्देश्य से कर सकें कि कैसे इन कार्यक्रमों को अधिक प्रभावोत्पादकता और निरन्तर सुधरे हुए रूप के साथ प्रस्तुत किया जाए ।

रिपोर्ट काल के दौरान स्कूल के बच्चों के लिए कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले आकाशवाणी के स्टेशनों का चुनाव किया गया । अध्ययन के उद्देश्यों और प्रबोधक अनुश्रोताओं की कार्यविधि को अन्तिम रूप दिया गया । आकाशवाणी के चुने गए स्टेशनों से बुनियादी जानकारी भी एकत्र कर ली गई है ।

खुले हुए (ओपेन) स्कूल

इस केन्द्र की प्रबन्धकारिणी समिति के निर्णय को कार्यान्वित करते हुए 'खुले हुए स्कूलों' पर एक कार्यकारी दल बिठाया गया ताकि शिक्षा की 'खुले हुए स्कूलों की प्रणाली' की सम्भाव्यता को जाँचा जा सके ।

शैक्षिक खिलौनों की परियोजना

शैक्षिक खिलौनों जैसी सरल प्रौद्योगिकी के विकास का काम इस केन्द्र ने हाथ में लिया क्योंकि ऐसे खिलौने स्थानीय सामग्री से कम खर्च में ही बनाए जा सकते हैं । केन्द्र ने एक कार्यकारी दल बिठाया जिसको यह स्पष्ट करना था कि शैक्षिक खिलौना क्या होता है, और उसके जिम्मे धारणाओं के विकास की सीढ़ियों के बारे में एक ढाँचा बनाने का काम भी सौंपा गया ताकि शैक्षिक खिलौनों का विकास करने के लिए उसे एक गाइड के तौर पर इस्तेमाल किया जा सके । वैज्ञानिक और गणितीय धारणाओं का एक ढाँचा सोच निकाला गया । जर्मनी जैसे दूसरे देशों के खिलौनों का अध्ययन भी किया गया ।

रिपोर्ट-काल के दौरान केन्द्र में तीन से आठ वर्ष के बच्चों के लिए शैक्षिक खिलौनों का एक किट भी बनाया गया । इस किट में चालीस खिलौने हैं जिनसे सरल

गणित सिखायी जा सकती है और उत्प्रेरक रचनात्मकता और साहित्यिक कौशल लाया जा सकता है। अध्यापकों के इस्तेमाल के लिए नमूने की कुछ पुस्तिकाएँ भी तैयार की गई हैं।

शिक्षा की आशावादिता की प्रणालियों को बनाने के लिए सम्भाव्यता के अध्ययन

बहुत बड़ी संख्या में स्कूल छोड़ कर चले जाने वाली समस्या का हल पारम्परिक स्कूलों और उनके काम करने के तरीके में नहीं है—यह सबको पता है। इस आधार पर जो कार्यकारी दल काम कर रहा था, उसकी सिफारिशों पर, केन्द्र ने जिला अजमेर (राजस्थान) के तिलोनिया स्थित सामाजिक कार्य एवं अनुसंधान केन्द्र को यह परियोजना सौंपी कि पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक वय क्रम (4 से 14 वर्ष) के लिए एक प्रणाली को बनाने के लिए सम्भाव्यता का अध्ययन करें। इस परियोजना के प्रथम चरण के दौरान उन तीन गाँवों का विस्तृत सर्वेक्षण किया गया, जिनको कार्यक्रम के लिए लिया गया था। इसी तरह के काम मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले की किशोर भारती को और कानपुर के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान को भी सौंपे गए हैं। सर्वेक्षण करने के बाद किशोर भारती ने आगे का काम करने में अपनी असमर्थता जाहिर की क्योंकि उनके पास जन शक्ति की कमी थी। इसलिए उन्होंने रकम भी वापस कर दी। कानपुर वालों ने प्रथम चरण का काम पूरा कर लिया है और उन्होंने अपनी एक रिपोर्ट भी दे दी है।

दिल्ली में दूरदर्शन सर्वेक्षण

भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग की प्रार्थना पर, इस केन्द्र ने दिल्ली के कुछ नमूने वाले स्कूलों में एक सर्वेक्षण इस प्रयोजन से किया कि पता लगाया जा सके कि स्कूल कार्यक्रमों के लिए किस आकार की पिक्चर ट्यूब ठीक होती है। इस विषय की आधार सामग्री का विश्लेषण किया जा रहा है।

5

क्षेत्रीय सलाहकारों के कार्यालय

शैक्षिक प्राधिकरणों से प्रभावकारी सम्पर्क के उद्देश्यों से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने राज्यों में क्षेत्रीय सलाहकारों के कार्यालय खोल रखे हैं। इस समय विभिन्न राज्यों में पन्द्रह क्षेत्रीय सलाहकार हैं जिनके मुख्यालय अहमदाबाद, इलाहाबाद, कलकत्ता, गौहाटी, चंडीगढ़, जयपुर, त्रिवेन्द्रम, दिल्ली, पटना, पूना, बंगलौर, भुवनेश्वर, भोपाल, मद्रास और हैदराबाद में हैं।

क्षेत्रीय सलाहकारों की मुख्य गतिविधियों में, सम्पर्क कार्य आता है जो परिषद् के कार्यक्रमों व नीतियों तथा राज्य की शैक्षिक आवश्यकताओं के मध्य पुल का काम करता है। इसके अलावा यह सम्पर्क मार्गदर्शन/प्रशिक्षण/विस्तार कार्यक्रमों में भी काम आता है। प्रमुख संचालक व्यक्तियों के लिए दलों में विचार विमर्श करवाना भी इसी में आता है जिससे प्रत्यक्षतः सम्पर्क कार्य में सहायता मिलती है और परिषद् के नवाचार कार्यक्रमों तथा नीतियों को बढ़ावा मिलता है।

इस अवधि के दौरान इनके द्वारा शुरू किए गए कुछ प्रमुख कार्य नीचे दिए गए हैं—

5.1 अहमदाबाद

राज्य से और स्थानीय शैक्षिक संस्थानों से तथा प्रमुख व्यक्तियों से सम्पर्क रखना क्षेत्रीय सलाहकार का सशक्त कार्य बना रहा। उसने शिक्षा की 10+2 प्रणाली के लागू किए किए जाने और उसको राज्य सरकार की मान्यता दिलाने के लिए भरसक कार्य किया। यूनिसेफ परियोजना के अंतर्गत विज्ञान पढ़ाने के लिए और विज्ञान तथा गणित में ग्रीष्म संस्थान चलाने के लिए उसने महत्त्वपूर्ण योगदान किया। अहमदाबाद के विक्रम साराभाई समुदाय केन्द्र में विज्ञान प्रदर्शनी के आयोजन में वह निकट रूप से सम्बद्ध रहा। क्षेत्रीय सलाहकार केन्द्रीय शिक्षा और समाज कल्याण मन्त्रालय का इस राज्य में सम्पर्क अधिकारी भी है।

5.2 इलाहाबाद

यह कार्यालय पहले दिल्ली में था, अब अक्तूबर 1974 से यह इलाहाबाद चला आया है। सम्पर्क बढ़ा लेने के बाद क्षेत्रीय सलाहकार ने राज्य शैक्षिक विभाग से सम्बन्ध बनाए रखा, 10+2 की प्रणाली पर गहन रूप से विचार-विमर्श किया और राज्य में विज्ञान के चार ग्रीष्म संस्थान कार्यक्रमों में राज्य के शिक्षा विभाग को सहयोग दिया। भूटान में भूगोल के अध्यापकों के लिए हुए दस-दिवसीय कार्यक्रम में भी इस क्षेत्रीय सलाहकार को प्रतिनियुक्त किया गया।

5.3 कलकत्ता

परिषद् के विभिन्न विभागों/एककों के लिए अपेक्षित सूचनाएँ एकत्र करने में यह क्षेत्रीय सलाहकार सक्रिय रूप से लगा रहा।

5.4 गौहाटी

क्षेत्रीय सलाहकार ने कुछ अनुकूलन कार्यक्रम चलाए और परिषद् के अन्य संघटकों को पूर्वी क्षेत्र में अपने कार्यक्रम चलाने यें सहायता प्रदान की।

5.5 चंडीगढ़

यह कार्यालय अभी अभी दिल्ली से उठ कर यहाँ आया है। पंजाब, हरियाणा, हिमाचलप्रदेश, जम्मू व कश्मीर तथा चंडीगढ़ के संघ क्षेत्र की शैक्षिक जरूरतों के लिए यह काम करता है। क्षेत्रीय सलाहकार ने राज्यों के शैक्षिक प्राधिकरणों के साथ शिक्षा की नई प्रणाली और उसके अप्रोच पेपर पर विचार-विमर्श किए।

5.6 जयपुर

क्षेत्रीय सलाहकार ने राज्य की अनेक शैक्षिक गतिविधियों में भाग लिया। राज्य सरकार की एक अति शक्तिशालिनी समिति से भी वह सम्बद्ध रहा है। इस समिति के अध्यक्ष राज्य के शिक्षा मंत्री हैं और इसका काम विविध शैक्षिक पहलुओं के विकास से सम्बद्ध नीतियों को संशोधित परिवर्द्धित करना है। इसकी सिफारिशों पर विचार किया जा रहा है।

5.7 त्रिवेंद्रम

क्षेत्रीय सलाहकार ने त्रिवेंद्रम में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के प्रकाशनों की एक प्रदर्शनी आयोजित की। यह क्षेत्रीय सलाहकार केन्द्रीय शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय का भी सम्पर्क अधिकारी है।

5.8 दिल्ली

नई पाठ्य सामग्री के बारे में विज्ञान के अध्यापकों को अनुकूलित करने के लिए आयोजित अनेक ग्रीष्म संस्थानों से यह क्षेत्रीय सलाहकार घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध रहा है। नई दिल्ली नगर पालिका और दिल्ली के शिक्षा निदेशालय के साथ सहयोग करके इसने जिला स्तर के अठारह विज्ञान मेले करवाए।

5.9 पटना

नया बना कार्यालय होने के कारण यहाँ का क्षेत्रीय सलाहकार राज्य के और स्थानीय शैक्षिक अधिकारियों से सम्पर्क-सम्बन्ध स्थापित करने में ही व्यस्त रहा। राज्य में विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित करने में इसने शिक्षक संघों की सहायता की।

5.10 पूना

क्षेत्रीय सलाहकार ने अध्यापकों के गहन अनुकूलन कार्यक्रम में भाग लिया और विज्ञान प्रतिभा खोज योजना का प्रचार किया। राज्य में हुए चार ग्रीष्म संस्थानों को भी उसने मार्गदर्शित किया।

5.11 बंगलौर

एक सदस्यीय आयोग के रूप में क्षेत्रीय सलाहकर ने उदिपी के महात्मा गाँधी स्मारक महाविद्यालय की कार्य-प्रणाली का अध्ययन किया और कर्नाटक के विश्व-विद्यालय-पूर्व शिक्षा के बोर्ड को सिफारिशें प्रस्तुत कीं। उसने प्रमुख शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के लैक्चररों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया। विस्तार सेवा केन्द्रों के समन्वयकों के अधिवेशनों को भी उसी ने आयोजित किया। इसके अलावा परिषद् तथा राज्य के शैक्षिक संस्थानों द्वारा संगठित अनेक कार्यक्रमों में भाग लिया।

5.12 भुवनेश्वर

क्षेत्रीय सलाहकार ने शिक्षा विभागों से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की ओर से घनिष्ठ सम्पर्क कायम किया और उनको सभी प्रकार से यथासम्भव सलाहें और सहायता प्रदान की।

5.13 भोपाल

बनाई गई अनेक शैक्षणिक सामग्रियों को मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने स्वीकृत और प्रकाशित किया। 'मध्यप्रदेश में यूनिसेफ के कार्यक्रम' विषय पर एक मूल्यांकन रिपोर्ट पूरी की गई और राज्य सरकार को दी गई। विज्ञान प्रतिभा खोज के विद्यार्थियों की विज्ञान में अभिरुचि के मापन का एक सर्वेक्षण किया गया। मध्य-प्रदेश राज्य में उपग्रह शैक्षणिक दूरदर्शन प्रयोग के कार्यक्रम को क्षेत्रीय सलाहकार ने मूल्यांकित किया।

5.14 मद्रास

परीक्षा सुधार पर तीन दिनों वाली एक सभा बुलाई गई जिसमें राज्य शिक्षा मंत्री और अन्य शैक्षिक अधिकारियों ने भाग लिया। शिक्षा में नवाचार पर भी तीन दिनों वाली एक कार्यशाला आयोजित की गई।

5.15 हैदराबाद

क्षेत्रीय सलाहकार ने राज्य शिक्षा विभागों से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की ओर से घनिष्ठ सम्पर्क बनाए रखा और उनकी यथासंभव सहायता की और सुझाव दिए।

6

परिषद् के विभिन्न अंगों द्वारा 1974-75 के दौरान लिए गए मुख्य निर्णय

6.1 परिषद् की बैठकें

परिषद् की महासमिति की बैठक 25-3-1975 को हुई। इसमें 1973-74 की वार्षिक रिपोर्ट को अनुमोदित किया गया और 1971-72 की लेखा-परीक्षा-रिपोर्ट तथा लेखा विवरणी को स्वीकार किया गया।

वार्षिक रिपोर्ट पर विचार-विमर्श करते हुए परिषद् ने 10 वर्षीय स्कूलिंग प्रणाली के लिए पाठ्यक्रम-विकास, प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण और गुणात्मक सुधार, राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से राष्ट्रीय एकीकरण और पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन के सम्बन्ध में कई मूल्यवान सुझाव दिए। राष्ट्रीय एकीकरण नामिका और राष्ट्रीय अध्यापक प्रशिक्षण परिषद् द्वारा किए गए कामों की रिपोर्ट को भी इसने अनु-मोदित किया।

6.2 कार्यकारी समिति

परिषद् की कार्यकारी समिति साल के दौरान तीन बार मिली: 28 जून 1974, 9 नवम्बर 1974 और 1 मार्च 1975 को। इन बैठकों में लिए गए महत्त्वपूर्ण फैसलों का सारांश इस प्रकार है:

(1) परिषद् के प्रोफेसरों, रीडरों और लैक्चरारों के वास्ते परिषद् ने निम्न-लिखित वेतनमानों को स्वीकृत किया—

प्रोफेसर—रुपए 1500-2500
रीडर—रुपए 1200-1900
लेक्चरर—रुपए 700-1600

(2) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के प्रयोगशाला सहायकों के वेतनमानों को ठीक करने के लिए इसने एक समिति नियुक्त की

(3) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के कलाकारों के वेतनमान इस प्रकार के चार मानों में संशोधित किए गए—

श्रेणी 1—700-1300 रु०
श्रेणी 2—650-960 रु०
श्रेणी 3—550-750 रु०
श्रेणी 4—425-700 रु०

(4) विशेष सहायकों की चार जगहें और गोपनीय सहायक की एक जगह बनाने के प्रस्ताव को इस समिति ने स्वीकृत किया। इस जगह का वेतनमान होगा—
रुपए—550-900

(5) इसने तय किया कि परिषद् की इमारत के निर्माण व रखरखाव से सम्बन्धित मंजूरियों को निकालने के पहले केवल उन्हीं मंजूरियों को ए० एफ० ए० (कार्य) वित्तीय सलाहकार, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के पास भेजा जाएगा जो निदेशक में निहित शक्तियों, अर्थात् 70 हजार रुपयों से ऊपर होगी।

(6) इसने उन स्थाई कर्मचारियों के ग्रहणाधिकार (लिएन) के बने रहने को स्वीकृति दी जो दो वर्षों के लिए किसी पब्लिक सेक्टर संस्थान/स्वायत्तता प्राप्त संस्थान में नौकरी के लिए चुने जाते हैं और परिषद् के उन अधिकारियों के लिए भी जो विदेश की नौकरियों के लिए जाते हैं। इसमें यूनेस्को की नौकरियाँ भी शामिल हैं जिनमें मूल रूप से दो वर्षों की नियुक्ति मिलती है, बाद में एक वर्ष का विस्तार मिल जाता है।

(7) इसने विनियम 10 के संशोधन को भी स्वीकार कर लिया जो स्थापना समिति की संरचना से सम्बद्ध है और जिसके अनुसार परिषद् के शैक्षणिक तथा अ-शैक्षणिक कर्मचारियों में से एक-एक कर्मचारी को मतों द्वारा चुन कर प्रतिनिधित्व के लिए भेजना होता है।

(8) चयन समितियों से सम्बद्ध विनियमों 49, 57, 59 और 60 में इसने कुछ संशोधन किए।

(9) समिति ने इस बात से सहमति प्रगट की कि परिषद् और उसके अतिथि भवन के लिए एक स्वागत कर्त्ता की नियुक्ति होनी चाहिए जिसका वेतनमान रु० 130 से 300 का होगा।

(10) पाठ्य-पुस्तकों आदि के लेखकों के पारिश्रमिक की निम्नलिखित दरों के लिए समिति ने सहमति प्रगट की—

(क) पाठ्य-पुस्तकें एवं पूरक पठन की सहायक पुस्तकें लिखने का पारिश्रमिक सौ रुपए प्रति एक हजार शब्द लेकिन दस हजार रुपए से अधिक नहीं।

(ख) सम्पादन के लिए दस रुपए प्रति हजार शब्द (लेकिन केवल तभी जब विभाग यह महसूस करे कि कोई विशेष पांडुलिपि गहन सम्पादन की अपेक्षा रखती है)।

(ग) किसी विशेष स्थिति के फ़ोटोग्राफ के लिए प्रति फ़ोटो पन्द्रह रुपए (किन्तु सामान्यत: यह काम शिक्षण-साधन विभाग को सौंपना चाहिए)।

(घ) प्रूफ़ पढ़ने के लिए प्रति मुद्रित पृष्ठ एक रुपया और पेस्ट-अप डमी बनाने के लिए भी प्रति मुद्रित पृष्ठ एक रुपया।

(11) यह तय किया गया है कि सभी वरिष्ठ अनुसंधान सहायकों को लेक्चरर बनने के लिए चयन समिति के सम्मुख जाना पड़ेगा। ऐसे प्रत्याशियों को परिषद् स्वयं लेक्चरर की जगहों के लिए प्रवर्तित करेगी।

(12) इस बात पर सहमति प्रगट की गई कि जिस चयन समिति ने केन्द्रीय विद्यालय संगठन के आधार पर प्रोफेसनल सहायक अथवा वरिष्ठ अनुसंधान सहायकों को स्कूल शिक्षक की पी० जी० टी०/टी० जी० टी० श्रेणियों में रखने के लिए, उनकी योग्यता का मूल्यांकन किया था, वह समिति सभी प्रत्याशियों की योग्यताओं का, दिल्ली प्रशासन द्वारा निर्धारित योग्यताओं के आधार पर पुनर्मूल्यांकन कर सकती है और तत्पश्चात् उन नामों को संस्तुत कर सकती है जिन्हें वह पी० जी० टी० अथवा टी० जी० टी० के वेतनमानों के योग्य समझे।

(13) शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन के नौ-महीने वाले डिप्लोमा कोर्स के निमित्त प्रवेशार्थियों की जगहें पच्चीस से बढ़ाकर पैंतीस कर दी गई और उनको मिलने वाले वजीफों की संख्या भी पन्द्रह से बढ़ा कर पचीस कर दी गई। वजीफे की रकम भी 150 रुपए से बढ़ा कर 200 रुपए कर दी गई है।

(14) स्कूल स्तर के शैक्षणिक कर्मचारियों को अध्ययन-अवकाश की सुविधा देने के लिए तय किया गया कि इस दिशा में केन्द्रीय विद्यालय संगठन की प्रणाली को ही अपनाया जाय।

(15) क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में बी० एड० दिलाने के लिए ग्रीष्म स्कूल-सह-पत्राचार पाठ्यक्रमों के बारे में तय किया गया कि उन्हें दो वर्षों के लिए और बढ़ा दिया जाय अर्थात् 1976-77 तक चलाया जाए।

(16) व्यक्तिगत सहायकों और आशुलिपिकों की जगहें भरने के नियमों में प्रस्तावित संशोधन को स्वीकृति दे दी गई। सहायकों के लिए यह भी माना गया कि उच्च श्रेणी के लिपिक भी जो स्नातक नहीं हैं, उन प्रत्याशियों का मुकाबला कर सकते हैं जो सर्टिफिकेट ऑफ प्रोफिसिएंसी का कोर्स सफलता के साथ पूरा करते हैं

और उनके इस सर्टिफिकेट ऑफ प्रोफिसिएंशी को किसी भी मान्यता प्राप्त विश्व-विद्यालय की डिग्री के बराबर माना जाता है ।

(17) समिति ने यह तय किया कि राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना को अपने वर्तमान रूप में 1976 तक चलने दिया जाए और इसके क्षेत्र को चिकित्सा, अभि-यांत्रिकी और सामाजिक विज्ञान तक बढ़ाने के पहले पाठक समिति की रिपोर्ट की प्रतीक्षा की जाए, समिति ने यह भी तय किया कि परिषद् को राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना के अन्तर्गत वजीफा पाने वालों की योग्यता के आधार पर एक प्रतीक्षा-सूची भी बनानी चाहिए ताकि जिन वजीफों का इस्तेमाल नहीं हुआ हो, उनको इस्तेमाल कर लिया जाय ।

(18) क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों को स्वायत्तता दिलाने के प्रस्ताव को इसने मंजूरी दे दी ।

(19) वार्षिक रिपोर्ट के प्रारूप पर विचार किया गया और कुछ सुझावों को स्वीकृत कर उन्हें उसमें शामिल कर लिया गया ।

6.3 वित्त समिति

रिपोर्टाधीन वर्ष में परिषद् की वित्त समिति की पाँच बैठकें 18-4-1974, 7-11-74, 30-12-1974, 28-2-1975 और 20-3-1975 को हुईं । इन बैठकों में समिति द्वारा लिए गए मुख्य निर्णय इस प्रकार हैं—

(1) सन् 1973-74 का संशोधित अनुमानित खर्च 104·37 लाख रुपए होता है और 1974-75 (योजनांतर्गत) का बजट अनुमान 108 लाख रुपयों का होता है । दोनों को ही अनुमोदित किया गया ।

(2) शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन के नौ-महीने वाले डिप्लोमा कोर्स के निमित्त प्रवेशार्थियों की जगहें पचीस से बढ़ाकर पैंतीस कर दी गईं और उनको मिलने वाले वजीफ़ा की राशि भी 150 रुपए से बढ़ाकर दो सौ रुपए कर दी गई ।

(3) यह तय किया गया कि क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में विद्यमान व्यक्तिगत सहायक श्रेणी 2 की चारों जगहें खतम कर दी जाएँ और उनकी जगह पर चार जगहें विशेष सहायक की बनाई जाएँ ।

(4) रविवार, छुट्टियों के दिन और अन्य कार्य दिवसों पर कर्मचारियों के लिए ओवरटाइम भत्ते को स्वीकार करने की शक्तियों, नियमानुकूल छुट्टियों को मंजूर करने की शक्तियों और पेशगी रकम मंजूर करने की शक्तियों को क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के प्रिंसिपलों को दे दिया गया । भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महा-विद्यालय में टी० जी० टी० की नौ जगहें और पी० जी० टी० की एक जगह बनाए जाने के प्रस्ताव को मंजूर कर लिया गया ।

(5) सिद्धान्त रूप में इस बात को सहमति मिल गई कि परिषद् एम० एम० टी० सी० से उनके द्वारा बनाए गए फ्लैटों को किराए पर लेने की बातचीत की सम्भावना पर विचार करे और उनसे बात शुरू करे। वे फ्लैट परिषद् के परिसर के निकट ही बने हुए हैं। परिषद् को यह सलाह दी गई कि इस प्रस्ताव को तभी फाइनल माना जाय जब इसे शिक्षा मंत्री और वित्तीय सलाहकार ठीक मान लें।

(6) क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में बी० एड० दिलाने वाले ग्रीष्म स्कूल-सह-पत्राचार पाठ्यक्रम में दाखिला लेने वाले सभी विद्यार्थियों से दो-दो सौ रुपए ट्यूशन फीस लेने के प्रस्ताव को मान लिया गया।

(7) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के अतिथि भवन के लिए 425-800 रुपए के वेतनमान में प्रबन्धक की एक जगह बनाए जाने के प्रस्ताव को इसने मंजूरी दे दी।

(8) भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में वर्कशॉप के परिचर-सह-ट्रैक्टर-ड्राइवर के वेतन को संशोधित करके स्टाफ कार ड्राइवर के वेतनमान के बराबर कर देने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी गई।

(9) वरिष्ठ लेखा अधिकारी की अस्थायी नौकरी को 31-3-1975 तक के लिए बढ़ा देने के प्रस्ताव को समिति ने मान लिया और सलाह दी कि इस नौकरी को 31-3-1975 के बाद तक भी चलाए रखने की सम्भावना पर समीक्षा की जाए।

(10) क्षेत्रीय सलाहकारों की पाँच नई जगहें बनाए जाने के प्रस्ताव को स्वीकृत किया गया।

(11) तय किया गया कि क्षे०शि०म० में जितने भी प्रयोगशाला परिचर हैं उनमें जो भी मैट्रिक हों उनको 31-7-73 से प्रयोगशाला सहायक कहा जाय। जो दूसरे प्रयोगशाला-परिचर हैं उन्हें भी प्रयोगशाला-सहायक कहा जाएगा यदि वे मैट्रिक की परीक्षा पास कर लेंगे। जब तक वे इस परीक्षा को नहीं पास करते तब तक उनको प्रयोगशाला-परिचर का ही वेतन मिलेगा जो कि 1-1-1973 से केन्द्रीय विद्यालय संगठन के वेतनमान के बराबर है।

(12) सन् 1974-75 के लिए संशोधित अनुमानित खर्च 137 लाख रुपए पक्का किया गया जबकि प्रस्तावित संख्या 178 लाख रुपयों की थी। 1975-76 के लिए बजट अनुमानों की राशि 150 लाख रुपए रखी गई।

(13) संगोष्ठियों के साधन व्यक्तियों और निर्देशक के मानदेय की दरों के संशोधनों को मान लिया गया।

(14) केन्द्र अधीक्षक (सेंटर सुपरिन्टेण्डेन्ट) और उस लिपिक वर्ग, जो राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का नहीं है (राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना की परीक्षाओं में लगा हुआ), के पारिश्रमिक की दरों को इस प्रकार से स्वीकृत किया गया—

केन्द्र अधीक्षक (सेंटर सुपरिन्टेण्डेन्ट)—सौ रुपए

निरीक्षक —दस रुपये प्रतिदिन अथवा आठ रुपए प्रति सत्र

लिपिक वर्ग के कर्मचारी —पचास रुपये प्रति वर्ष के पूरे इम्तहान के लिए

(15) सहायक क्षेत्रीय सलाहकारों की सात जगहें स्वीकृत की गईं।

(16) योजना 1974-75 के अन्तर्गत दस लाख रुपये की अतिरिक्त निधि को इस प्रकार से बाँटा गया—

(क) पुस्तकालय भवन को —पाँच लाख रुपए

(ख) प्रकाशन विभाग के गोदाम की इमारतों को —डेढ़ लाख रुपए

(ग) भोपाल के क्षे०शि०म० के मकानों को —2.8 लाख रुपए

(घ) महाविद्यालयों के लिए अपेक्षित अति आवश्यक उपकरणों की खरीद के लिए, विविध —0.70 लाख रुपए

6.4 संस्थापन समिति

संस्थापन समिति की बैठक 10 जून, 1974 को हुई, जिसमें निम्नलिखित निर्णय लिए गए—

(1) विशेषज्ञों की एक नामिका को चयन समिति के सदस्यों के रूप में स्वीकृत किया गया।

(2) समिति ने इस बात की मंजूरी दे दी कि जिन स्थायी कर्मचारियों को राजकीय-संस्थानों/स्वायत्त/अर्द्धसरकारी संगठनों में नौकरी मिल जाती है, उनको अपनी स्थायी जगहों पर दो वर्ष तक के लिए ग्रहणाधिकार (लिएन) मिल जाना चाहिए। विशेष मामलों में लिएन की सुविधा एक और वर्ष के लिए भी दी जा सकती है।

(3) परिषद् के जो अधिकारी विदेशी नियुक्तियों पर भारत में या भारत के बाहर जाने वाले हैं, उनके बारे में निर्णय लिया गया कि मूल रूप से उन्हें दो वर्षों का लिएन मिलेगा, पर इसको एक और वर्ष के लिए बढ़ाया जा सकता है।

6.5 निर्माण तथा कार्य समिति

निर्माण तथा कार्य समिति की बैठक 19 अक्तूबर 1974 को हुई जिसमें निम्नलिखित निर्णय लिए गए :

(1) समिति ने इस प्रस्ताव को स्वीकृत किया कि केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग से रखरखाव के कार्य को एक अप्रैल 1975 से ले लिया जाए

और समिति ने इस बात से सहमति प्रकट की कि केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग जितने कर्मचारियों को रख कर काम कर रहा था, जिसके लिए परिषद् को बिल का भुगतान करना पड़ता था, उतने ही कर्मचारियों के लिए परिषद् नई जगहें बनाए। इसके अलावा यह भी तय हुआ कि बिजली के और बागबानी के विविध कार्यों के तकनीकी समन्वय के लिए, निम्नलिखित अतिरिक्त जगहें भी बनाई जाएँ—सहायक अभियन्ता की एक जगह, एक टाइपिस्ट और एक चपरासी की जगह।

(2) समिति ने यह सलाह दी कि आपसी बातचीत के द्वारा, जो परिषद् और एम० एम० टी० सी० के वित्तीय सलाहकारों तथा निर्माण और आवास मन्त्रालय के सह वित्तीय सलाहकार के मध्य होगी, सीधी खरीद के प्रस्तावों को अन्तिम रूप दे दिया जाए।

(3) समिति ने राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान परिसर में पुस्तकालय और कागज के गोदाम की इमारतों के निर्माण की सलाह को स्वीकृति दे दी, बशर्ते कि शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय इस बात के लिए वित्तीय दृष्टि से 'हाँ' कर दे।

(4) सन् 1974-75 के दौरान, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान परिसर में इमारतों के रख रखाव और सालाना मरम्मत तथा बगीचे के वास्ते 70, 250 रुपये इमारतों के लिए तथा 64, 035 रुपये बागबानी के लिए स्वीकृत किए गए।

(5) भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के टाइप 1 के क्वाटर में एक छत वाला पंखा लगाने के लिए और टाइप 2 के क्वाटर में एक अतिरिक्त छत वाला पंखा लगाने के लिए स्वीकृति दे दी गयी।

6.6 कार्यक्रम सलाहकार समिति

(1) सी० ए० बी० ई० के निर्देशों को लागू करना

सी० ए० बी० ई० द्वारा निर्धारित किए गए मोटे लक्ष्य हैं—

(क) प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण और

(ख) अनौपचारिक शिक्षा।

समिति ने इस बात की सिफारिश की कि इन कार्यक्रमों को लागू करने के काम को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

(2) नया स्कूली पाठ्यक्रम

10+2 के पाठ्यक्रम को लागू करने का काम उन बड़े कामों में से एक है जिन्हें परिषद् को करना है। समिति ने इस बात की सिफारिश की कि पहले दस वर्षों

की स्कूलिंग को हाथ में लिया जाय, बाद में धन दो (प्लस टू) स्तर पर किसी विशिष्ट व्यवसाय के लिए आवश्यक जरूरतों को देखा जाय। पाठ्यक्रम के लिए सामान्य विचार यह था कि अधिकांश व्यक्तियों के लिए मिडिल स्तर पर या दस वर्षों के अन्त में शिक्षा को अन्तिम होना चाहिए। इस बात को तर्कसंगत माना गया कि पाठ्यक्रम विकास नीचे से ऊपर तक होना चाहिए। यह सुझाव भी दिया गया कि पढ़ाना और सीखना की परिस्थिति के लिए समय का महत्व, वय क्रम के हिसाब से शैक्षणिक सामग्री का औचित्य और अध्यापकों का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम विकास का आवश्यक तत्व होना चाहिए।

(3) अध्यापक-शिक्षा की राष्ट्रीय परिषद्

समिति ने महसूस किया कि अध्यापक-शिक्षा की राष्ट्रीय परिषद् को एक स्वतन्त्र और मजबूत संगठन होना चाहिए जिसकी तुलना भारतीय चिकित्सा परिषद् जैसी व्यावसायिक संस्थानों से ही की जा सके। इसको अध्यापक शिक्षा के सभी पहलुओं से सम्बद्ध होना चाहिए। बोगस प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सवाल पर भी बहस हुई। समिति ने इस बात की सिफारिश की कि अध्यापक-शिक्षा की राष्ट्रीय परिषद् को उन विशिष्ट मानकों को तैयार करना चाहिए जिनको विश्वविद्यालयों में लिया जा सके ताकि प्रशिक्षण महाविद्यालयों अथवा संस्थानों को मान्यता मिल सके।

(4) जर्नल ऑफ इण्डियन एजुकेशन

समिति ने इस बात की सिफारिश की कि एन० आई० ई० जर्नल को बदल कर 'जर्नल ऑफ इण्डियन एजुकेशन' कर दिया जाय और उसे दो मास में एक बार निकाला जाये। इस मुख पत्र को अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालयों और शिक्षा विभागों के मध्य अधिक सम्भाषण का माध्यम बनाया जाना चाहिए और इसे शिक्षा के क्षेत्र में कुछ करना चाहिए। भारत के सभी स्रोतों से शिक्षा के क्षेत्रों की अनुसंधान रिपोर्टों को और भारत तथा बाहर के देशों के विकासों को इस मुखपत्र में पर्याप्त जगह मिलनी चाहिए।

7

वर्ष 1974-75 के लिए समेकित प्राप्तियां तथा खर्च

प्राप्तियां	(संख्या रुपये में)
अल्प शेष	2920802-00
भारत सरकार से मिले अनुदान :	
(क) सामान्य अनुदान	43057000-00
(ख) विशेष अनुदान	2329642-00
प्राप्तियां	
(क) प्रकाशन की बिक्री आदि	2581665-00
(ख) अन्य प्राप्तियां	2457795-00
भविष्य निधियां	1870411-00
जमा रकमें, पेशगियां, उचंत और प्रेषण	1469174-00
जोड़—	56686489-00

भुगतान		(संख्या रुपये में)
योजनेतर व्यय		
(क) वेतन तथा भत्तों तथा कार्यक्रम आदि पर व्यय		31252126-00
(ख) ऋण तथा पेशगियां	1279108	
वसूलियां घटाकर	594152	684956-00
योजना व्यय		
(क) वेतन, भत्तों और कार्यक्रमों आदि पर व्यय		8459176-60
(ख) तीसरा अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण		6964591-00
(ग) विशेष अनुदान में से व्यय		2057072-00
(घ) केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को दी गई निधि		712560-00
भविष्य निधि		1656514-00
जमा रकमें, पेशगियां, उचंत और प्रेषण		3500597-00
इति शेष		1398897-00
जोड़—		56686489-00

परिशिष्ट-क

परिषद् के महत्त्वपूर्ण अंगों की संरचना

I. परिषद्

1. प्रो० सैयद नूरुल हसन
   केन्द्रीय मन्त्री
   शिक्षा तथा समाज-कल्याण-मंत्रालय
   शास्त्री भवन,
   नई दिल्ली (अध्यक्ष)

2. प्रो० सतीशचन्द्र
   अध्यक्ष,
   विश्वविद्यालय-अनुदान-आयोग
   बहादुरशाह जफर मार्ग
   नई दिल्ली

3. श्री के० एन० चन्ना
   सचिव, भारत सरकार
   शिक्षा तथा समाज-कल्याण-मंत्रालय
   शास्त्री भवन,
   नई दिल्ली

भारत सरकार द्वारा नामजद उपकुलपति

4. डा० आर० सी० पाल
   उपकुलपति
   पंजाब विश्वविद्यालय,
   चंडीगढ़

5. श्री टी० के० टोपे
   उपकुलपति,
   बंबई विश्वविद्यालय,
   बंबई

6. प्रो० डी० जवरे गौडा
   उपलकुपति
   मैसूर विश्वविद्यालय,
   मैसूर

7. डा० ए० एन० बोस
   उपकुलपति
   जादवपुर विश्वविद्यालय,
   कलकत्ता

राज्य/विधानांगों वाले संघ-राज्य-क्षेत्र के प्रतिनिधि

8. शिक्षा-मंत्री
   आन्ध्र प्रदेश,
   हैदराबाद

9. शिक्षा-मंत्री,
   असम,
   गोहाटी

10. शिक्षा-मंत्री
    बिहार,
    पटना

11. श्री के० टी० सतारावाला,
    राज्यपाल के सलाहकार,
    गुजरात,
    अहमदाबाद

12. शिक्षा-मंत्री,
    हरियाणा,
    चंडीगढ़

13. शिक्षा-मंत्री
    हिमाचल प्रदेश,
    शिमला

14. शिक्षा-मंत्री
    जम्मू तथा कश्मीर,
    श्रीनगर

15. शिक्षा-मंत्री
    कर्नाटक,
    बंगलौर

16. शिक्षा-मंत्री,
    केरल,
    त्रिवेन्द्रम

17. शिक्षा-मन्त्री,
    मध्य प्रदेश,
    भोपाल

18. शिक्षा-मंत्री,
    महाराष्ट्र,
    बंबई

19. शिक्षा-मंत्री
    मणिपुर,
    इम्फाल

20. शिक्षा-मंत्री,
    मेघालय,
    शिलांग

21. शिक्षा-मंत्री,
    नागालैंड
    कोहिमा

22. शिक्षा-मंत्री
    उड़ीसा,
    भुवनेश्वर

23. शिक्षा-मंत्री
    पंजाब,
    चंडीगढ़

24. शिक्षा-मंत्री
    राजस्थान,
    जयपुर

25. शिक्षा-मंत्री
    तमिलनाडु,
    मद्रास

26. शिक्षा-मंत्री
    त्रिपुरा,
    अगरतल्ला

27. शिक्षा-मंत्री
    उत्तर प्रदेश,
    लखनऊ

28. शिक्षा-मंत्री
    पश्चिमी बंगाल,
    कलकत्ता

29. मुख्य कार्यकारी पार्षद,
    दिल्ली प्रशासन,
    दिल्ली

30. शिक्षा-मंत्री
    मिजोरम सरकार,
    ऐजल

31. शिक्षा-मंत्री
    गोआ, दमन और दीव,
    पणजी

32. शिक्षा-मंत्री
    पांडिचेरी सरकार,
    पांडिचेरी

कार्यकारी समिति के सदस्य

33. प्रो० डी० पी० यादव
    उप-मन्त्री
    शिक्षा तथा समाज-कल्याण-मंत्रालय
    शास्त्री भवन,
    नई दिल्ली

34. प्रो० रईस अहमद
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

35. प्रो० एम० वी० माथुर,
महानिदेशक
राष्ट्रीय व्यावहारिक अर्थशास्त्रीय अनुसंधान परिषद्,
नई दिल्ली

36. प्रो० सं० वि० चंद्रशेखर अय्या,
59/4 पार्क स्ट्रीट,
आई० ब्लाक ईस्ट,
जयनगर, बंगलौर

37. श्री एम० एन० कपूर
प्रधानाचार्य
माडर्न स्कूल, बाराखंभा रोड,
नई दिल्ली

38. श्री डी० एस० नैरूला
प्रधानाचार्य
केन्द्रीय विद्यालय,
हाथीबड़कला,
देहरादून

39. डा० शिव के० मित्र
संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

40. डा० श्रीमती पेरिन एच० मेहता
अध्यक्ष
शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा-आधार-विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

41. डा० जी० बी० कानूनगो
प्रधानाचार्य,
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,
भोपाल

42. डा० जी० एस० श्रीकांतिया
प्रोफेसर
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

43. श्री टी० आर० जयरामन्
संयुक्त सचिव
शिक्षा तथा समाज-कल्याण-मंत्रालय
शास्त्री भवन,
नई दिल्ली

44. श्री एस० वेंकटरामन्
वित्तीय सलाहकार
(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्)
वित्त-मंत्रालय, साउथ ब्लाक,
नई दिल्ली

भारत सरकार द्वारा नामजद

45. श्री अर्जुनभाई जोटालाल बाथवाड़,
हेडमास्टर
अमरेली नगरपालिका कुमार शाला नं०2
अमरेली
गुजरात

46. श्री एन० श्रीधरन पिल्ले
हेडमास्टर,
एल० टी० जी० स्कूल,
वरकला,
त्रिवेंद्रम जिला
केरल

47. श्रीमती उषा रोडे
प्रिंसिपल
राजकीय बालिका विद्यालय;
बुढ़हानपुर
पूर्वी निमाड़
मध्य प्रदेश

48. श्री खलील अहमद
प्रिंसिपल
जी० एम० हाई स्कूल
बढडिया
सिवान
बिहार

49. डा० एन० आर० कर
लोक शिक्षा निदेशक
पश्चिम बंगाल
कलकत्ता

50. श्री जी० बी० गुप्ता
लोक शिक्षा निदेशक,
हरियाणा
चंडीगढ़

51. श्री सी० जी० रंगवाइयम
शिक्षा सचिव
तमिलनाडु सरकार
मद्रास

52. श्री एस० वी० शरण
शिक्षा सचिव,
उत्तर प्रदेश सरकार
लखनऊ

53. प्रोफेसर ए० एम० घोंडे
अध्यक्ष,
अखिल भारतीय प्राथमिक स्कूल
अध्यापक संघों का संगठन
तपोधन
बी० पी० रोड,
बांद्रा
बम्बई

54. श्री बी० पी० राय
के० ई० एच० एस० स्कूल,
पोस्ट समस्तीपुर
दरभंगा
बिहार

55. श्री पी० आर० चौहान
आयुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली

56. डा० बी० डी० नाग चौधरी
उप कुलपति
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

II. कार्यकारी समिति

पदेन

1. प्रो० सैयद नूरुल हसन
केन्द्रीय मन्त्री
शिक्षा तथा समाज-कल्याण-मंत्रालय
शास्त्री भवन,
नई दिल्ली (अध्यक्ष)

2. प्रो० डी० पी० यादव
उप-मन्त्री
शिक्षा तथा समाज-कल्याण-मंत्रालय,
शास्त्री भवन,
नई दिल्ली

3. प्रो० रईस अहमद
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

4. प्रो० सतीशचन्द्र
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय-अनुदान-आयोग,
नई दिल्ली

5. डा० शिव के० मित्र
संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

राष्ट्रीय शै० अ० और प्र० प० के अध्यक्ष द्वारा नामजद चार शिक्षा-विद्

6. प्रो० एम० वी० माथुर
महा निदेशक
राष्ट्रीय व्यावहारिक अर्थशास्त्रीय अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

7. प्रो० सं० वि० चन्द्रशेखर अय्या
59 फर्स्ट ब्लाक ईस्ट,
जयनगर,
बंगलौर

8. श्री डी० एस० नैरूला,
प्रधानाचार्य
केन्द्रीय विद्यालय, हाथी बड़कला,
देहरादून

9. श्री एम० एन० कपूर
प्रधानाचार्य
माडर्न स्कूल
बाराखंमा रोड,
नई दिल्ली

रा० शै० अ० प्र० प० के अध्यक्ष द्वारा नामजद परिषद् की संकाय

10. डा० श्रीमती पेरिन एच० मेहता
अध्यक्ष
शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा-आधार-विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

11. डा० जी० बी० कानूनगो
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,
भोपाल

12. डा० जी० एस० श्रीकांतिया
प्रोफेसर
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

शिक्षा तथा समाज-कल्याण मन्त्रालय के प्रतिनिधि

13. श्री टी० आर० जयरामन्
संयुक्त सचिव
शिक्षा तथा समाज-कल्याण मंत्रालय,
नई दिल्ली।

वित्त मन्त्रालय के प्रतिनिधि

14. श्री एस० वेंकट रामन्
वित्तीय सलाहकार (रा० शै० अ० प्र० प०) कमरा नं० 48-ए,
ग्राउण्ड फ्लोर, साउथ ब्लाक,
नई दिल्ली

15. श्रीमती जे० अंजनी दयानन्द,
सचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली **(सचिव) पदेन**

III. संस्थापन-समिति

1. प्रो० रईस अहमद
   निदेशक
   राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
   और प्रशिक्षण परिषद्,
   नई दिल्ली (अध्यक्ष)
2. डा० शिव के० मित्र
   संयुक्त निदेशक,
   राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
   प्रशिक्षण परिषद्
   नई दिल्ली
3. श्री टी० आर० जयरामन्
   संयुक्त सचिव
   शिक्षा तथा समाज-कल्याण-मंत्रालय,
   नई दिल्ली
4. श्री एस० वेंकटरामन
   वित्तीय सलाहकार (परिषद्)
   कमरा नं० 48-ए, ग्राउण्ड फ्लोर,
   साउथ ब्लाक,
   नई दिल्ली
5. प्रो० बी० वेंकटरामन,
   टी० आई० एफ० आर०
   होमी भाभा रोड,
   बम्बई
6. प्रो० एम० वी० माथुर
   महानिदेशक
   राष्ट्रीय व्यावहारिक अर्थशास्त्रीय
   अनुसन्धान परिषद्,
   नई दिल्ली
7. प्रो० सं० वि० चन्द्रशेखर अय्या
   59 फर्स्ट ब्लाक
   ईस्ट जयनगर,
   बंगलौर
8. डा० एस० सलामत उल्लाह
   प्रिंसिपल,
   जामिया मिलिया इस्लामिया
   नई दिल्ली
9. प्रो० जी० बी० कानूनगो
   प्रिंसिपल
   क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,
   भोपाल
10. डा० श्रीमती पेरिन एच० मेहता,
    अध्यक्ष
    शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा-आधार-विभाग,
    राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और
    प्रशिक्षण परिषद्,
    नई दिल्ली
11. और
12. परिषद् के नियमित शैक्षणिक एवं अ-शैक्षणिक कर्मचारियों के एक-एक प्रतिनिधि
13. श्रीमती जे० अंजनी दयानन्द
    सचिव
    राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और
    प्रशिक्षण परिषद्,
    नई दिल्ली (सचिव सदस्य)

IV. वित्त-समिति

1. प्रो० रईस अहमद
   निदेशक
   राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और
   प्रशिक्षण परिषद्
   नई दिल्ली
2. श्री टी० आर० जयरामन्
   संयुक्त सचिव
   शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय,
   नई दिल्ली

3. प्रो० एम० वी० माथुर
महानिदेशक
राष्ट्रीय व्यावहारिक अर्थशास्त्रीय
अनुसन्धान परिषद्,
नई दिल्ली

4. श्री एम० एन० कपूर
प्रधानाचार्य
माडर्न स्कूल,
बाराखम्भा रोड,
नई दिल्ली

5. श्री एस० वेंकटरामन्
वित्तीय सलाहकार
(रा० शै० अ० प्र० प०) कमरा
नं० 48-ए,
ग्राउण्ड फ्लोर, साउथ ब्लाक,
नई दिल्ली

6. श्रीमती जे० अंजनी दयानन्द
सचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली
(सचिव) पदेन

V. निर्माण तथा कार्य समिति

1. प्रोफेसर रईस अहमद
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली (अध्यक्ष)

2. डा० शिव के० मित्र
सह-निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

3. श्री एस० सी० कपूर
निर्माण सर्वेक्षक अधीक्षक (1)
केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग
निर्माण भवन,
नई दिल्ली

4. श्री मेहर सिंह
सहायक वित्तीय सलाहकार
वित्त-मन्त्रालय (कार्य)
निर्माण-भवन,
नई दिल्ली

5. श्री के० एम० सक्सेना
ज्येष्ठ वास्तुक (1)
केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग
(परिषद् का परामर्शी वास्तुक)
निर्माण भवन,
नई दिल्ली

6. श्री एस० वेंकटरामन्
वित्तीय सलाहकार
(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और
प्रशिक्षण परिषद्),
वित्त मन्त्रालय, कमरा नं० 48-ए,
ग्राउण्ड फ्लोर, साउथ ब्लाक,
नई दिल्ली

7. श्री टी० आर० जयरामन्
संयुक्त सचिव
शिक्षा तथा समाज कल्याण
मन्त्रालय,
शास्त्री भवन,
नई दिल्ली

8. श्री आई० सी० सांगेर
   उप-महा-प्रबन्धक,
   दिल्ली बिजली-पूर्ति-निगम;
   राजघाट बिजली घर,
   नई दिल्ली

9. श्री एच० यू० बिजलानी
   मुख्य इन्जीनियर
   दिल्ली नगरपालिका निगम,
   टाउन हाल,
   दिल्ली

10. श्री एम० एन० कपूर
    प्रधानाचार्य
    माडर्न स्कूल,
    बाराखम्भा रोड,
    नई दिल्ली

11. श्रीमती जे० अंजनी दयानन्द
    सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान
    और प्रशिक्षण परिषद्,
    नई दिल्ली
    (सदस्य-सचिव)

VI. कार्यक्रम-सलाहकार-समिति

1. प्रो० रईस अहमद
   निदेशक
   राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान
   और प्रशिक्षण परिषद्,
   नई दिल्ली (अध्यक्ष)

2. डा० शिव के० मित्र
   संयुक्त निदेशक
   राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान
   और प्रशिक्षण परिषद्,
   नई दिल्ली (उपाध्यक्ष)

3. डा० के० कुमार स्वामी पिल्ले
   अध्यक्ष
   शिक्षा विभाग
   अन्नामलाइ विश्वविद्यालय
   अन्नामलाइ नगर,
   तमिलनाडु

4. डा० के० पी० पांडे
   डीन
   शिक्षा-संकाय एवं निदेशक,
   पत्राचार पाठ्यक्रम
   हिमाचलप्रदेश विश्वविद्यालय,
   शिमला

5. डा० वी० के० कोठुर्कर
   अध्यक्ष
   प्रयोगात्मक मनोविज्ञान विभाग
   पूना विश्वविद्यालय,
   पूना

6. डा० आर० बी० माथुर
   अध्यक्ष
   शिक्षा विभाग
   लखनऊ विश्वविद्यालय,
   लखनऊ

7. डा० एन० वी० तीर्थ
   प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
   शिक्षा में स्नातकोत्तर अध्ययन-
   विभाग
   बंगलौर विश्वविद्यालय,
   बंगलौर

8. डा० वी० बी० तनेजा
   निदेशक
   राज्य-शिक्षा-संस्थान
   हरियाणा,
   गुड़गाँव

9. श्री शिवकुमार
निदेशक
राज्य-शिक्षा-संस्थान
राजस्थान,
उदयपुर

10. श्री जे० पी० व्यास
निदेशक
राज्य-शिक्षा-संस्थान
मध्यप्रदेश,
जहाँगीराबाद
भोपाल

11. श्री० डी० पाणिग्रही
निदेशक
राज्य-शिक्षा-संस्थान
उड़ीसा,
भुवनेश्वर

12. श्री वेंकट सुब्रह्मण्यम
निदेशक
राज्य-शिक्षा-संस्थान,
तमिलनाडु
6, वैद्यनाथयन स्ट्रीट,
नुंगमबक्कम
मद्रास

13. प्रो० डी० एस० रावत
अध्यक्ष
स्कूल-शिक्षा-विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

14. श्री एल० आर० एन० श्रीवास्तव
रीडर
स्कूल-शिक्षा-विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

15. प्रो० ए० एन० बोस
अध्यक्ष
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

16. प्रो० बी० शरण
प्रोफेसर
विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

17. श्री अनिल विद्यालंकार,
कार्यकारी अध्यक्ष
सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

18. प्रो० बी० एस० पारिख
प्रोफेसर
सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

19. डा० (श्रीमती) पैरिन एच० मेहता
अध्यक्ष
शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा-आधार-विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

20. डा० सी० के० बसु
प्रोफेसर
शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा-आधार-विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

21. डा० आर० सी० दास
अध्यक्ष
अध्यापक शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

22. श्री बी० एन० पांडेय
रीडर
अध्यापक-शिक्षा-विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

23. डा० रामगोपाल मिश्र
अध्यक्ष
पाठ्यपुस्तक विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

24. श्रीमती आदर्श खन्ना
रीडर
पाठ्य पुस्तक विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

25. श्री शंकर नारायण
कार्यकारी अध्यक्ष
शिक्षण-साधन-विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

26. श्री तिलकराज
रीडर
शिक्षण-साधन-विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

27. श्री बी० के० शर्मा
अध्यक्ष
कारखाना विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

28. श्री पी० के० भट्टाचार्य
तकनीकी अधिकारी
कारखाना विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

29. श्री जयपाल नांगिया
कार्यकारी अध्यक्ष
प्रकाशन विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

30. कुमारी खुर्शीद वाडिया
सम्पादक
प्रकाशन विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

31. डा० पी० एन० दवे
प्रिंसिपल
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,
अजमेर

32. श्री टी० एन० रैना
रीडर
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,
अजमेर

33. प्रो० जी० बी० कानूनगो
प्रिंसिपल
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,
भोपाल

34. डा० जे० एस० राजपूत
प्रोफेसर
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,
भोपाल

35. डा० श्रीमती जी० आर० घोष
कार्यकारी प्रिंसिपल
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,
भुवनेश्वर

36. डा० (कुमारी) ई० मार
प्रोफेसर
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,
भुवनेश्वर

37. श्री एस० एन० साहा
प्रिंसिपल
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,
मैसूर

38. प्रो० ए० के० शर्मा
प्रोफेसर
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,
मैसूर

परिशिष्ट-ख

वर्ष 1974-75 के दौरान के प्रकाशन

पाठ्य पुस्तकें

(1) गद्य भारती (पुनर्मुद्रण)
(2) काव्य भारती (पुनर्मुद्रण)
(3) कहानी-संकलन (पुनर्मुद्रण)
(4) स्वतन्त्र भारत (पुनर्मुद्रण)
(5) भारत और संसार (पुनर्मुद्रण)
(6) रसायन विज्ञान भाग 1 (सातवीं कक्षा के लिए) (पुनर्मुद्रण)
(7) रसायन विज्ञान भाग 2 (आठवीं कक्षा के लिए) (पुनर्मुद्रण)
(8) रसायन विज्ञान भाग 1 (नवीं कक्षा के लिए)
(9) जीव विज्ञान भाग 2 (सातवीं कक्षा के लिए) (पुनर्मुद्रण)
(10) आओ पढ़ें और सीखें (पुनर्मुद्रण)
(11) आओ पढ़ें और समझें (पुनर्मुद्रण)
(12) स्थानीय शासन (पुनर्मुद्रण)
(13) हमारा देश भारत भाग 1 (पुनर्मुद्रण)
(14) काव्य के अंग (पुनर्मुद्रण)
(15) विज्ञान आओ करके सीखें (कक्षा चार के लिए) (पुनर्मुद्रण)
(16) जीव विज्ञान भाग 1 (पुनर्मुद्रण)
(17) राष्ट्र भारती भाग 1 (पुनर्मुद्रण)
(18) राष्ट्र भारती भाग 2 (पुनर्मुद्रण)
(19) राष्ट्र भारती भाग 3 (पुनर्मुद्रण)
(20) आओ पढ़ें और खोजें (पुनर्मुद्रण)
(21) एकांकी संकलन (पुनर्मुद्रण)
(22) जीवनी संकलन (पुनर्मुद्रण)
(23) आधुनिक भारत (पुनर्मुद्रण)
(24) संस्कृतोदयः (पुनर्मुद्रण)
(25) चलो पाठशाला चलें (पुनर्मुद्रण)
(26) आस्ट्रेलिया और उत्तर व दक्षिण अमरीका (पुनर्मुद्रण)

(27) विज्ञान आओ करके सीखें (कक्षा पांच के लिए) (पुनर्मुद्रण)
(28) आओ पढ़ें और सीखें (पुनर्मुद्रण)
(29) अरिथमेटिक अलजेब्रा पार्ट 2 (पुनर्मुद्रण)
(30) ज्यौमेट्री पार्ट 2 (पुनर्मुद्रण)
(31) इंग्लिश रीडर बुक 4 (पुनर्मुद्रण)
(32) लोकल गवर्नमेण्ट (पुनर्मुद्रण)
(33) बायोलोजी पार्ट 1 (पुनर्मुद्रण)
(34) केमिस्ट्री पार्ट 2 (पुनर्मुद्रण)
(35) इंग्लिश रीडर बुक 1 स्पेशल सीरीज (पुनर्मुद्रण)
(36) अलजेब्रा पार्ट 1 हा० से० (पुनर्मुद्रण)
(37) इंग्लिश रीडर बुक 2 (पुनर्मुद्रण)
(38) ज्यौमेट्री पार्ट 1 (पुनर्मुद्रण)
(39) बायोलोजी पार्ट 3 (पुनर्मुद्रण)
(40) अरिथमेटिक अलजेब्रा पार्ट 3 (पुनर्मुद्रण)
(41) अलजेब्रा पार्ट 2 (पुनर्मुद्रण)
(42) बायोलोजी सेक्शन 2 (पुनर्मुद्रण)
(43) इनसाइट इंटू मैथेमेटिक्स 1 (पुनर्मुद्रण)
(44) ज्यौमेट्री पार्ट 3 (पुनर्मुद्रण)
(45) इंडिया एंड दि वर्ल्ड (पुनर्मुद्रण)
(46) अरिथमेटिक अलजेब्रा पार्ट 1 (पुनर्मुद्रण)
(47) यूरोप एंड इण्डिया (पुनर्मुद्रण)
(48) इंग्लिश रीडर बुक 3 स्पेशल सीरीज (पुनर्मुद्रण)
(49) इनसाइट इंटू मैथेमेटिक्स 4
(50) इनसाइट इंटू मैथेमेटिक्स 2 (पुनर्मुद्रण)
(51) इंग्लिश रीडर बुक 5 स्पेशल सीरीज (पुनर्मुद्रण)
(52) इंडेपेंडेंट इण्डिया (पुनर्मुद्रण)
(53) अवर कंट्री इण्डिया बुक 2 (पुनर्मुद्रण)
(54) बायोलोजी सेक्शन 4 व 5 (पुनर्मुद्रण)
(55) अवर कंट्री इण्डिया बुक 1 (पुनर्मुद्रण)
(56) बायोलोजी सेक्शन 1 (पुनर्मुद्रण)
(57) अवर कांस्टीट्यूशन एंड दि गवर्नमेंट (पुनर्मुद्रण)
(58) फिजिक्स पार्ट 3 (पुनर्मुद्रण)
(59) मेडिवल इण्डिया (पुनर्मुद्रण)
(60) आस्ट्रेलिया एंड अमेरिकाज (पुनर्मुद्रण)
(61) इंग्लिश रीडर बुक 1 स्पेशल सीरीज (पुनर्मुद्रण)

(62) इंग्लिश रीडर बुक 2 स्पेशल सीरीज (पुनर्मुद्रण)
(63) लेट अस लर्न इंग्लिश बुक 3 स्पेशल सीरीज (पुनर्मुद्रण)
(64) फिजिक्स पार्ट 2 (पुनर्मुद्रण)
(65) फिजिक्स पार्ट 1 (पुनर्मुद्रण)
(66) अरिथमेटिक अलजेब्रा पार्ट 3 (पुनर्मुद्रण)
(67) लोकल गवर्नमेन्ट (पुनर्मुद्रण)
(68) साइंस इज डूइंग क्लास 3 (पुनर्मुद्रण)
(69) अरिथमेटिक अलजेब्रा पार्ट 1 (पुनर्मुद्रण)
(70) बायोलोजी पार्ट 2 (पुनर्मुद्रण)

शिक्षक दर्शिकाएं एवं अभ्यास पुस्तिकाएँ

(71) आओ पढ़ें और समझें की अभ्यास-पुस्तिका (पुनर्मुद्रण)
(72) रानी मदन अमर की अभ्यास-पुस्तिका (पुनर्मुद्रण)
(73) चलो पाठशाला चलें की अभ्यास-पुस्तिका (पुनर्मुद्रण)
(74) आओ पढ़ें और सीखें की अभ्यास-पुस्तिका (पुनर्मुद्रण)
(75) साइंस इज डूइंग क्लास 5 की शिक्षक दर्शिका
(76) लेट अस लर्न इंग्लिश 2 की शिक्षक दर्शिका (पुनर्मुद्रण)
(77) इंग्लिश रीडर 3 स्पेशल सीरीज की अभ्यास पुस्तिका (पुनर्मुद्रण)
(78) इंग्लिश रीडर 1 स्पेशल सीरीज की अभ्यास पुस्तिका (पुनर्मुद्रण)
(79) इंग्लिश रीडर 3 स्पेशल सीरीज की अभ्यास पुस्तिका (पुनर्मुद्रण)
(80) इंग्लिश रीडर 5 स्पेशल सीरीज की शिक्षक दर्शिका
(81) इंग्लिश रीडर 3 की अभ्यास पुस्तिका
(82) लेट अस लर्न इंग्लिश रीडर 3 स्पेशल सीरीज की अभ्यास पुस्तिका (पुनर्मुद्रण)
(83) लेट अस लर्न इंग्लिश रीडर 1 स्पेशल सीरीज की अभ्यास पुस्तिका (पुनर्मुद्रण)
(84) लेट अस लर्न इंग्लिश रीडर 3 स्पेशल सीरीज की शिक्षक दर्शिका

पूरक पठन की सहायक पुस्तकें

(85) यातायात की कहानी
(86) स्वामी दयानन्द सरस्वती (हिन्दी)
(87) दि रोमांस ऑफ टीचिंग (पुनर्मुद्रण)
(88) जवाहरलाल नेहरू—पोर्ट्रेट ऑफ ऐन इंटेग्रेटेड इण्डियन

रिपोर्ट, अनुसंधान, मोनोग्राफ व अन्य प्रकाशन

(89) टीचिंग इन सिंगिल टीचर स्कूल
(90) लर्निंग टु बि (यूनेस्को प्रकाशन 'लर्निंग टु बि' का संक्षिप्त रूप)

(91) दि टीचर एंड नैशनल रिकांस्ट्क्शन
(92) इम्प्रूविंग दि क्वालिटी एंड सप्लाई ऑफ स्कूल टेक्स्ट बुक्स
(93) स्टुडेंट्स टीचिंग एंड एवैलुएशन
(94) नॉन फॉर्मल एजूकेशन
(95) करीक्यूलम फॉर दि टेन ईयर स्कूल
(96) ऐनुअल रिपोर्ट 1972-73
(97) वार्षिक रिपोर्ट 1972-73
(98) मैमोरेंडम ऑफ ऐसोसिएशन एंड रूल्स ऑफ एनसर्ट
(99) रेगूलेशंस ऑफ एनसर्ट
(100) ऑडिट रिपोर्ट 1971-72

पत्र-पत्रिकाएँ

(101) स्कूल साइंस, मार्च 1973
(102) स्कूल साइंस, जून 1973
(103) एन० आई० ई० जर्नल, मार्च 1974
(104) एन० आई० ई० जर्नल, मई 1974
(105) एन० आई० ई० जर्नल, जुलाई 1974
(106) एन० आई० ई० जर्नल, सितंबर 1974
(107) एनसर्ट न्यूजलेटर, मार्च-जून 1974
(108) एनसर्ट न्यूजलेटर, दिसम्बर 1974
(109) एनसर्ट न्यूजलेटर, जनवरी 1975
(110) एनसर्ट न्यूजलेटर, फरवरी 1975
(111) एनसर्ट न्यूजलेटर, मार्च 1975
(112) इण्डियन एजूकेशनल रिव्यू, जुलाई 1973

परिशिष्ट-ग

परिसरों का विकास

(1) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान परिसर

निम्नलिखित श्रेणियों के 120 क्वाटरों का निर्माण पूरा हो चुका था, उन्हें परिषद् के अधिकारियों को इस प्रकार से बाँट दिया गया—

टाइप 1	32
टाइप 2	32
टाइप 3	32
टाइप 4	16
टाइप 5	8

एम० एम० टी० सी० के 155 क्वाटरों को प्राप्त किया गया था, उन्हें भी परिषद् के कर्मचारियों को इस प्रकार बाँटा गया—

टाइप ए	31
टाइप बी	56
टाइप सी	26
टाइप डी	42

इन क्वाटरों में जो लोग आ गए हैं, उनकी सुविधा के लिए 1 जनवरी 1975 से केन्द्रीय सरकारी कर्मचारी सहकारी भण्डार की एक दुकान यहाँ खोल दी गई है। इसमें अच्छा नाज, अच्छा कपड़ा, किराना और दूसरी उपभोक्ता वस्तुओं की बिक्री होती है। इस प्रकार से सभी जरूरी चीजें यहाँ मुहैय्या की जाती हैं।

रिहायशी क्षेत्र और दफ्तर की इमारतों के बीच के एक मैदान को बच्चों का पार्क बना दिया गया है।

(2) क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के परिसर

इस वर्ष के दौरान, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में नीचे लिखा निर्माण कार्य पूरा किया गया।

भुवनेश्वर

टाइप 1	8 क्वाटर
टाइप 2	8 क्वाटर

भोपाल

टाइप डी	1
टाइप एफ	12

टाइप जी	4
टाइप एच	4
टाइप आई	8
टाइप ई	4

महाविद्यालय का विचार है कि मध्यप्रदेश आवास बोर्ड से जल्दी ही एक-कमरे-वाले चालीस क्वाटर प्राप्त कर लिए जाएं। परिसर में दो-कमरे वाले चालीस क्वाटरों के निर्माण के लिए भी मध्यप्रदेश आवास बोर्ड के पास अपेक्षित रकम जमा करा दी गई है और यह निर्माण कार्य शीघ्र ही शुरू कर दिया जाएगा।

परिशिष्ट-घ

अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठियों और विभिन्न प्रशिक्षण व विनिमय कार्यक्रमों में परिषद् की प्रतिभागिता तथा महत्त्वपूर्ण अतिथि

I. विदेशी नागरिकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

1. परिषद् के अध्यापक-शिक्षा विभाग ने अफगानिस्तान के श्री सफीउल्लाह कुदरत जोइ और श्री अबदुल कुद्दूस के लिए श्रव्य-दृश्य साधनों तथा पैंतीस मिलीमीटर की फिल्म-स्ट्रिपों के निर्माण की नई तकनीकों को सीखने के वास्ते तीन महीनों के एक विशेष गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रबन्ध किया। यह प्रबन्ध द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत किया गया।

2. परिषद् के विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग ने तीन अफगान नागरिकों के एक दल के लिए चार महीनों का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

3. परिषद् ने क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर में प्राथमिक स्तर पर अध्यापक शिक्षा का दस महीनों का एक विशेष प्रशिक्षण कोर्स मालदीव द्वीप समूह गणतंत्र की सरकार द्वारा प्रतिनियुक्त दस मालदीवी प्रशिक्षणार्थियों के निमित्त आयोजित किया।

4. परिषद् ने शैक्षणिक सामग्रियों व श्रव्य-दृश्य साधनों के अध्यापन-विकास की पद्धतियों पर विशेष जोर देते हुए विज्ञान-शिक्षा में एक अनुकूलन कोर्स का प्रबंध सात अफगान नागरिकों के लिए यूनेस्को फेलोशिप के अन्तर्गत किया।

5. स्कूल विज्ञान उपकरणों के क्षेत्र में यूनेस्को और यूनिसेफ ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के कारखाना विभाग को एक प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में मान्यता प्रदान कर दी।

विभिन्न देशों के निम्नलिखित वरिष्ठ अधिकारी कारखाना विभाग के अध्ययन-सह-अनुकूलन कोर्स के लिए प्रतिनियुक्त किए गए ताकि वे अपने देश में इसी तरह के केन्द्र स्थापित कर सकें—

(1) अफगानिस्तान के काबुल के विज्ञान केन्द्र के इंजीनियर-इन-चार्ज को एक सप्ताह के लिए प्रतिनियुक्त किया गया।

(2) अफगानिस्तान के काबुल के विज्ञान केन्द्र के एक तकनीशियन को छः महीने के लिए कारखाने के विविध अनुभागों में गहन प्रशिक्षण और वैज्ञानिक उपकरणों के निर्माण में प्रशिक्षण के लिए प्रतिनियुक्त किया गया।

(3) कोरिया गणतंत्र के सेऊल स्थित शिक्षा मंत्रालय के तीन वरिष्ठ अधिकारियों को एक सप्ताह के लिए प्रतिनियुक्त किया गया ताकि वे यहाँ से लौट कर अपने देश में भी ऐसे ही उत्पादन केन्द्र स्थापित कर सकें।

(4) मलयेशिया के शिक्षा मंत्रालय के प्राथमिक शिक्षा निदेशक को एक सप्ताह के लिए प्रतिनियुक्त किया गया।

6. अफगानिस्तान के पाँच अध्यापकों का एक दल परिषद् में तीन महीनों के के लिए 15 सितम्बर से 15 दिसम्बर 1974 तक रहा। यह दल यूनेस्को की अध्यापक-प्रशिक्षण योजना के अन्तर्गत शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन करने के लिए आया था।

7. शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय, उत्कल विश्वविद्यालय और यू० एस० ई० एफ० आई० के तत्त्वावधान में 27 जून 74 से 27 जुलाई 74 तक भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में शिक्षा और आधुनिकता पर एक मार्शल विश्वविद्यालय संकाय संगोष्ठी आयोजित की गई। भारत के सांस्कृतिक समाज का यहाँ की शिक्षा की प्रणालियों और पिछले पचीस वर्षों में शिक्षा प्रणाली में आए परिवर्तनों के माध्यम से अध्ययन करने के लिए संयुक्त राज्य अमरीका के विभिन्न स्कूलों और कालेजों के सत्रह अध्यापक इस संगोष्ठी में शरीक हुए ताकि वे इस प्रकार से प्राप्त सीधी जानकारी का उपयोग अपने देश में विद्यमान पाठ्यक्रमों में कर सकें।

II. फेलोशिप कार्यक्रमों के अन्तर्गत उच्च प्रशिक्षण के लिए परिषद् के अधिकारियों की विदेश में प्रतिनियुक्ति

1. कामनवेल्थ शिक्षा फेलोशिप योजना यूनाइटेड किंगडम के अन्तर्गत उच्च प्रशिक्षण के लिए शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग के लेक्चरर श्री मोहनलाल यूनाइटेड किंगडम गए।

2. कामनवेल्थ शिक्षा फेलोशिप योजना यूनाइटेड किंगडम के अन्तर्गत उच्च प्रशिक्षण के लिए शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग के लेक्चरर श्री ए० एस० घोष यूनाइटेड किंगडम गए।

3. कामनवेल्थ शिक्षा फेलोशिप योजना के अन्तर्गत विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग के प्रोफेसर बी० बी० गांगुली तीन महीनों के लिए यूनाइटेड किंगडम गए।

4. यूनेस्को फेलोशिप योजना के अन्तर्गत विज्ञान में उच्च प्रशिक्षण के लिए, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग के प्रोफेसर बी० शरण चार महीनों के लिए यूनाइटेड किंगडम और यू० एस० एस० आर० गए।

III. अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों/कार्यशालाओं/सम्मेलनों में भाग लेने के लिए परिषद् के अधिकारियों की विदेश में प्रतिनियुक्ति

1. टोकियो में यूनेस्को द्वारा परिचालित सम्मेलन में भाग लेने के लिए 28 फरवरी 75 से 29 मार्च 75 तक के लिए शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग की रीडर कुमारी इन्दिरा मलानी को प्रतिनियुक्त किया गया।

2. बैंकाक और टोकियो में 21 अगस्त 1974 से 4 अक्तूबर 74 तक शैक्षिक नवाचार पर हुई आंचलिक क्षेत्र क्रियात्मक संगोष्ठी में भाग लेने के लिए प्रोफेसर पी० के० राय, डीन (शैक्षणिक) को प्रतिनियुक्त किया गया।

3. विएना में 13, 14, 15 अगस्त, 1974 को हुए अन्तर्राष्ट्रीय पठन संघ के विश्व सम्मेलन में स्कूल शिक्षा विभाग के प्रोफेसर दिलीपसिंह रावत शरीक हुए।

4. यूनाइटेड किंगडम में 6 जुलाई से 27 जुलाई 1974 तक हुए शैक्षिक प्रशासन पर तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय अन्वेषण कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए पाठ्य-पुस्तक विभाग के रीडर श्री सी० एल० सप्रा को प्रतिनियुक्त किया गया।

5. भारत-जी० डी० आर० सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम 1973-75 के अन्तर्गत, पोलिटेकनिक और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन-सह-निरीक्षण यात्रा पर क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल के प्रौद्योगिकी के रीडर श्री एस० जी० माथुर जी० डी० आर० स्थित बर्लिन को 6 मार्च 75 से 14 अप्रैल 75 तक के लिए गए।

6. भारत-जी० डी० आर० सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम 1973-75 के अन्तर्गत, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर के कृषि विभाग के लेक्चरर श्री एस० ए० कुरैशी बर्लिन को 6 मार्च 75 से 14 अप्रैल 75 तक के लिए गए।

7. गेस्ट्रोव (जी० डी० आर०) के शिक्षा शास्त्रीय विश्वविद्यालय में हुए छठे अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक संभाषण में 20 अगस्त से 5 सितम्बर 1974 तक के लिए, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के सह निदेशक डा० शिव के० मित्र ने भाग लिया।

8. "एशिया में जनसंख्या शिक्षा के लिए जनसंख्या अध्ययन" विषय पर सितम्बर 1974 में बैंकाक में हुई क्षेत्रीय कार्यशाला में भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के रीडर डा० डी० गोपाल राव ने हिस्सा लिया।

9. "एशिया में जनसंख्या शिक्षा के लिए जनसंख्या अध्ययन" विषय पर अगस्त-सितम्बर 1974 में बैंकाक में हुई क्षेत्रीय कार्यशाला में सामाजिक विज्ञान

एवं मानविकी शिक्षा विभाग के चिकित्सक और स्वास्थ्य-लेक्चरार डा० अमल कुमार सेन ने भाग लिया।

IV. परिषद् के वे अधिकारी जो विशेष कार्यों के लिए विदेश-यात्रा पर गए

1. अमरीकी विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम सलाहकार की हैसियत से एक वर्ष तक काम करने के लिए, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के रीडर, डा० डी० एस० मुले सितम्बर 1974 में विदेश गए।

2. नाइजीरिया में श्रव्य-दृश्य विशेषज्ञ की हैसियत से एक वर्ष काम करने के लिए, शिक्षण साधन विभाग के रीडर, श्री तिलकराज 1 मार्च, 1975 को यूनेस्को गए।

3. तंजानिया में एक वर्ष तक यूनेस्को के मुद्रण विशेषज्ञ की हैसियत से काम करने के लिए प्रकाशन विभाग के मुख्य उत्पादन अधिकारी श्री निरंजन चक्रवर्ती 7 जून, 1974 को गए।

4. सूडान लोकतंत्रीय गणतंत्र में यूनेस्को सलाहकार की हैसियत से एक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए कारखाना विभाग के तकनीकी अधिकारी श्री डी० आर० दुआ वहाँ गए। वे वहाँ 17 नवम्बर, 1974 से 18 दिसम्बर, 1974 तक रहे।

5. आइ० टी० ई० सी० कार्यक्रम के अन्तर्गत दो वर्षों के लिए मारीशस में हिन्दी पाठ्यपुस्तकों के विशेषज्ञ की हैसियत से काम करने के लिए पाठ्यपुस्तक विभाग के लेक्चरर श्री गंगादत्त शर्मा को वहाँ जुलाई 1974 में प्रतिनियुक्त किया गया।

V. विदेश से आए परिषद् के अतिथि

1. काबुल में इंजीनियरिंग में भौतिकी के कार्यक्रम से सम्बद्ध श्री एस० ए० कुरेशी 26 मार्च, 1974 को विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग में आए।

2. मलेशिया के श्री अबुल हसन बिन अली 20 जनवरी, 1975 को विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग में आए और प्राथमिक विज्ञान शिक्षा के बारे में उन्होंने विचार विमर्श किए।

3. ईरान के शिक्षा कार्प्स केन्द्र की प्रिंसिपल, श्रीमती सिमिद ओक्त अफजली 7 मार्च 1975 को विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग में आईं।

4. न्यूयार्क के राज्य शिक्षा विभाग के विज्ञान शिक्षा ब्यूरो के श्री डी० एस० रैनोल्ड विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग में 28 मार्च 1974 को आए और 15 अप्रैल, 1974 तक यहाँ रहे।

5. पश्चिमी आस्ट्रेलिया के शिक्षा अधिकारी श्री क्वाइन विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग तथा केन्द्रीय विज्ञान कार्यशाला देखने के लिए आए।

6. पेरिस स्थित यूनेस्को के मुख्यालय के जीव विज्ञान शिक्षा कार्यक्रम विशेषज्ञ श्री एफ० सी० वोरा विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग में 21 मार्च, 1975 को आए और विभागीय कार्यक्रमों को उन्होंने देखा।

7. अफगानिस्तान के शिक्षा निदेशालय के उच्च अधिकारियों में से सात सदस्यों की एक टीम यूनेस्को फेलोशिप योजना के अन्तर्गत परिषद् को देखने के लिए यहाँ आई और 19 जनवरी से 27 जनवरी, 1975 तक रही।

8. मारीशस के यूनेस्को फेलो श्री ज्यां मेरी फ्रैंक रिचर्ड 13 मार्च 1975 को विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग में आए।

9. प्राथमिक शिक्षा के विशेषज्ञ श्री एल० जी० मार्श 20 और 21 मार्च 1975 को विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग में आए।

10. उड़ीसा में हुई शैक्षणिक दूरदर्शन स्क्रिप्ट लेखकों की कार्यशाला के माध्यम से लन्दन की ब्रिटिश काउंसिल के श्री पी० पेंड्रेड शैक्षणिक प्रौद्योगिकी केन्द्र से सम्बद्ध रहे। उन्होंने प्रशिक्षण सामग्रियों के निर्माण का काम भी किया।

11. पेरिस के यूनेस्को के क्षेत्रीय उपकरण विभाग के श्री लिंडेन शैक्षणिक प्रौद्योगिकी केन्द्र में आए। वे यू० एन० डी० पी० परियोजना के अंतर्गत उपकरणों के बारे में प्रबन्धों को अन्तिम रूप देने आए थे।

12. नेपाल के काठमांडो की ब्रिटिश काउंसिल की श्रीमती हेग शेफील्ड रेडियो की सलाहकार की हैसियत से एक महीने के लिए शैक्षणिक प्रौद्योगिकी केन्द्र में रहीं।

13. आस्ट्रेलिया के तस्मानिया विश्वविद्यालय के जन्तु विज्ञान विभाग के अध्यक्ष, डा० ब्रूस जेनसन मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में आए और उन्होंने वहाँ वैज्ञानिक विषयों पर भाषण दिए।

14. कीनिया के चार शिक्षाशास्त्री और कीनिया उच्च आयोग के एक अधिकारी राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के विभिन्न विभागों को देखने 18 मई 1974 को आए।

15. यूनेस्को फेलोशिप योजना के अन्तर्गत अफगानिस्तान के नागरिकों की एक चार-सदस्यों वाली टीम सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग तथा विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग को देखने 2 अक्तूबर 1974 से 1 नवम्बर 1974 तक आई।

16. यूनेस्को फेलोशिप के अन्तर्गत, प्रतिभागिता कार्यक्रम में माध्यमिक और व्यावसायिक तकनीशियनों के प्रशिक्षण के लिए श्री गजनफर 10 से 16 फरवरी 1975 तक परिषद् में रहे थे।

परिशिष्ट-ङ

अनुसंधान

I. परिषद् के निम्नलिखित अधिकारी रिसर्च फेलोज को पी एच० डी० उपाधि के लिए निर्देशित कर रहे हैं—

(1) डा० जे० एस० राजपूत	क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,	भोपाल	1
(2) डा० ए० सी० बनर्जी	,, ,,	,,	1
(3) डा० जी० के० लाहिड़ी	,, ,,	,,	1
(4) डा० एन० वैद्या	,, ,,	,,	5
(5) डा० जे० एस० ग्रेवाल	,, ,,	,,	1
(6) श्री० एस० एन० त्रिपाठी	,, ,,	,,	1
(7) डा० बाकर मेंहदी	,, ,,	मैसूर	1
(8) डा० जी० बी० कानूनगो	,, ,,	भुवनेश्वर	2
(9) डा० श्रीमती जी० आर० घोष	,, ,,	,,	2
(10) श्री वी० वी० विद्यार्थी	,, ,,	,,	1
(11) डा० आर० के० माथुर	सर्वेक्षण एवं आधार सामग्री प्रक्रिया एकक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली		1
(12) डा० के० जी० रस्तोगी	पाठ्यपुस्तक विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली		3
(13) डा० आर० सी० दास	अध्यापक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली		3
(14) डा० पी० एम० पटेल	परीक्षा सुधार एकक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली		1
(15) डा० एम० के० रैना	परीक्षा सुधार एकक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली		2
(16) डा० आर० जी० मिश्र	परीक्षा सुधार एकक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली		1
(17) डा० बी० शरण	विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली		1

II. स्टाफ के निम्नलिखित सदस्यों ने वर्ष के दौरान अपनी पी-एच० डी० डिग्री पूरी कर ली है—

(1) श्री एम० एन० सिंह	क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,	भुवनेश्वर
(2) श्री बी० पी० पंडा	,,	,,
(3) श्री डी० के० भट्टाचार्य	,,	,,
(4) श्री एम० के० हक	,,	,,
(5) श्री एन० वैद्य	,,	भोपाल
(6) डा० के० सी० मदन	सर्वेक्षण एवं आधार प्रक्रिया एकक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली	
(7) श्रीमती के० अरोड़ा	अध्यापक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली	

III. निम्नलिखित कर्मचारियों ने पी एच० डी० डिग्री पाने के लिए दाखिला लिया है—

(1) श्री एस० एन० त्रिपाठी	क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,	भोपाल
(2) श्री आर० पी० सक्सेना	,,	,,
(3) श्रीमती एस० मसीह	,,	,,
(4) श्री एस० सी० पंत	,,	,,
(5) श्री बी० पी० गुप्त,	,,	,,
(6) श्री के० शेषगिरि राव,	डी० एम० सी०, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,	मैसूर
(7) श्री एस० टी० वी० जी० आचार्युलु,	क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,	भुवनेश्वर
(8) श्री एस० सी० चतुर्वेदी	क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,	भुवनेश्वर
(9) श्री एस० के० गुप्त	,, ,,	,,
(10) श्री जी० एस० पैंकरया	,, ,,	,,
(11) श्री एम० पी० सिन्हा	,, ,,	,,
(12) श्री डी० सी० साहू	,, ,,	,,
(13) श्री एस० के० महापात्र	,, ,,	,,
(14) श्री जे० के० महापात्र	,, ,,	,,
(15) श्री एम० ए० चन्द्रशेखर	,, ,,	,,
(16) श्री बी० के० एच० महापात्र	,, ,,	,,
(17) श्री वी० के० वाजपेयी	,, ,,	,,
(18) श्री ए० सी० साहू	,, ,,	,,

(19) श्री सतवीर सिंह	सर्वेक्षण एवं आधार प्रक्रिया एकक, राष्ट्रीय शैक्षिक असुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
(20) श्री एस० सी० मित्तल	,, ,, ,,
(21) श्रीमती यू० बेवली	सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
(22) श्री टी० आर० भाटिया	,, ,, ,,
(23) श्री पी० एस० एस० भसीन	सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षाविभाग राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
(24) कुमारी चित्रा सचदेव	,, ,, ,,
(25) श्री अनिल विद्यालंकार	,, ,, ,,
(26) श्री एस० के० शर्मा	,, ,, ,,
(27) श्री एस० एल० गुप्त,	स्कूल शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
(28) श्री ए० ए० सी० लाल,	,, ,, ,,
(29) श्री आर० के० गुप्त	,, ,, ,,
(30) श्रीमती एस० पी० पटेल	,, ,, ,,
(31) कुमारी पी० दास गुप्ता	,, ,, ,,
(32) श्री सी० एल० सप्रा	अध्यापक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
(33) श्री अजित सिंह	,, ,, ,,
(34) श्री आइ० एस० चौधरी	परीक्षा सुधार एकक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
(35) श्री प्रीतम सिंह	,, ,, ,,
(36) श्री कमरुद्दीन	,, ,, ,,